"LANGUAGES MATTER" - UNESCO

मैथिली चेतनाक समकालीन अभिव्यक्ति

घर-बाहर

अप्रैल-जून, 2011

पन्द्रह टाका













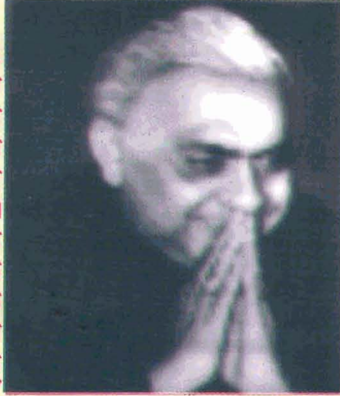
चेतना पन्ना

कर्पूरी ठाकुर जयन्ती



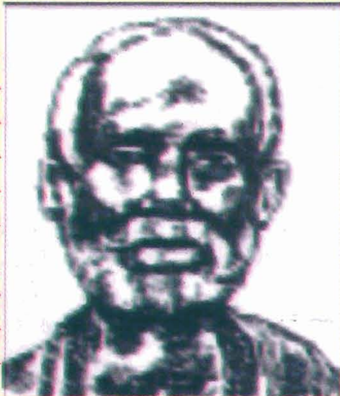
चेतना समितिक तत्त्वावधानमे 24 जनबरी, 2010के जननायक कर्पूरी ठाकुरक जयन्ती (24 जनबरी 1924 -17 फरबरी,1988) प्रेमकान्त झाक अध्यक्षतामे मनाओल गेल। एहि अवसर कर्पूरी ठाकुरक मातृभाषा प्रेम, स्वाधीनता आन्दोलनमे निरन्तर सक्रियता एवं समाजक उपेक्षित वर्गक विकासक हेतु कएल गेल हुनक प्रयास आदिक उल्लेख करैत श्रद्धांजलि अर्पित कएल गेल। श्रद्धांजलि अर्पित कएनिहारमे प्रमुख छलाह गणेश शंकर खर्गा, अरुण कुमार पाठक, वासुकीनाथ झा, रामसेवक राय, प्राणमोहन मिश्र, जगतनारायण चौधरी, योगेन्द्रनारायण मल्लिक, भवेन्द मिश्र, बैद्यनाथ मिश्र, कृष्णानन्द, चक्रधर ठाकुर, अशोक कुमार मिश्र, रमानन्द झा 'रमण' आदि। विवेकानन्द ठाकुर, सचिव, चेतना समिति आगत अतिथिक स्वागत एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रमक संचालन कएलनि।

ललित नारायण मिश्र जयन्ती



चेतना समितिक तत्त्वावधानमे 2 फरबरी, 2010कें विद्यापति भवनमे ललित नारायण मिश्रक जयन्ती मनाओल गेल जकर अध्यक्षता प्रेमकान्त झा कएलनि। सचिव विवेकानन्द ठाकुर आगत अतिथिक स्वागत कएल। श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उपरान्त सतावनम विद्यापति स्मृतिपर्व समारोहक अवसर पर मंचित नाटकक लेखक अरविन्द अक्कू तथा निर्देशक कौशल कुमार दासक संग उक्त नाटकक मंचनसँ सम्बद्ध समस्त कलाकारके समिति द्वारा सम्वर्धनाक संग सहभागिता प्रमाणपत्र देल गेल। गीतनादक संग कार्यक्रमक समापन भेल।

महाकवि लालदास जयन्ती



चेतना समितिक तत्त्वावधानमे 9 फरबरी, 2011कें महाकवि लालदासक 155म जयन्ती प्रेमकान्त झाक अध्यक्षतामे मनाओल गेल। सचिव विवेकानन्द ठाकुर आगत अतिथिक स्वागत कएल। श्रद्धांजलि अर्पितकर्तामे प्रमुख छलाह सुनील कुमार दास, रामसेवक राय, रघुवीर मोची,अजित कुमार आजाद, रमानन्द झा'रमण' वैद्य गणपतिनाथ झा, विमलेश मिश्र, कमल मोहन'चुन्नू', सुरेन्दनारायण यादव, वैद्यनाथ मिश्र, प्राणमोहन मिश्र, रामसेवक राय, योगेन्द्रनारायण मल्लिक, ललित कुमुद,जयनारायण टाकुर आदि।

डा.अमरनाथ झा जयन्ती

डा.अमरनाथ झाक 115म जयन्ती चेतना समितिक तत्त्वावधानमे 25 फरबरी, 2010के विद्यापति भवन,पटनामे विजय कुमार मिश्रक अध्यक्षतामे मनाओल गेल। विवेकानन्द ठाकुर, सचिव आगत अतिथिक स्वागत करैत आचार्य श्री आद्याचरण झासँ प्राप्त संस्मरण पढ़ि सुनाओल। एहि अवसर पर प्राण मोहन ठाकुर, गणेश शंकर खर्गा, रघुवीर मोची, बैद्यनाथ विमल, ललित कुमुद, रमानन्द झा 'रमण', महारुद्र झा, जीवानन्द झा 'निराला', मेधाकर झा, अशोक कुमार मिश्र, वैद्य गणपतिनाथ झा, विवेकानन्द कुमर, कृष्णानन्द, योगेन्द्रनारायण मल्लिक आदि डा.अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कएल। हुनक मातृभाषा प्रेम, एवं मातृभाषाक विकास लेल कएल गेल महत्त्वपूर्ण अवदानक चर्चा कएल।



जयनाथ मिश्र जयन्ती/भाषणमाला



मैथिली अकादेमी एवं चेतना समितिक संयुक्त तत्त्वावधानमे 04 मार्च, 2010के पण्डित जयनाथ मिश्रक जयन्ती विद्यापति भवनमे विजय कुमार मिश्रक अध्यक्षतामे मनाओल गेल। विशिष्ट अतिथि छलाह विमलानन्द झा, उद्योग निदेशक बिहार सरकार। आगत अतिथिक स्वागत कमलाकान्त झा, अध्यक्ष, मैथिली अकादमी कएलनि। श्रद्धांजलि अर्पितकर्तामे प्रमुख छलाह रविकान्त दूबे, भवनाथ मिश्र, बच्चा ठाकुर, कलानाथ मिश्र, गणेश शंकर खर्गा, प्रेमकान्त झा, मोहन भारद्वाज, अरुणा चौधरी, रघुवीर मोची, रवीन्द्र बिहारी राजू, विवेकानन्द कुमर, डा. वीरेन्द्र झा, घनश्याम ठाकुर आदि। 'पण्डित जयनाथ मिश्र भाषणमाला'क अन्तर्गत आधुनिक मैथिली कविताक प्रवृति' विषय पर डा. नारायण झाक व्याख्यान भेल।

महासुन्दरी देवी साधुवाद !

चेतना सम्मानित (1978) महासुन्दरी देवीकें एहि वर्ष, 2011 गणतन्त्र दिवसक अवसर पर मिथिला चित्रकलाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अवदान लेल भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री'सँ अलंकृत कएल गेलनि अछि।

एहिसँ पूर्व मिथिला चित्रकला लेल जगदम्बा देवी (1975), सीता देवी (1980) एवं गंगा देवी 1985) कें उक्त अलंकरणसँ अलंकृत कएल गेल छनि।

महासुन्दरी देवीकें चेतना परिवारक साधुवाद!

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार

भारतक पूर्व राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे.कलामक अङरेजी पोथी 'इगनाइटेड माइंड'क मैथिली अनुवाद 'प्रज्वलित प्रज्ञा'क लेल डा. नित्यानन्द लाल दासकें वर्ष 2010 क अनुवाद पुरस्कार देबाक निर्णयक घोषणा कएल गेल अछि। जूरीमे छलाह डा.उषा किरण खान, प्रो. माथुरी झा एवं डा. तारानन्द वियोगी। एहि पुरस्कारक अर्न्तगत पचास हजार नकद देल जाइत छैक। ई साहित्य अकादेमीक प्रकाशन नहि थिक। डा. दासकें चेतना परिवारक साधुवाद!

मैथिली चेतनाक समकालीन अभिव्यक्ति
घर-बाहर
त्रैमासिक

वर्ष-9 अंक-35 अप्रैल-जून 2011

संरक्षक
विजय कुमार मिश्र



सम्पादक
डा. वासुकीनाथ झा



सहायक सम्पादक
डा. रमानन्द झा 'रमण'
rnjharaman@gmail.com



प्रबन्ध सम्पादक
विवेकानन्द झा



मूल्य
प्रति अंक : 15 टाका
डाक खर्च सहित : 20 टाका
वार्षिक : 55 टाका
डाक खर्च सहित : 75 टाका



सम्पादकीय कार्यालय
विद्यापति भवन
विद्यापति मार्ग,
पटना-800001
फोन-0612-2230405



सम्पादकीय सहयोग पूर्णतः अवैतनिक। रचना आदि मे व्यक्त विचारसँ सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहि।



प्रकाशक एवं मुद्रक
विवेकानन्द ठाकुर
(मो.09431011332)
सचिव, चेतना समिति
विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग, पटना लेल काका कम्पोजर, बोरिंग केनाल रोड,पटनासँ मुद्रित
मो. : 9304625963

सूची

मैथिल अस्मिता		
बिहार दिवस समारोह: मिथिला-मैथिलीक उपेक्षा	अजित कुमार आजाद	4
कृतित्व चर्चा		
यात्री-नागार्जुन	मोहन भारद्वाज	6
उगनाक दयादवादक प्रासंगिकता	डॉ. रत्नेश्वर मिश्र	9
गीतक 'बिड़ला' मार्कण्डेय प्रवासी	प्रो. रमाकान्त मिश्र	12
संस्मरण		
डा. अमरनाथ झा : एक स्मृति पुष्पाञ्जलि	आचार्य आद्याचरण झा	15
मैथिली साहित्यक राहु तिथि : 15 आ' 19 जून	डॉ.देवशंकर नवीन	16
खिलखिलाइत हंसराज	चन्द्रेशं	19
ई लोक : ओ लोक	डा. प्रेममोहन मिश्र	20
कथा		
कैंसर-वार्ड	साकेतानन्द	24
बियाहक ओरिऔन	डा. उषाकिरण खान	27
पिपनी पर नोर	सुशील	29
उग्रह	शिवशंकर श्रीनिवास	33
'सपनकेँ नहि भरमाउ.....'	विंभारानी	35
पसाही	अखिलेश कुमार झा	38
कविता/गजल		
यात्रा	डॉ. बिलट पासवान 'विहंगम'	39
पटनामे छठि	अजित कुमार आजाद	39
गीत	प्रो. नचिकेता	40
मैथिलीमे गजले जकाँ	डॉ. गंगेश गुंजन	41
गजल	डॉ. राजेन्द्र विमल	43
गजल	आशीष अनचिन्हार	45
मौन	पंकज सत्यम आनन्द	45
मधुमाछी थिकहुँ हम सभ/बिसरैए पृथ्वी	जीवकान्त	46
कालचक्र	डा.वीरेन्द्र मल्लिक	48

स्थायी स्तम्भ - चेतना पन्ना, पावनि-तिहार, देश-देशान्तर, आदि।

मोन पड़ै छथि

1. डा. इलारानी सिंह 01.07.1945-19.06.1995	12. जनार्दन झा 'जनसीदन' 1872-20.06.1951	23. बाबू भोलालाल दास 1894-28.05.1977
2. सरसकवि ईशनाथ झा 18.06.1907-02.03.1965	13. प्रो. तन्त्रनाथ झा 22.08.1909-02.05.1989	24. आचार्य रामलोचन शरण 1889-14.05.1971
3. म.म.उमेश मिश्र 26.11.1895-26.05.1967	14. डा. दिनेश कुमार झा 21.12.1941-06.06.2005	25. राघवाचार्य शास्त्री 1917-05.05.1981
4. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 24.11.1916-24.05.1980	15. डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' 1929-01.05.2000	26. रामकृष्ण झा 'किसुन' 01.01.1923-15.06.1970
5. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' 16.07.1917-30.05.2002	16. धनुषधारी लाल दास 1895-01.05.1965	27. राजेश्वर झा 25.04.1923-20.04.1977
6. डा. कांचीनाथ झा 'किरण' 01.12.1906-09.04.1989	17. नरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार' 20.06.1904-05.04.1993	28. राजकमल चौधरी 14.12.1929-19.06.1967
7. उपेन्द्र दोषी 03.04.1943-01.12.2001	18. डा. प्रभावती झा 02.04.1945-21.05.1999	29. ललित 06.04.1932-14.04.1983
8. काशीनाथ ठाकुर 'कलेश' -23.05.1990	19. परमानन्दन शास्त्री 15.05.1915-20.06.2000	30. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 11.06.1911-05.11.1998
9. कुलानन्द नन्दन -24.06.1980	20. म.म.परमेश्वर झा 27.12.1856-30.06.1924	31. कविवर सीताराम झा 16.11.1891-15.06.1975
10. कुलानन्द मिश्र 26.11.1939-24.05.2001	21. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 07.09.1918-19.06.1986	32. श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' 17.07.1901-20.05.1989
11. कलानन्द भट्ट 15.05.1941-05.10.1994	22. डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' 1932-09.04.2000	33. डा. सुभद्र झा 09.07.1909-13.05.2000
		34. हंसराज 28.10.1938-11.04.2005
		35. रामचरित्र पाण्डेय 'अणु' 01.04.1919-25 मई, 2010
		36. मार्कण्डेय प्रवासी -13.06.2010

युग युग जिबथु

1. प्रदीप मैथिलीपुत्र	02.04.1939	11. डा. नवोनाथ झा	05.05.1954
2. उदयचन्द्र झा 'विनोद'	05.04.1943	12. डा. देवेन्द्र झा	06.05.1943
3. छत्रानन्द सिंह झा	05.04.1946	13. दयाकान्त झा	11.05.1951
4. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'	06.04.1951	14. डा. तारानन्द वियोगी	12.05.1966
5. डा. गंगा प्रसाद 'अकेला'	10.04.1944	15. वैद्यनाथ विमल	14.05.1955
6. रवीन्द्र सकेश	10.04.1944	16. डा. मुरलीधर झा	01.06.1955
7. डा. बुद्धिनाथ मिश्र	01.05 1949	17. डा. यशोदानाथ झा	06.06.1945
8. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	02.05.1924	18. डा. किशोरनाथ झा	10.06.1940
9. डा. केदारनाथ लाभ	02.05.1929	19. नवीन चौधरी	30.06.1954
10. डा. रामदेव झा	03.05.1936		

सम्पादकीय

प्रान्तक रूपमे बिहारक गठनक शतवार्षिकी मनाओल जा रहल अछि। ओना तँ ई प्रक्षेत्र रामायण कालसँ लए अद्यावधि अपन वैशिष्ट्य बनौने अछि, ज्ञानक क्षेत्रमे, षड्दर्शनमे अधिकांश दर्शनक जन्मदात्री रहल अछि, विष्णुगुप्त कौटिल्यक अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजनीति, शासननीतिक दृष्टिसँ आइयो पथ-प्रदर्शक बनल अछि, तक्षशीला ओ नालन्दा विश्वविद्यालय वास्तवमे विश्वविख्यात रहल अछि। महाभारत कालहिसँ मगधक शक्तिशाली शासन, सम्राट अशोकक मगध साम्राज्य समस्त आर्यावर्तक मान-मर्यादावर्धक रहल अछि। मिथिलाक ज्ञान-गाम्भीर्य धर्मानुकूल आचार-व्यवहार, मीमांसा ओ नव्य-न्यायक वैदुष्य, संगीत ओ कलाक श्रीवृद्धि एकरा विशिष्ट बनौने रहल अछि।

आधुनिक बिहारक शतवार्षिकी वर्तमान सरकार द्वारा बिहारी अस्मिताकेँ पुनर्जागृत करबाक प्रयास थिक। शासन-प्रशासनकेँ चुस्त बनबैत भ्रष्टाचारपर नियन्त्रणक प्रयास, नारी सशक्तीकरण, निरक्षरता उन्मूलन आदि अनेक प्रयास प्रशंसनीय कहल जाएत जकर सुखद परिणाम समस्त समाज भोगत, कही तँ भोगब प्रारम्भ कए देलक अछि। शतवार्षिकी समारोहक बहुविध, बहुरंगी, बहुआयामी, बहुस्तरीय आयोजन गौरवबोधक सुखद अनुभूति प्रदान करैत अछि। क्रियाशीलताक प्रेरणा प्रदान करैत अछि। अतीत स्मरण वास्तवमे गौरवानुभूतिक संरक्षणक संकेत दैत अछि। बिहारक उत्सवक आयोजनक माध्यमेँ सांस्कृतिक ओ सामाजिक स्तरक बहुपक्षीय वैशिष्ट्यकेँ प्रकट करबैत अपन रुचि ओ संस्कारसँ अवगत कराओल जाइत अछि। बिहार विधान परिषदक तत्त्वावधानमे सेहो बिहारक शतवार्षिकीक प्रारम्भ महामहिम राष्ट्रपति द्वारा भेल अछि जे वर्ष भरि चलत। एहिक्रममे वैधानिक गतिविधि ओ ऐतिहासिक विकास सम्बन्धी अनेक ग्रन्थक प्रकाशन एकर स्तरीयता ओ गम्भीरताक परिचायक बनत। एहि आयोजन सभक केन्द्रमे अछि वर्तमान गठबन्धन सरकारक दृष्टिबोध, नवनिर्माण ओ प्रगति संकल्प। पंचायतीराजकेँ सुदृढ़ कए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि आदि सहित अपराध उन्मूलनपर विशेष जोर देल जा रहल अछि। एहि बीच सभ क्षेत्रमे मिथिलांचलक भाषा-साहित्य-संस्कृति समुचित स्थान ओ समुचित हिस्सेदारी पाबि सकए, से देखब हंमरालोकनिक, हमर राजनेतालोकनिक दायित्व बनैत अछि। यथासाध्य योगदानक अपेक्षा तँ रहबे करतैक।

देशक समस्त जन गणसँ 'विजयी भव'क आशीर्वाद फलीभूत भेल। एहि अभियानक अन्तिम समयमे प्रत्येक प्रतिभागीक प्रत्येक तन्त्रिका सजग-सक्रिय। धमनीक प्रवाह उर्ज्वस्वित। मस्तिष्कसँ प्रेषित प्रत्येक इंगिति सम्पूर्ण शरीरक प्रत्येक कणकेँ सूक्ष्मसँ सूक्ष्म भागकेँ समुचित व्यवहारक संकेत-निर्देश दैत। इएह समयोचित साकांक्ष सक्रिय व्यवहार दिया देलक। क्रिकेट विश्वकपमे प्रतियोगिताक अन्तिम शीर्ष मैचमे वास्तवमे समस्त भारतवर्षमे असाधारण एकताक, देशक नागरिकताक प्रतीक बनि गेल। नेना-बूढ़, शहर-देहात, निर्धन-धनवान,सभवर्ग सभ श्रेणी, जाति-धर्म, वर्ण वर्ग, निरपेक्ष भए एकहि भावनामे निमग्न भए गेल। वास्तवमे ई जीत देशक जीत सिद्ध भेल। एहि जीतसँ सन्देश लेबाक अछि जे एहि टीममे पूर्व प्रतिष्ठित एवं नव प्रस्फुटित -दूनू प्रकारक प्रतिभागीक योगदान रहल। सामर्थ्य, नियन्त्रण, समग्रदृष्टि, कुशलता, निपुणता, व्यक्ति विशेषक अहंकार-विलोप, नेताक नेतृत्वक्षमता, नेतामे सहयोगीक विश्वास, विपरीत परिस्थितिमे संकल्पसँ अविचलित रहब, लक्ष्यप्राप्तिक दृढ़ आकांक्षा - सभटा सकारात्मक रहल। ततबे नहि, नवपीढ़ी अपन कौशलसँ भविष्य सुरक्षित रहबाक संकेत सेहो देलक।

की भारतक राजनीति भारतीय क्रिकेट दलक एहिं एकता, परस्पर विश्वास, अपेक्षित विचार-व्यवहार, तिरंगाक महत्त्व ओ राष्ट्रीय गौरवबोधक अनुभवसँ किछुओ प्रेरणा लेबाक प्रयन्त करत? की मिथिलांचल अपन अस्मिताक लेल एहिसँ प्रेरणा लेत? लेबाक चाही।

डा. वासुकीनाथ झा

बिहार दिवस समारोहः मिथिला-मैथिलीक उपेक्षा

✍ अजित कुमार आजाद

विगत 22, 23 आ' 24 मार्चकेँ सगर बिहार आ' देशक राजधानी दिल्लीमे 'बिहार दिवस' मनाओल गेल अछि। विशेष कए राजधानी पटनामे तँ खूब धूमधामसँ बिहार दिवसक आयोजन भेल। 99 वर्ष पूर्व 22 मार्चेक दिन बंगाल प्रेसिडेन्सीसँ बिहार एकटा स्वतन्त्र राज्यक रूपमे अस्तित्वमे आएल छल। ओहि समय उड़ीसा संग छलैक। 1935 ई. मे एक अलंग कटल,उड़ीसा भए गेल। ओ नियमित रूपसँ एवं उल्लासपूर्वक 01 अप्रैलके अपन स्थापना दिवस मनबैत अछि। फेर दोसर अलंग कटल, झारखंड बनि गेल। ओहो अपन स्थापना दिवस मनबैत अछि। एहि हिसाबे, 99 वर्ष पूर्व बंगाल प्रेसिडेन्सीसँ जे भाग पृथक भेल आ' उड़ीसा एवं झारखंडक पृथक भेलाक बाद जे शेष रहल, सएह भेल वर्तमान बिहार आ' तकर जयन्ती समारोहक नाम भेल 'बिहार दिवस'। शताब्दी समारोहक आरम्भ सेहो एही 'बिहार दिवस'क आयोजनसँ भेलैक अछि। ज्ञात हो, जे एही संग बिहार विधान परिषदक स्थापनाक शताब्दी वर्ष समारोह सेहो आरम्भ भए गेल अछि। एहि समारोहक उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल 22 मार्चके कएलनि अछि।

बिहारी अस्मिताकेँ पहिचान आ' प्रतिष्ठा दिअएबा लेल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आरम्भहिसँ प्रयत्नशील रहलाह अछि। ओना जाधरि ओ केन्द्रमे विभिन्न पदपर मंत्री रहलाह ताधरि हुनक एहि बिहारी भावनाक स्वर कनेक दबल-सिकुड़ल सन बुझना जाइत छल, किन्तु जखनहिसँ ओ बिहारक कमान मुख्यमंत्रीक रूपमे सम्हारलनि अछि, हुनक उछाह सभटा सीमा-बन्हन तोड़िकेँ सोझा आबय लागल अछि। मुख्यमंत्रीक रूपमे एखन ओ तेसर कार्यकाल पूर्ण करबा दिस अग्रसर छथि। यद्यपि पहिल कार्यकालमे ओ केवल साते दिन मुख्यमंत्री बनल रहि सकल छलाह, किन्तु बिहारक आम जनताकेँ ई बुझेबामे ओ ओही बेर सफल भए गेल रहथि जे हुनकर मान-सम्मान आ' अधिकारक लेल दीर्घकालिक संघर्षक हेतु ओ सर्वाधिक सक्षम छथि। अपन दोसर कार्यकालमे ओ एहि दिशामे बेस काज सभ कएलनि आ' अपेक्षित सफलता आ' प्रशंसा सेहो पओलनि। तकरे परिणति थिक वर्ष 2010 केर विधान सभा चुनावमे विराट जनादेशक प्राप्ति। आब ओ आर मारिते रास विकासक काज सभ कए सकैत छथि–कइयो रहलाह अछि। बिहार लोकसेवा आयोगमे मैथिलीकेँ पुनः राखि मैथिल समाजक अपहृत सम्मान दिऔलनि। मुदा मैथिलीक मूल समस्या प्राथमिक आ' माध्यमिक शिक्षामे मैथिली विषय आ' माध्यम तथा विभिन्न स्तरक लेल मैथिली शिक्षकक नियुक्तिक सम्बन्धमे हुनक सरकारक दृष्टि निराशाजनक अछि। ई स्पष्ट अछि जे बच्चाकेँ मातृभाषाक माध्यमे शिक्षाक प्रश्न पर संवैधानिक अधिकार अछि, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अन्तर्गत सुरक्षा अछि, तथा समय-समय पर मैथिलीक पक्षमे न्यायालयक निर्णय अबैत रहल अछि। तथापि एहन परिदृश्यमे वर्तमान सरकारक मैथिलीक प्रति रूखि निश्चिते एकटा प्रश्न ठाढ़ कए दैत अछि! की हुनका द्वारा कएल जाइबाला विकास एकांगी, एकपक्षीय आ' एकक्षेत्रीय तँ नहि अछि? एकांगी आ' एकपक्षीय दृष्टिपर जँ नहियों ध्यान दी तँ 'एकक्षेत्रीय' होएब तँ झलकिए रहल अछि।

'एकक्षेत्रीय' होएबाक बिन्दु पर बिहारक निर्माणक पहिनहिसँ आइधरिक घटना पर जँ सरसरी नजरी दी तँ एक एहन वर्ग सक्रिय भेटत जे मिथिलाक भाषा आ' संस्कृतिक विकास एवं संरक्षणक बाटमे सदा अवरोध उत्पन्न करैत रहल अछि। ओवर्ग कहिओ दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिलामिहिर'मे मैथिली छापल जएबाक घोर विरोध कएने छल, पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशकेँ छेकबाक अपना भरि प्रयास करैत रहल(डा. सच्चिदानन्द सिन्हा,भाइसचान्सलर,पटना वि.वि., –'बंगालसँ बिहारकेँ अलग कयल हम अपना सभक निमित्त, अहाँ लोकनिक लेल नहि। मैथिलीकेँ स्वीकृत कयने मिथिला जीबि उठत। मिथिला जीबि उठत तँ हमरा लोकनिकेँ यू.पी. चल जाय पड़त। तेँ जावत हम जीअब मैथिलीकेँ स्वीकृत नहि होबय देब।'- किरण समग्र, पृ. 266) तथा वर्तमान बिहारमे ओएह वर्ग मैथिलक पेट पर लात मारने छल।

वर्तमान बिहार तीन गोट विशेष भूखण्ड, भाषा आ' संस्कृतिक समुच्चय थिक। एहिमे मिथिला, मगध आ' भोजपुर सम्मिलित अछि। ताहूमे मिथिला अपन जनसंख्या, अपन भाषा आ' अपन विशिष्ट संस्कृतिक कारणेँ उपर्युक्त अन्य दू क्षेत्रसँ विशेष महत्त्व रखैत अछि। बिहारक पहिचानकेँ विराट बनेबामे मिथिलाक योगदानक चर्चा देश आ' देशसँ बाहरो होअए लागल अछि। एहन स्थितिमे, मुख्यमन्त्री नीतीश कुमारसँ एतेक अपेक्षा तँ कएले जा सकैत अछि जे ओ मिथिलाक प्रति विशेष ममत्व राखथि। मुदा, आश्चर्य जे ई भए नहि रहल अछि।

हालहिमे सम्पन्न 'बिहार दिवस' समारोहक जँ समीक्षा करी तँ ई बात स्पष्ट बुझना जाएत जे 'बिहार दिवस'क एहि विशेष आयोजनमे मिथिला-मैथिलीक घोर उपेक्षा कएल गेल। एतबे नहि, अप्रत्यक्ष रूपसँ ई 'भोजपुरी महोत्सव'क सुगन्धि पसारबामे सफल रहल। ई सभ तखन भेल जखन कि बिहार सरकारक वर्तमान मन्त्रीमंडलमे विजय कुमार चौधरी, वृषिण पटेल, शाहिद अनवर खाँ, अश्विनी चौबे, रमई राम, नीतीश मिश्र, हरिप्रसाद साह, विजेन्द्र यादव सन मैथिल नेतालोकनि विभिन्न विभागक कमान थामने छथि। प्रतिपक्षक नेता सेहो एकटा मैथिले छथि–अब्दुल बारी सिद्दिकी। एकर अतिरिक्त बिहार विधान परिषदक सभापति पण्डित ताराकान्त झा सन लोक छथि। तखन

मिथिलाक एतेक उपेक्षा किएक? एकरा एक संस्कृतिक उपेक्षा कहब बेसी नीक होएत। ध्यान देबाक थिक जे संस्कृतिक उपेक्षा करैत आर्थिक विकास कतेक स्थायी एवं लोक-कल्याणकारी होएत?

'बिहार दिवस' पर पटनाक गांधी मैदानमे विशेष समारोह आयोजित छल। एकर अतिरिक्त पटनाक श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, रवीन्द्र भवन, कालिदास रंगालय, प्रेमचन्द रंगशाला, भारतीय नृत्य कला मन्दिर आदिमे सेहो कतिपय कार्यक्रम आयोजित छल। एहिमेसँ कोनो ठामक मंचपर मिथिलाक संस्कृतिक एकहुटा छाप नहि भेटल। यद्यपि गांधी मैदान समारोह स्थलक मुख्य द्वारपर मधुबनी पेंटिंगक किछु आकृति अवश्य बनल छल मुदा ओहो भांज पुरेबाक निमित्त मात्र छल।

मैथिलीक गायक-गायिकाक एकटा नम्हर सूची उपलब्ध करेलहुपर मात्र कुंजबिहारी मिश्र आ' रंजना झाकेँ बजाओल गेलनि। शारदा सिन्हा मुक्त कण्ठेँ अपनाकेँ मैथिली गायिका घोषित करैत छथि, मुदा हुनका भोजपुरीक संग साटि प्रचारित कएल गेल। ई लोकनि अपन प्रतिष्ठाक अनुरूप प्रस्तुतियो कएलनि। मुदा जेना कि अपेक्षा छल जे समारोहक शेष दू दिन सेहो मैथिलीक कार्यक्रम यथा, गीतनाद, लोकनृत्य आदि होएत,से नहि भेल। खेदक विषय जे लोक नृत्य आ' लोकगाथाक क्षेत्रमे अतिसमृद्ध मिथिलाक प्रतिनिधित्व नहि भेल। गांधी मैदानमे समारोह स्थलपर बिहार सरकारक विभिन्न विभागक स्टॉल सभ लागल छल। आपदा प्रबन्धन विभाग स्टॉलमे बाढ़िसँ बचबाक लेल उपाय सुझाओल गेल छल। हमरालोकनि जनैत छी जे बाढ़िसँ सर्वाधिक प्रभावित मिथिला अछि किन्तु आपदा प्रबन्धन विभागकेँ जेना मिथिला आ' मैथिली शब्दसँ परहेज होइक, स्टॉलकेँ देखलासँ सएह बुझना गेल। बिहारक छवि पढ़ाकू राज्यक रूपमे सेहो छैक, खास कँ मिथिलाक छवि ज्ञान-पिपासुक रहलैक अछि किन्तु उक्त समारोहमे एकहुटा एहन स्टॉल नहि छल जाहिसँ बिहारक एहि अध्ययनशील प्रकृतिक परिचय भेटितैक।

'बिहार दिवस' समारोहक संग जोड़ि नेशनल बुक ट्रस्टके द्वारा 21 सँ 29 मार्च धरि पटनाक गांधी मैदानमे राष्ट्रीय पुस्तक मेलाक वृहत आयोजित छल। नेशनल बुक ट्रस्टकेँ सेहो बूझल होएतैक आ' बिहार सरकारक तँ मैथिली अकादमी थिकैके। बिहार सरकारक हिन्दी ग्रन्थ अकादमी एवं राष्ट्रभाषा परिषदक स्टॉल छलैक, बिहारक सांस्कृतिक समृद्धिक प्रदर्शन लेल मैथिली अकादमीक संग-संग आनहु अकादमीक स्टॉल एहि अवसर पर उचित छलैक। जेँ कि मैथिली अकादमीक प्रकाशनक अपेक्षा अन्य अकादमीक प्रकाशनक संख्या नगण्य अछि, तेँ हेतु एकरहु स्टॉलक व्यवस्था अनठिया देल गेल। आ' दोसर दिश अपन प्रकाशनकं बिक्रीसँ निफिकिर मैथिली अकादमीक पदाधिकारी परिचित चेहराक जुलूसक संग परिभ्रमणक आनन्द लेल 'मार्च' करैत रहलाह। साहित्य अकादेमीक स्टॉल रहितैक तँ मैथिलीकेँ किछु प्रतिनिधित्व भेटितैक, मुदा सेहो नहि छल। हँ, पुस्तक मेलामे मैथिली कविता संग्रह 'अक्खर खंभा'क हिन्दी अनुवादक (सम्पादन अनुवाद -देवशंकर नवीन) लोकार्पण आ' ओहि पर पण्डित श्री गोविन्द झाक अध्यक्षतामे परिचर्चा अवश्य भेल। मैथिली साहित्यकारक रूपमे मन्त्रेश्वर झा, मोहन भारद्वाज, प्रदीप बिहारी आमन्त्रित छलाह। मैथिली कविता पर चर्चाक अपेक्षा बेसी शब्द अनुवादकपर ओ लोकनि हिन्दीमे व्यय कएलनि। एहूठाम आधासँ बेसी गैर-मैथिली साहित्यकारकेँ आ' किछु जन्मना मैथिली विरोधी उपकृत कएल गेलाह।

'बिहार दिवस' पर आयोजित कविगोष्ठीमे मैथिली कविता सुनबाक आग्रही श्रोता सेहो बेस निराश भेलाह। मैथिलक समृद्ध रंगमंच निरसल रहल, नुक्कड़ तक नहि। दोसर दिस भोजपुरी सिनेमाक उत्सव टोपटहंकारसँ कराओल गेल। हास्यास्पद स्थिति तँ ई रहल जे विभिन्न जिला मुख्यालय सभमे आयोजित बिहार दिवस समारोहमे, ओहि जिला सभक कार्यक्रमसँ सेहो मैथिली निपंत्ता छल जे जिला सभ खांटी मिथिलामे पड़ैत अछि मुदा हमरा सभक लेल धनि सन। हालहिमे मधुबनी जिला अपन स्थापना दिवस मनौलक अछि। स्मारिका छपौलक अछि। ओहूमे आधासँ बेसी स्थान हिन्दीए छेकने अछि। ओही मधुबनी शहरमे कहिओ जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन पदस्थापित छलाह। मैथिली लेल काज कए अमर भए गेलाह। मुदा साम्प्रतिक स्थिति की अछि?

ध्यातत्व अछि जे मुख्यमंत्री सहित बिहारक प्राय: सभ गोटेक ई आकांक्षा छनि जे बिहारकेँ विशेष राज्यक दर्जा भेटैक। मुख्यमंत्री तँ एहि मादे कोनहुटा अवसर नहि चूकैत छथि किन्तु की मिथिलाकेँ विशेष दर्जा नहि भेटक चाही? सर्वाधिक वोट मिथिलासँ, सर्वाधिक विधायक आ' मंत्री मिथिलासँ, तखन सर्वाधिक उपेक्षो मिथिलेक, से किएक? के देत एकर जवाब... मुदा ताहूसँ पैघ बात ई जे के मांगत एकर जवाब? मिथिलाक विधायक आ' मंत्रीक भरोसे रहब तँ एतेक दिन तँ ठकेबे कएलहुँ, आगूओ ठकाएब।

सम्पर्क : 21, एम.आइ.जी, हनुमान नगर,पटना-20

भेल भोर उठु मिथिलावासी, आबहु निद्रा त्यागू।
जागल लोक सबहिं पशु पक्षी, निज कर्त्तव्यहि लागू।
लेलक रत्न चोराय चोरबहु, हेरू ताहि जन भागू।
जौं नहि जागब तौं पछताएब, रहत किछु नहि काबू।
रहलहुँ अछि केवल पछुआएल, अपनहि टा झट जागू।।
झट उठि मातृभूमि भाषा ओ, जाति धर्म अनुरागू ।
'यदुवर' करू उद्धार हिनक सब,नहि तँ भीक्षा मागू।।

सबहि मिलि देश विपत्ति हरू।। ध्रु.।।
प्रथम एकता करू अपनामे, जनि क्यो व्यर्थ लरू।।
पंचायत द्वारा निज-निज सब झगरा स्वच्छ करू।
विद्या विविध पढ़ू ओ पढ़ाउ, ज्ञानी बनू सुधारू।।
कृषि वाणिज्य ओ शिल्प कला दिशि यत्न विशेष करू।।
बाल, बृद्ध ओ बहु विवाहकेँ त्यागि सुरीति धरू।
गौ द्विज नारि अनाथ सबहि पर,हृदय दया संचरू।।
सत्य सनातन धर्म ने त्यागू और प्रचार करू।।
निज भाषा साहित्य वृद्धि करू, गौरव स्वदेश भरू ।
'यदुवर' जन्मभूमि गुण गाबू, पुनि हिय ध्यान धरू।।

-यदुनाथ झा 'यदुवर', 1923

यात्री शतवार्षिकी

यात्री-नागार्जुन

✍ मोहन भारद्वाज

प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक कविता विभागक अध्यक्षीय भाषण करैत यात्री कविताकेँ 'युगक गीता' कहने छलाह। से, गीता अछि तँ महाभारतो होएत। सत्ते, आइ सौंसे दुनियामे महाभारत मचल अछि। भारत कि मिथिलो अबंच नहि अछि। माटिपर महाभारत बजरल अछि तँ मन ओहिसँ अप्रभावित कोना रहत? यात्रीक जीवन आ' मनमे सेहो महाभारत मचि गेलनि। पढ़ितै छलाह कि बिआह भेलनि। घर-परिवार छोड़ि प्रवासी बनलाह। श्रीलंका गेलाह। बौद्ध भेलाह। भारत अएलापर किसान आन्दालनमे भाग लेलनि। जेल गेलाह। श्रीलंका जाइत काल मातृभूमिकेँ प्रणाम कएलनि। लोक बुझलक जे मिथिला छोड़ि रहल छथि, भागि रहल छथि। मुदा, से बात छल नहि। ओ तँ स्पष्ट स्वरमे कहलनि–

'दु:खोदधिसँ सन्तरण हेतु
चिर विस्मृत वस्तुक स्मरण हेतु
सूतल सृष्टिक जागरण हेतु
हम छोड़ि रहल छी अपन गाम
माँ मिथिले ! अन्तिम प्रणाम !'

श्रीलंकासँ घुमलाक बाद रवि ठाकुरकेँ कहलथिन–

'तुम्हारा गुणगान मैं भला क्या करूँ
न उतना देखा है, न सुना है उतना
पैदा हुआ था मैं–
दीन-हीन अपठित किसी कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से
कवि ! मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
हरा हुआ नहीं कि चरने दौड़ते
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में'

एहि कवितामे आगाँ कहैत छथि–

'कलम ही मेरा हल है, कुदाल है
बहुत बुरा हाल है
करू मैं किस वर्ग में गिनती अपनी
लेखक ही बना रहूँ, पकड़ लूँ वह पेशा
बाप-दादा करते आये जो हमेशा
नहीं, नहीं, ऐसा नहीं
आशीष दो मुझको मेरा मन स्थिर हो
नहीं लौटूँ, चीर चलूँ, कैसा भी तिमिर हो।'

एहि निर्णयक बादे समस्याक समाधान भेल। तरौनीक ठक्कनकेँ कोलकाताक गुरुदेव रास्ता देखा देलथिन–

'कवि हूँ, सच है
इसीलिए क्या
आतप-वर्षा-हिम भी मुझसे दब जायेंगे
इसीलिए क्या बात-पित्त-कफ शान्त रहेंगे?
नहीं, नहीं, सो कैसे होगा?
कवि हूँ पीछे, पहले तो मैं मानव ही हूँ।'

एहि तथ्यानुभवकेँ मिथिलाक दार्शनिक मुद्रामे यात्री एना कहैत छथि–

'सत्य थिक संसार
सत्य थिक मानव-समाजक क्रमिक उन्नति
क्रमिक वृद्धि-विकास
सत्य थिक संघर्षरत जनताक ई इतिहास
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
परम सत्य मनुक्ख अपनहि थिक'

मनुक्खक इएह खुट्टा यात्रीक साहित्य कर्मक मेह बनि गेल। निछच्छ भावनाक बाढ़िमे ओ कहिओ नहि भसिअएलाह। साहित्य-संवेदनाकेँ वैचारिकताक निस्सन माटि पर प्रवाहित करब हुनका श्रेयस्कर बुझएलनि। इएह जीवन-दृष्टि यात्रीकेँ अपना समयक सामाजिक, आर्थिक आ' राजनीतिक स्थितिपर विचार करबाक प्रेरणा देलकनि। हुनका सोझाँ रहनि अपन जन्मभूमि, मिथिला। मिथिला आ' मैथिलपन यात्री-नागार्जुनक रचनाक प्राणवायु अछि। यात्री मिथिलाकेँ देश कहैत छथि, मिथिलाक बाहरक भारतभूमिकेँ परदेश। 'माँ मिथिले' सँ 'मिनी मिथिला' धरिक अनेक कवितामे देस-परदेसक प्रसंग देखबा मे अबैत अछि। यात्री निधोक भए केँ कहैत छथि–

'निखिल विश्व प्रिय, निखिल भूमि प्रिय
निखिल लोकप्रिय हमरा
तइयो अपने माटिक सउरभ लए आकुल मन भमरा
सभसँ प्रिय निज देश'

यात्रीक ई मान्यता हुनक भावनाक झोंक नहि अछि। ओ अछि क्षेत्रीयता आ' भारतीयताक गम्भीर चिन्ता। यात्रीक आँखिक सोझाँ छनि आजुक भारतीय समाज आ' ओकर आर्थिक स्थितिक विषम रूप। भारत देश नहि, महादेश अछि। एहिठाम विभिन्न रीति-नीति आ' सभ्यता-संस्कृतिक लोक रहैत अछि। एहि भिन्नताक अछैत भारतीय लोक जीवनमे समरसता छैक। यात्रीक चिन्ताक विषय ई अछि जे आजुक समाजमे लोक-रस सुखा रहल अछि। टुटैत ग्राम-तन्त्र, सामाजिक संस्थानमे पड़ैत दराड़ि-लोकवेदक पराभवक मूल कारण थिक। यात्रीक

कवितामे गाम आ' परदेसक पीड़ा बेर-बेर देखार भेल अछि। एक दिस 'चिट्ठी पबैत देरी तुरंत/भ' जैब विदा/जँ हाथ होए खाली तइयो/ से लिखलनि अछि बौआक माइ/ अपनहिं हाथेँ' क आग्रह अछि तँ दोसर दिस अछि परदेसीक ई पीड़ा–

'हे अभागल देश
पाकि जायत प्रवासहिमे
की हमर ई केश
हे अभागल देश !'

यात्रीक नजरिमे एहि स्थितिक कारण नेतालोकनिक सामन्ती प्रवृत्ति अछि। क्षेत्रीय विषमताकेँ बना केँ रखबाक दुरभि-सन्धि अछि। तेँ ओ 'वन्दना' सनक कविता लिखैत छथि। ई कविता तहिये लीखल गेल जहिआ भारत स्वतन्त्र भेल रहय–15 अगस्त, 1947। एहिमे ओ मिथिलाक वन्दना तँ करैत छथि, किन्तु कोन रूपमे से देखल जाए–

'जय-जय हो मिथिला माता
सोनित बोकरए जँ जुएल जोंक
तँ सफल तोहर बर्छीक नोंक'

यात्रीक संघर्ष-चेतनाक एकटा खास आयाम अछि। एकटा फराक मुद्रा अछि। हम सभ जनैत छी जे यात्री-नागार्जुन व्यक्ति-परक कविता बहुत लिखने छथि। साहित्य-संस्कृतिसँ सम्बद्ध व्यक्तिक अतिरिक्त राजनीतिक चरित्रपर सेहो कविता छनि। 'जगतारनि', 'आजुक महाकारुणिक बुद्ध', 'दोहाइ हे लिबर्टी मैया' आदि एहने कविता अछि। एहि कविता सभमे व्यक्ति कम, ओकर कारनामा बेसी अछि। ई स्वाभाविके अछि। यात्रीक नजरिमे व्यक्ति नहि, ओकर काज आ' विचार रहैत छल। तेँ हुनक कवितामे एक्के व्यक्तिक कखनो विरोध आ' कखनो समर्थन भेटैत अछि। कार्य आ' ओहिमे निहित वैचारिकताक आधार पर लोकक परीक्षण करब यात्रीक विशेषता छल। बात एतबे नहि अछि। यात्री अनके नहि, अपनो परीक्षण करैत छलाह। आत्म-परीक्षणक एहि आदतिक देन अछि ई पाँती–

'चानन बुझि, किदन लेपल हम देहमे
झरकि रहल अछि मोन आब सन्देहमे
सुन्न भेल ई जीह, जहर मिश्रित छलइ
तथाकथित ओहि संजीवन अवलेहमे
चानन बुझि किदन लेपल हम देहमे।'

यात्रीक एहि प्रकारक कविताक एकटा आओर पक्ष अछि। राजनीतिक नेताक कथनी-करनी पर मैथिली-हिन्दीएमे नहि, सभ भाषामे व्यंग्य-कविता लिखल गेल अछि। यात्रीक काव्य-संसारमे एकर भरमार अछि। मुदा, यात्रीक निजता ई अछि जे ओ नेतालोकनिक, हुनक सम्बन्ध राजनीतिसँ रहनु अथवा साहित्यसँ, मनोदशाक कविता लिखने छथि–

'अपन मल परिमल
आनक मन विष्ठा
आनक बाद जिद्द
अपन जिद्द निष्ठा
आनक विवेक दुर्बुद्धि
अपन विचार शुद्धि
आनक आँखि, बट्टम
अपन आँखि, आँखि
आनक पाँखि घास-पात
अपन पाँखि, पाँखि
....
भाषा उएह जे हम बाजी
आन मुजरिम हम काजी
आन प्रजा, हम राजा
आनक लेल भुसबा
अपना लेल खाजा
आनक भाषा बोली
हमर भाषा, भाषा'

एहि प्रकारक सोच वस्तुत: सामन्ती प्रवृत्तिक देन थिक। सामन्तक चालि-ढालि, सोचबाक रंग-ढंग भिन्ने होइत अछि। ओकरो एकटा दृष्टान्त देखल जाए–

'तोहर तानी, हम्मर भरनी
तोहर गपशप, हम्मर करनी।
तोहर लीला गड़बड़-सरबड़
हम्मर लीला संकटहरनी
तों कुत्थइ छ' डेग-डेग पर
छरपि गेलउँए हम वैतरनी
बड़नी-बड़नी, बड़नी-बड़नी'

ई थिक सामन्ती मानसिकता। सामन्ती-चक्रचालि। जे भेलैक से भेलैक। झंझ-मंझ छोड़ह। झगड़ा-झंझटसँ कोन फायदा? ठकपनीक एहि सामन्ती भंगिमाकेँ यात्री 'बड़नी -बड़नी, बड़नी-बड़नी'क छोट-छिन शब्दसँ देखार कए देलनि अछि।

यात्री-नागार्जुनक प्रसंग विचार करैत काल एकटा घटना मोन पड़ैत अदि। नागार्जुन स्वयं एकर उल्लेख कएने छथि। एकबेर सियाराम शरण गुप्त नागार्जुनकेँ कहलथिन –'अहाँकेँ अबैत देखैत छी तँ लगैत अछि जे जहरसँ भरल घैल डोलैत आबि रहल हो।' ओहिठाम मैथिली शरण गुप्त सेहो बैसल रहथि। ओ अनुजकेँ बुझेलथिन, 'संस्कृत विद्वान होइतो हिनका भीतर जहर भरल छनि। ब्राह्मण वंशमे जन्म भेलनि, विद्यापतिक मिथिला जन्मभूमि छनि, तेँ हिनका लेल अमृत सहजेँ लभ्य छलनि, किन्तु ई तँ विषकीट निकललाह।' नागार्जुन सहज मुद्रामे कहलथिन–'अहाँ यदि अमृतक एको ठोप हमरा लेल टपका दी तँ हमर आमूल परिवर्त्तन भए जाएत।' मैथिली शरण गुप्त मुस्कुराइत उत्तर देलथिन–'नहि, आब किछु नहि होएत। अहाँकेँ जीवन भरि विषकीट बनि केँ रहए पड़त।'

से ठीके, नागार्जुनक मानब छलनि जे आजुक समयमे विक्षोभ साहित्यकारक मुख्य प्रेरक अछि। 'भारत-भारती'मे सेहो विक्षोभ रसक प्रधानता अछि। नागार्जुनो तेँ भरिजन्म विषकीट बनल रहलाह। बनले नहि रहलाह, अपन संस्कृत कविता 'लेनिन स्तोत्रम्' मे एहि शब्दक सकारात्मक उपयोगो कएलनि–

'विक्षोभाग्नि प्रयोगी कुमति विषजुषां दुष्कृते भुक्तिभोगी।
पुण्यश्लोको विशोको जगति विजयतां लेनिनः कर्मयोगी।'

नागार्जुनक एकटा बंगला कविता अछि–'शिङ-टिङ नेई'। एहिमे एकटा मेमना अपना बारे मे कहैत अछि–'हमरा सिंह नहि अछि। माइ हमरा एसगरे छोड़ि चलि गेलि। ओकर दूधो पीबाक अवसर हमरा नहि भेटल। हमर अपन केओ नहि जीवित अछि। एसगर, असहाय छी। मुदा, देखू ने, ई धारीवाल बाला हमरो उपयोग कए लेलक अछि।' इएह होइत छैक। मेमना सन सुधुआ जीव सेहो शोषणक महाजालसँ नहि बँचल अछि। एहन स्थितिमे यात्रीक क्षुब्ध होएब सहज-स्वाभाविक अछि। स्थान-कालक सीमाकेँ टपैत ओ सीदित-पीड़ित लग पहुँचि जाइत छथि। रिक्शाबालाक पसेनाक गुण-धर्मक खोज बिहारमे तँ करिते छथि, मेरठक रिक्शाबालाक खोपड़ीक अन्दर विक्षोभक आगि कोना धधकि रहलैक अछि, तकरो खोज करैत छथि।

कविक संसारमे मास-वर्णन आ' ऋतु-वर्णनक परम्परा अछि। यात्री-काव्यमे सेहो मास-वर्णन अछि। मुदा, जखन उपयोगिताक दृष्टिक बात छैक तखन यात्रीक लोकधर्मी काव्य-चेतना कोन रूप लैत अछि, से 'साओन' नामक कवितामे देखल जाए सकैत अछि। राधा आ' कृष्ण झूला झूलि रहल छथि–

'दुइ देह छन्हि, एक परिस्थिति
एक प्राणं छथि, साँवर-गोर
किए कान्ह ओंघरेता भूपर
राधा किए बहओती नोर
आनक सुख-सोहाग देखतइ तँ
किए हेतइ ककरो मन घोर
मोट डारिमे मचकी बान्हल
झूला झूलथु नन्दकिशोर।'

यात्रीक सभसँ प्रिय ऋतु छनि वर्षा। एहि लेल जे–

'भरि-भरि दिन भीजत लोक
भरि-भरि दिन धान रोपत लोक
आशाक मचकी पर झूलत लोक
कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक।'

स्पष्ट अछि जे यात्रीक प्रकृति-प्रेम हुनक अनुराग-भावक विस्तार अछि। उक्त कविताक शीर्षक अछि–'हऽ, आब भेल वर्षा।' क्रम एहन-सन जे-हऽ, अहाँ आबि गेलहुँ। भरोस नहि छल जे अहाँ आएब, कतेक सुखद अछि जे अहाँ आबि गेलहुँ। ई अर्थ-व्याप्ति केवल एक अक्षरसँ होइत अछि–'हऽ'। एहिमे मैथिलीक भाषिक शक्तिए नहि, यात्रीक प्रयोग-पटुता सेहो बजैत अछि।

यात्रीक प्रेम-भावनाक एकटा रूप बूढ़वर एवं 'विलाप'मे भेटैत अछि तँ दोसर रूप 'पारो'मे। 'पारो' केँ उक्त दूनू कविताक परिणति कहब बेसी उपयुक्त होएत। पारो-चेतनाक विकास मैथिली साहित्यमे तेना केँ नहि भेल, मुदा आजुक सामाजिक जीवनमे ओ चेतना फड़ि-फुलि रहल अछि, ताहिमे सन्देह नहि।

'नवतुरिया', 'नवतुरिये आबओ आँगा'क औपन्यासिक संस्करण थिक। मिथिलाक सामाजिक समस्याक निदानमे नवयुवकक अहम भूमिका केँ एहिमे रेखांकित कएल गेल अछि।

'बलचनमा' यात्रीक सर्वोत्तम कृति अछि। एहिमे हुनक अनुभव आ' दृष्टिबोध दूनूक परिपाक अछि। मिथिलाक कृषि-समस्या पहिल बेर अखिल भारतीय विमर्शक विषय बनल अछि। मिथिलाक किसान आन्दोलन कए सकैत छथि, से पहिल बेर सत्यापित भेल अछि। मैथिली उपन्यास-लेखनक पृष्ठभूमिमे देखल जाए तँ पहिल बेर सवर्णसँ इतर व्यक्तिकेँ नायक बनाओल गेल अछि। एहि उपन्यासक सभसँ महत्त्वपूर्ण देन ई अछि जे आर्थिक आ' सामाजिक स्थितिकेँ फराक-फराक नहि, समेकित रूपमे देखल गेल अछि। भारत गामक देश अछि। भारत कृषि-प्रधान देश अछि। भारतीय संस्कृति मूलतः कृषि-केन्द्रित अछि। एहि सभ अवधारणाक प्रत्यक्ष प्रमाण अछि 'बलचनमा'।

दुखक विषय अछि जे मैथिली बचलनमाक सुपाठ्य रूप एखन धरि नहि आएल अछि आ' हिन्दी 'बलचनमा'क पाठ-भेद विसंगति उत्पन्न कए रहल अछि।

यात्री-नागार्जुनक उपन्यासेतर गद्य-रचनापर स्वतन्त्र रूपेँ विचार करबाक आवश्यकता अछि। निराला पर नागार्जुनक पोथी प्रकाशित अछि। हुनक बाल-साहित्यक एकटा मोटगर पोथी छपि सकैत अछि। लगभग एक सए निबन्ध पुस्तकाकार प्रकाशनक प्रतीक्षा कए रहल अछि। यात्री-नागार्जुन कथा आ' संस्मरण लिखने छथि। नाट्य-रचना कएने छथि। कतोक वर्ष धरि स्तम्भ-लेखन करैत छलाह। अनेक अनुवाद-कृति चर्चित छनि। बंगला आ' गुजराती उपन्यासक अतिरिक्त गीत-गोविन्द तथा मेघदूतक भावानुवाद उपलब्ध अछि। ई सभ रचना हुनक बहुभाषा विज्ञ होएबाक सूचना तँ दैते अछि, हुनक विद्वताकेँ बुझबाक अवसरो उपस्थित करैत अछि। एहिसँ यात्रीं-नागार्जुनक गद्य आ' गद्यक भाषापर विचार करब सम्भव होएत।

अन्तमे, एकटा बात आओर। यात्री-नागार्जुन चारि भाषामे लिखने छथि–मैथिली, हिन्दी, बंगला, आ' संस्कृति। उचित अछि जे हमसभ हुनका भाषा-भिन्नताक आधार पर नहि खतियाबी। विधाक कोलामे बाँटि केँ नहि देखी। यात्री-नागार्जुनक समस्त रचना पर विचार-विमर्शक स्वाद आ' प्रभाव अन्यथा कएल गेल चर्चासँ भिन्न होएत, ताहिमे कोन सन्देह !

सम्पर्क :
मो. : 09431419667
डा. सी.पी. ठाकुर पथ
शिवपुरी, पटना-800 023



तोर मन दौड़ैत छहु कोठाक दिस,
पैघ-पैघ धनीक दिस, दरबार दिस।
गरीबक दिस ककर जाइत छै नजरि,
के तकै अछि हमर नोरक धार दिस।

–यात्री

'उगनाक दयादवाद' क प्रासंगिकता

डॉ. रत्नेश्वर मिश्र

'उगनाक दयादवाद' परम आदर्शवादी उच्च कुलोद्भव साहित्यकार सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा लिखित आ' प्राय: हुनकहि सन आदर्शवादी मुदा जातित: आ' अन्यथा सेहो निम्नवर्गीय युवकक जीवनगाथा आ' तकरहि माध्यमसँ मिथिलाक धानुक, क्यौट, कुर्मी आदि टहलू–खबासक वर्गक व्यथा-कथा अछि। एहिमे एक दिस जतय दारिद्र्य आ' शोषणक मारल निम्नवर्गक विवशता आ' संघर्ष- दुहुक भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्यमे चित्रण अछि, ओतय दोसर दिस तज्जन्य सामान्यत: मानि लेल गेल वर्ग-संघर्षक अस्तित्वकेँ स्वीकार करितहुँ ओकर दुष्प्रभावसँ समाजकेँ सुरक्षित रखबाक जे विलक्षण मार्ग देखाओल गेल छैक, से प्रस्तुत साहित्यकारेँ सँ सम्भव छल। वर्ग संघर्षसँ अद्भूत कटुताक प्राकृतिक स्वर आ' प्रसारकेँ नियन्त्रित राखि उपन्यासकार शोषित-दमित वर्गहिमे एक एहन धीर गम्भीर आ' प्रखर चरितनायकक कल्पना प्रस्तुत करैत छथि जे सहजरूपेँ उच्चवर्गक वचन-व्यवहार आ' संस्कारसँ भूषित, सभ प्रकारक कटुता–तिक्ततासँ मुक्त आ' समाजक सुधारक लेल आनमे सुधार अनबासँ पहिने अपन वर्गक सुधार दिस प्रवृत्त होइत अछि आ' ताहि क्रममे अपन हित–अनहितकेँ कात राखि, आनक उद्धारमे लागि जाइत अछि आ' तकर पारिणामिक यश आ' सम्मानक अधिकारी तँ ओ मानल जाइत अछि तथा समस्त समाज ओकर गतिशीलता आ' सेवाभावसँ प्रभावित आ' लाभान्वित होइत अछि। मुदा ओकर अपन आ' ओकरासँ आत्मीय रूपसँ जुड़ल पारिवारिक लोकक जीवनमे रिक्तताक टीस रहि जाइत छैक। समाजमे कहिओ कोनो क्षेत्र अथवा स्थानमे एहन - चरित नायकक आविर्भाव भेल होएतनि से सामाजिक–ऐतिहासिक शोधक बावजूद कहब कठिन। मुदा, जौं स्वयम् महादेव उगनाक रूपमे अवतार लए विद्यापतिक सेवा कएलनि अथवा जौं रामराज्य सन यूटोपियाक सृजन भारतहिमे नहि अन्यत्रो समाजकेँ शक्ति–सम्बल आ' दिशा-निर्देश दैत रहलैक अछि तँ प्रस्तुत उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' स्वभाविक सम्भाव्य स्थिति नहि लागि असम्भव कल्पना लगबाक बावजूद सामाजिक समरसताक स्थापना लेल चिन्तन दिशा आ' नित नव विकल्प तकबाक अभिप्रेरणा देबा मे समर्थ होएबाक कारणेँ सर्वथा अभिनन्दनीय चेष्टा अछि।

'उगनाक दयादवाद' शीर्षकसँ अभिप्रेत जे मालिकक सुख- सुविधा लेल मारि-गारि आ' तिरस्कार रूपी विषक पान कएनिहार उगना रूपधारी शिव सदृश मिथिलाक निम्नवर्गीय दासवत् लोकक जीवनमे शिक्षा आ' सामाजिक सौहार्द्रक माध्यमसँ परिवर्तन अएबाक चाही, तिरस्कृत उगनाक पूज्य शिव स्वरूपक प्रतिष्ठापन होएबाक चाही। उपन्यासक रूपमे प्रस्तुत पोथी तुलसी मंडल नामक युवकक जीवनक पूर्वार्द्धक कथा अछि। जेठ भाए छीतन मंडल तुलसीकेँ अपन मालिक निरसू बाबूक ओहिठाम परम्परानुसार चरबाहीक काज पर नहि लगाय स्कूलमे नाम लिखबा दैत छैक। क्रमिक रूपेँ शिक्षित होइत तुलसी नेतृत्वकारी व्यक्तित्वसँ सम्पन्न होइत जाइत अछि। इतिहासकार आ' समाजशास्त्री लोकनि बहस करैत रहलाह अछि जे इतिहास निर्माता व्यक्ति अपन समकालीन परिस्थिति वा पर्यावरणक नैसर्गिक प्रतिफल मात्र होइत अछि अथवा सामाजिक आ' प्राकृतिक प्रभावसँ निरपेक्ष ओ जन्मना एहन विशिष्ट प्रतिमानसँ सम्पन्न होइत अछि, जे ओकरा अपना काल आ' परिवेशक नियन्ता आ' दिशा निर्देशक बना दैत छैक । बहस आइओ सम्पन्न नहि भेल अछि, मुदा सुमनजी अपन एहि रचनाक माध्यमसँ ओहि बहसमे हस्तक्षेप जकाँ करैत छथि आ' शिक्षा तथा सामाजिक सहयोगकेँ नेतृत्वकारी व्यक्तित्वक निर्माणक तत्त्वक रूपमे रेखांकित करैत छथि। हुनकर विशिष्टता एहू बातमे छनि जे ओ एक दिस मात्र तुलसीक नहि, अपितु सावित्री आ' माधुरीक, तँ दोसर दिस निरसू बाबू आ' नन्दकिशोरक संघर्षक कथा सेहो कहैत छथि, मुदा जतय पहिल प्रकारक संघर्ष आभ्यन्तरिक शुद्धि आ' समाज कल्याणक लेल अछि ओतय दोसर समाजक मूल्य पर अपन लाभ लेल। एकर अतिरिक्त ओ प्रत्येक बेर संघर्षक उल्लेखक संग लगले सामाजिक एकरसताक अभीष्ट सिद्धिकेँ सेहो महत्त्वपूर्ण ढंगसँ रूपायित करैत छथि। तुलसीक चरित्रक माध्यमसँ सामाजिक दुर्दशाक अन्तक संग व्यक्तिक तापस स्वरूपकेँ चित्रित करब उपन्यासकारक अभीष्ट छनि आ' ताहिमे ओ पूर्ण सफल भेल छथि। ततबे नहि, ओ इहो स्थापित करबामे समर्थ छथि जे तपस्या आ' सामाजिक नेतृत्व मात्र ब्राह्मण अथवा आन उच्चजातिक एकाधिकार नहि अछि, अपितु उगनाक दयादवादक सेहो, ई अधिकार भए सकैत छैक।

एक अन्य अर्थमे सेहो ई कृति अभिनन्दनीय अछि आ' से थिक जे मैथिलीमे तँ प्राय: नहिये, आनहु भाषा-साहित्यमे जतय उत्पादनक क्रियासँ जुड़ल जोन-बोनिहारक जीवन आ' दशाकेँ रचनाक आधार बनाओल गेल छैक, ओतहु गृहकार्य आ' मालिकक वैयक्तिक कार्यमे नियोजित नोकर आ' खबासकेँ केन्द्र बनाय कोनो सामान्यो कृतिक रचना कएल गेल हो, से कहब कठिन। ऐतिहासिक आ' आन तरहक शोध - साहित्यमे सेहो एहि वर्गक सुख-दु:ख आ' उत्थान-पतनक चित्रणक चेष्टाक अभाव अछि जखन कि मिथिले नहि, समस्त भारतवर्षमे सिन्धु आ' ऋग्वेद कालसँ घरेलू नोकर-खबासक, आ' से स्त्री–पुरुषक, क्लीवलिंगी सभक उपस्थितिक उल्लेख आ' साक्ष्य पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध अछि। ऋग्वेदक एक ऋचामे पचास दासीक दान आ' दोसरमे एक सए दासक दानक

उल्लेख भेटैत अछि। स्पष्टत: ई दास-दासी चरवाही आ' गृहकार्य लेल आदान-प्रदान कएल जाइत छल। बौद्ध त्रिपिटक आ' जातकमे 'गेह-दासीक' साक्ष्यक संग मालिकक टहल -टिकोरा कएनिहार ओहि प्रकारक पुरुषक चर्चा पर्याप्त देखल जाए सकैत अछि जे आन सभ प्रकारक भृत्यक तुलनामे मालिकसँ निकटाताक कारणेँ विशेष महत्त्वक अधिकारी होइत छल। एहि अर्थमे विद्यापतिकालीन उगनाक बहुत पहिनहिसँ ई वर्ग व्यापक रूपसँ सर्वत्र विद्यमान छल। मनुस्मृतिक आधार पर कहल जाए सकैत अछि जे मौर्यकालमे आ' बहुत दिन बादो धरि वैयक्तिक कार्यमे नियुक्त सेवक तिरस्कारक भावसँ देखल जाइत छल आ' ओकरा सुरक्षा प्राप्त नहि रहैक। वात्स्यायनक कामसूत्रक सूचनाक अनुसार सेविकाक सन्दर्भमे यौन-शोषण सेहो होइत रहैक। प्राचीन कालमे आ' बादमे मुलसमानी शासनक स्थापनाक बाद तँ निश्चये एहि प्रकार भृत्यक कार्य कएनिहार प्राय: दास होइत रहथि आ' जाति-व्यवस्थामे हुनकर स्थान नियत नहि रहनि। मुदा, उन्नैसम शताब्दी अबैत-अबैत हुनकर महत्त्व बढ़लनि आ' अपन काजक महत्त्वक कारणेँ जाति-व्यवस्थामे हुनकर स्थान निर्धारण कएल गेलनि जे अपेक्षाकृत सम्मानजनक रहनि, विशेषरूपसँ अस्पृश्य बूझल गेल लोकक तुलनामे। कुलीन वर्गक लोकक आयक 20 सँ 22 प्रतिशत एहि प्रकारक महत्त्वपूर्ण सेवक सभ पर व्यय कएल जाए लागल। अबुल फजल खबासक एहि श्रेणीमे अन्य अनेकक संग 'कुर्ची' अथवा घरक पहरेदार, 'शरबतदार', 'आबदार', 'तोशकी' अथवा पोशाक वा वस्त्राभरण रखनिहार आदिक उल्लेख करैत छथि। पहरेदारकेँ 'खिदमतिया' आ' कहुखनकेँ ओकर विस्तारित प्रभावक अभिव्यक्ति लेल 'खिदमत राय' सेहो कहल जाइत रहैक । ओना खबास ओ सभ काज करैत छल, जे ओकर मालिक ओकरा अढ़बैत रहथिन। खबासक प्रति मालिकक व्यवहार सामान्यत: ओकर काज आ' निष्ठासँ निर्देशित होइत रहैक। मुदा ई मालिकक स्वभाव पर सेहो निर्भर रहैक। एहनो स्थिति होएब सम्भव रहैक जखन बिना कोनो त्रुटिओक खबासकेँ गारि-गंजन सहय पड़ैक। सभ युगमे आ' प्राय: समस्त भारतवर्षमे राज आ' कुलीन परिवारमे तँ खबास रखबाक चलन रहबे करैक, मिथिलामे जातीय संरचनामे उच्च स्तर प्राप्त श्रोत्रिय तथा भलमानुस आ' आर्थिक रूपसँ सम्पन्न जमीन्दार आ' मध्यम वर्गक लोक खबास अवश्य राखथि। खबास मालिकक सेवाक अतिरिक्त विश्वस्त अथवा खानगी सलाहकार रूपमे सेहो कार्य करनि आ' जेहन मालिकक स्वभाव होइक, ताहि अनुसार कहुखन त्रस्त अनुचर तँ, कहुखन मुहलगुआ सन व्यवहार करनि। खबास राखब सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रतीक सेहो रहैक आ' कतोक सन्दर्भमे खबास मालिकक हाथ पैर आ' आँखि–कान होइक जकरा बिना बाबू-बबुआन किछु नहि बूझि पबैत रहथि, ओएह हुनका मोन पाड़नि जे ओ आवश्यक दैनन्दिन, चर्यासँ निवृत्त भेल छथि या नहि? मालिक संग सदति छाया जकाँ लगाल रहबाक कारणेँ ओ दूर आ' लगक हुनक सभ सम्बन्धी कुटुम्बी आ' लगुआ-भगुआकेँ चिन्हनि आ' तँ मालिके नहि, ओहोलोकनि अनेक प्रकारेँ ओही खबास पर निर्भर रहैत रहथि। जे हो, ई वर्ग अर्द्धदास अथवा बँधुआ मजदूर जकाँ रहथि। सभ दिन उच्च जातिक सेवा-टहलमे लागल एहि वर्गकेँ प्रतिदानमे ने मात्र दारिद्र्य, अशिक्षा आ' पराधीनता भेटैक अपितु गारि-फज्झति आ' कलंक-लांछन सेहो। परम्पराजन्य दौर्बल्य आ' अशिक्षाक कारणेँ ई वर्ग अपन समस्याक अपनहि अथवा अनको चेष्टासँ निराकरण करबामे समर्थ नहि छल, मुदा उपन्यासकार सुमन महात्मा गाँधीक अनुसरण करैत एहि वर्गक स्वतन्त्रता आ' सम्पंन्नतामे देश आ' समाजक वास्तविक उत्थान देखैत छथि। ओ लिखैत छथि जे, ''मध्यकालीन विद्यापतिक उगनासँ लए उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम बिकौआधरि सभक नैहर-सासुर, कुटुमैती-पहुनइ संग पुरनिहार अंग बनल रहलाह अछि। एखनुका बँधुआ-मजदूरक परिभाषा जँ ककरहु पर सामाजिक रूपेँ लागू देखब तँ हिनके लोकनि पर शत प्रतिशत सिद्ध होएत। खेत पथार नहि, घरो-आङन ककरहु पट्टिअहिमे गुजर-बसर करबाक ब्योंत-बाँत गिरहथक संगहि। हुनक खेतकेँ अपन बूझि ओहिमे आँटि पौनिहार, सेर-अढैया पर कमैनी -कमठैनी कएनिहार जनबोनिहार रूपेँ खटनिहार, भार-उपहार पहुँचौनिहार इएह सब होइत आएल छथि।'' एहि वर्गकेँ समाजक परिधिसँ उठाय केन्द्रमे अवस्थित करबाक प्रयास सर्वथा प्रासंगिक अछि आ' सम्प्रति चलि रहल सामाजिक न्यायक लड़ाईकेँ सहयोग करबाक ई श्लाघनीय चेष्टा अछि।

'उगनाक दयादवाद' प्रत्यक्षत: जनसरोकारक प्रगतिवादी आ' परिवर्तनकामी उपन्यास अछि जाहिमे शोषित आ' वंचित वर्गक तुलसीकेँ नायकक रूपमे प्रतिष्ठापित कए ग्रामीण समाजक रूपान्तरण, जाति आधारित वर्गमे बँटल मैथिल समाजक समरस एकाइक रूपमे निर्माण, नारी जागरण आन्दोलनक स्वरूप निर्धारण आदि कतिपय महत्त्वपूर्ण विषय उठाओल गेल अछि, मुदा मिथिलाक पारम्परिक संस्कृतिकेँ यथासम्भव सुरक्षित रखबाक आग्रह सर्वत्र अछि। तँ प्रगतिवादक स्वर तँ सुनबामे अबैत छैक। किन्तु ताहि लेल क्रान्तिक शंखनाद होअओ, तकर इशारा पर्यन्त एहि उपन्यासमे ताकब कठिन अछि। वस्तुत: सुरेन्द्र झा 'सुमन' मात्र एहि उपन्यासमे नहि, अपन समस्त साहित्यमे अन्यत्रो कतहु आमूल-चूल परिवर्तनकामी क्रान्तिकर्मी नहि छथि। हुनकर आस्थाक केन्द्र परम्पराक ओ तत्त्व सभ छनि जे युग-युगसँ समाजक मान्यता पाबि दृढ़े नहि, रूढ़ भए गेल छैक। एहि अर्थमे तुलसीकेँ कतबो प्रगतिशील आ' सफल देखाओल गेल होइक, ओ अन्तिम विश्लेषणमे रूढ़ समाजक अंग नहिओं तँ ओकर क्रिया-कलापक मूक द्रष्टा बनि केँ रहि जाइत अछि। प्रतिकारक नाम पर मात्र अपन इच्छा आ' मनोरथक दमन करैत अछि जाहिसँ समाजक, विशेषत: समाजक ओहि वर्गक, जकर ओ अथवा ओकरासँ प्रणय-सम्बन्धक लालसा रखनिहारि सावित्री सदस्य अछि, तकर, कोनो उपलब्धि नहि होइत छैक। जातीय पंचायत, जातीय भोज आयोजन करबाक दंडक विधानकेँ छीतन आ' ओकर परिवारक लोकक आ' सर्वोपरि प्राय: तुलसी आ' सावित्रीक इच्छाक विपरीत मुदा मालिकक इच्छानुसार तुलसीक विवाह ककरहु आनक बेटीसँ करएबाक तथाकथित करारसँ सभकेँ मुक्त कए तुलसी सावित्रीक विवाहक पथ प्रशस्त कएल। मुदा तुलसी तपस्या आ' प्रायश्चित्तक प्राचीन परम्पराक अनुसरण कए पंच लोकनिक निर्णयसँ विमुख रहि अपना आ' सावित्रीक लेल प्रकारान्तरसँ दण्डक विधान कए लेल आ' एहि तरहेँ उगनाक दयादवाद

लेल एक नव लीक बनयबाक अवसर छुटि गेलैक। ई दलित विमर्शक वर्त्तमान सन्दर्भमे अप्रासंगिक सन लगैत अछि। दोसर शब्दमे कहल जाए सकैत अछि जे आदर्शवादी कल्पनाक बेदी पर यथार्थवादक बलि चढ़ा देल गेल।

एहि उपन्यासक प्रासंगिकताक विवेचन एक अन्य सन्दर्भमे कएल जाए सकैत अछि। मिथिला राज्यक पृथक निर्माण लेल मिथिला केसरी जानकीनन्दन सिंहक आन्दोलन आ' ताहिसँ पहिनहु आ' बादोमे एहि उद्देश्यसँ मैथिल चेतनाक विकासक चेष्टा कतिपय सैद्धान्तिक प्रतिपादन द्वारा कएल गेल। मुदा ब्राह्मण आ' कायस्थक जातीय गठजोड़ बहुसंख्य आन जातिक मिथिला विषयक कोनो आन्दोलनसँ विमुखताक कारण बनल। तुलसीक माध्यमसँ उगनाक दयादवादकेँ मिथिला राज्यक निर्माणार्थ कएल जाए रहल आन्दोलनसँ जोड़बाक प्रयास साभिप्राय बूझि पड़ैत अछि। 1910 ई. मे स्थापित मैथिल महासभाक क्रिया-कलापक कारणेँ मैथिल समाज आ' ओकर परिचय विखण्डित नहियो तँ सीमित अवश्य भए गेल। आइयो कखनहु सस्वर तँ कखनहु चुपचाप ब्राह्मण आ' कायस्थसँ इतर जातिक लोक एहि बातक क्षोभ व्यक्त करैत रहैत छथि जे हुनका मैथिल नहि बूझल जाइत छनि। वस्तुतः मैथिल महासभाक निर्माणक बाद तत्काल यादव लोकनिक दिससँ एकर सदस्यताक माँग कएल गेलैक। मुदा तकर पूर्त्ति नहि भेला पर अगिला वर्ष 'यादव महासभा' बनाओल गेल। क्रमिक रूपेँ मैथिल एकजुटताक स्थान पर अलग-अलग जातिक संगठन बनाय अपन सामर्थ्य आ' भिन्न एकजुटताक प्रदर्शन प्रचलित प्रवृत्ति बनि गेल। एहि विघटनकारी प्रवृत्तिमे सुधार आनब उपन्यासकारक अभीष्ट बूझि पड़ैत अछि। जन-सामान्यक अधिकार चेतनाकेँ जागृत करब आवश्यक अछि आ' ताहि लेल वांछनीय जे भिन्न जातिक भिन्न संगठन यदि कदाचित बनबो करए तँ सभ अन्ततोगत्वा, संघबद्ध भए, मिथिलाक उत्थानमे अपन हितकेँ समाहित कए दीअय। ई पुनः रचनाकारक आदर्शवादिताक दिस इंगित करैत अछि। एकर उपलब्धि व्यावहारिक धरातल पर सम्भव नहि रहैक आ' आइधरि नहि भेल छैक, मुदा महादेवक गणशक्ति अथवा उगनाक दयादवादक आवाहन रचनाक निहितार्थकेँ स्पष्ट करैत अछि। स्वप्नद्रष्टा साहित्यकार एहि कृतिमे अपन आदर्शक उपलब्धिक मार्गमे न्यूनतम, सम्भव हो तँ शून्य, प्रतिरोधक प्रतिमान प्रस्तुत कए सुगठित आ' संगठित एकाइक रूपमे मिथिलाक निर्माणक कल्पना करैत छथि मुदा मिथिलामे तँ एखनधरि नहिञे, अन्यत्रो कतहु एना पूर्ण प्रतिरोध रहित राष्ट्रीय समाजक निर्माण सम्भव नहि भेल अछि, मुदा से भए सकय तँ ताहिसँ नीक की आ' तँ एहन कल्पना प्रस्तुत करबाक लेल उपन्यासकारक चेष्टा प्रशंसनीय अछि।

निष्कर्षतः सुरेन्द्र झा 'सुमन'क आदर्शलोकक निर्माण व्यावहारिक रूपसँ नहि भए सकल अछि। मुदा, समाजक तिरस्कृत आ' वंचित वर्गकेँ शक्ति-सम्पन्न करबाक हुनकर कल्पना एहि अर्थमे सर्वतोभावेन प्रासंगिक अछि जे शक्तिविहीन विशाल सामाजिक वर्ग, चेतना आएला पर, जौं उग्र आ' अतिवादी चेष्टा करत तँ ओ झंझावात् जकाँ विनाशक होएत आ' ओहनो तत्त्व सभकेँ समाप्त कए देत जकर अनुरक्षण-संरक्षण नव सृजनक पक्षधर छथि। मुदा अतीतक सम्पूर्ण विनाशक मूल्य पर नहि। इएह कारण अछि जे ओ 'उगनाक दयादवाद' केँ क्रान्तिकारी नहि, समन्वयात्मकताक संग परिवर्त्तनवादी देखबय चाहैत छथि। एहि अभीष्ट सिद्धि लेल ओ जाहि वर्गकेँ नवचेतनाक उत्स बनाय समाजक केन्द्रमे अवस्थित करए चाहैत छथि से वर्ग अछि उगनाक दयादवादेक आ' एहि अर्थमे उपन्यास सार्थक आ' प्रासंगिक अछि।

सम्पर्क :
मो. 09334920585
प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
सम्प्रति :
403, कर्पूरा प्रतिभा पैलेस
गाँधी पथ, नेहरूनगर, पटना-13



भारती मंडन पुस्तकालय

चेतना समिति अपन भारती मंडन पुस्तकालयकेँ मैथिलीक एक केन्द्रीय पुस्तकालयक रूपमे विकसित करबाक हेतु कृत संकल्प अछि। एहि दिशामे किछु सफलता भेटल अछि। परंच, ई काज समाजक मातृभाषा अनुरागी आ' लेखकक/ प्रकाशकक हार्दिक सहयोगक बिना सम्भव नहि अछि। अपनेसँ विनम्र अनुरोध जे अपन लिखल, अपन प्रकाशन अपन संग्रहसँ वा अन्ये प्रकारसँ प्राप्त मैथिलीक पोथी, पत्र-पत्रिका वा हस्तलिपि भारती मंडन पुस्तकालयकेँ उपहृत कए सहयोग करी।

-सचिव, चेतना समिति।

ग्राहकसँ

पत्र-पत्रिकाक नियमित प्रकाशन लेल ग्राहकक सर्वोपरि महत्त्वकेँ देखैत मैथिल समाजक सभ वर्गकक मातृभाषा अनुरागीसँ विनम्र अनुरोध जे 'घर बाहर'क वार्षिक ग्राहक बनि सहयोगी होथि। सदस्यता शुल्क अपने नकद/मनिआर्डर/ड्राफ्ट/चेक द्वारा सचिव, चेतना समितिक नामे पठा सकैत छी। मनिआर्डर द्वारा सदस्यता शुल्क पठौनिहारसँ विशेष अनुरोध जे ओ अपन नाम/ पूर्ण पता फुटसँ लिखि अवश्य पठाबथि,जाहिसँ 'घर बाहर' डाकसँ पठेबामे असुविधा नहि हो। -

सचिव, चेतना समिति

प्रथम पुण्यतिथि 13 जून

गीतक 'बिड़ला' मार्कण्डेय प्रवासी

✍ प्रो. रमाकान्त मिश्र

गीत-कवीत सबहिँ बिसरी..........'अर्थात् गीत आ' कवितामे अन्तर अछि। तुलसीकृत रामायण गीत नहि, कवितामे अछि (एहि ठाम कविता छन्द अभिप्रेत नहि)। हुनक गीत 'गीतावली', 'कवितावली' एवं 'विनयपत्रिका' नामक पोथी सभमे संगृहीत अछि। सूरदास भक्तिगीते लिखलनि आ' विद्यापति सेहो मुख्यत: शृङ्गारिक गीते लिखलनि। कहबाक अर्थ ई जे सभ प्रकारक काव्योद्गार गीत नहि कहल जाएत।

गीतमे लय आ' तुकक प्रधानता छैक। मुदा गीतसँ भिन्न रूपक कवितामे विषय आ' विचारक प्रधानता रहैछ। तुलसीकृत रामायणक अनेक दोहा अपन वैचारिकताक लेल लोकक जीह पर छैक। कवित्तकेँ अहाँ गुनगुना सकैत छी, सस्वर पाठ कए सकैत छी, गाबि नहि सकैत छी।

उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे चन्दा झा मैथिलीमे रामायणक रचना कए प्रसिद्धि पौलनि। मुदा ओ शिव भक्ति विषयक गीत सेहो लिखने छथि जे 'चन्द्र पद्यावली' नामक पोथीमे संकलित अछि। उपर्युक्त रूपक गीत सबहक शीर्षकमे राग-रागिनीक नाम छैक जाहिसँ लक्ष्य कएल जाइछ जे ओहि समयक कविलोकनिकेँ संगीत शास्त्रक ज्ञान सेहो छलनि।

मैथिलीमे गीत रचनाक परम्परा सुदीर्घ अछि। विद्यापति गीतेक रचनाक लेल प्रसिद्ध छथि। यद्यपि ओ मुख्यत: शृङ्गारिक गीत लिखलनि हुनक भक्तिगीत, जय, जय भैरवि.... आइ मिथिलाक राष्ट्र गानक रूपेँ मान्य अछि। चन्दा झाक रामायण जतेक प्रसिद्ध पओलकनि ओतेक हुनक भक्तिगीत नहि। कविवर जीवन झाक गीत रचना सेहो जनकंठमे नहि बसि सकल, मात्र साहित्यिक जिज्ञासाक वस्तु बनल रहि गेल। ठेठ मैथिलीमे रचित कविवर सीताराम झाक 'लोक लक्षण' कविता लोककेँ जतेक प्रिय लगलैक ओतेक हुनक भक्ति गीत नहि।

मैथिलीक पहिल झमकौआ गीतकार कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' भेलाह, जिनकर फिल्मी धुन पर आधारित 'टटका जिलेबी' आ' अपूर्व रसगुल्ला'क निम्न प्रकारक गीत सभ जेना, ''हम जेबै कुसेसर भोर/ रंगि केँ ठोर/ झनकैब झनाझन छारा।' एवं 'चौंकि चुप्पे' बड़ लोकप्रिय भेलैक। एतय इहो स्मरण राखब जरूरी जे मधुपक साहित्यिक स्वरूप दू प्रकारक अछि - एकटा सहज, सरल भाषाक गीतकार मधुप आ' दोसर तत्समबहुल एवं अलंकृत भाषाक काव्यकार मधुप। हिनक किछु रचना एहनो अछि जकरा बुझबाक लेल टीकाक आवश्यकता पड़य, से सम्भव।

मधुपजीक बाद अत्यन्त लोकप्रिय गीतकारमे हम रवीन्द्रनाथ ठाकुरक नाम लेब। अनेक वर्ष धरि ओ सुगम संगीतक सफल गायक, स्व. महेन्द्र झाक संग, 'रवीन्द्र-महेन्द्र'क नामसँ मैथिलीक मनोरंजन मंचकेँ झमकबैत रहलाह। हुनक, ''बाबा डंडोत-बच्चा जै सियाराम', 'लटर-पटर दूनू टाँग करय/ जेहने नवका भांग करय/ कनिये छाल्ही दू रसगुल्ला/ बस एतबे टा मांग करय'' एवं ''अर्र बकरी घास खो/ छोड़ि गठुल्ला बाहर जो''- मिथिलामे लोकप्रियताक शिखर पर छलैक। महेन्द्रक देहान्त भेने गीतक मेला उसरि गेल। मधुप आ' रवीन्द्रक भाषा गीतकेँ काव्य कोटिमे परिगणित कएल जाए कि नहि, ताहि पर विवाद भए सकैछ। मुदा, हमर विश्वास अछि जे जँ हुंनकालोकनिक गीतक कैसेट बनाए ओकरा बाजारमे उतारल जाइत तँ ओहिसँ मैथिली भाषाक लोकप्रियता तँ बढ़बे करत, ओ गीत सभ मिथिला क्षेत्रसँ अभद्र कोटिक भोजपुरी गीत सभकेँ खेहाड़ि देबामे सेहो समर्थ होइतैक।

विगत शताब्दीक चालिस-पचास केर दशकमे एकटा गीतकार ईशनाथ झा सेहो छलाह जे सुच्चा काव्य गीतक रचना कएलनि। शब्दक कोमलता आ' गेयताक कारणेँ ओ काव्यगीत सभ अपना समयमे कवि-साहित्यकार द्वारा प्रशंसित भेल छल। ओ गीत वा कविता सभ आजुक काल, विषय आ' भावक स्तरपर काल-सापेक्ष नहि लागए, से सम्भव। हुनक समसामयिक, किरणजी ओही समय ईशनाथ बाबूक यथार्थ निरपेक्ष काव्यभावपर विपरीत काव्य प्रतिक्रिया व्यक्त कएने रहथि। मायानन्द मिश्र सेहो गीत सब लिखलनि-'नभ आङनमे पवनक रथपर/ कारी-कारी बादरि आएल।' एहि गीत सभकेँ गाबि, ओ अपना समयक मैथिली कविमंचकेँ झमकौने रहैत छलाह। एहि निर्मल जलरूपक गीत सभमे प्रकृतिक काल्पनिक चित्रणकेँ छाड़ि, विषय गुणेँ किछु नहि छलैक। विख्यात रोमान्टिक अङरेज कवि पी.बी. शेलीक प्रसङ्ग ख्यातिप्राप्त कवि आलोचक मैथ्यू अर्नाल्ड कहि गेल छथि जे ओ (शेली) कोनो पक्षी रूपक देवदूत जकाँ आकाशमे व्यर्थ अपन पाँखि फटफटौलनि। पश्चात काल आलोचनाक भाषामे एहन रचनाकेँ 'वायवीय' कहल जाए लगलैक। आखिर गीतोमे तँ विषयक लसि-फसि रहब आवश्यक छैक ने?

पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित, मार्कण्डेय 'प्रवासी'क गीत सभ नीक लगैत छल। मुदा, छिट-फुट रूपेँ पढ़ने मन पर ओ प्रभाव उत्पन्न नहि भेल छल जे हुनक गीतक संकलन 'हम भेटव' केर अवगाहन कएने समष्टि रूपेँ भेल। हिनक गीतक भाषा, मधुप आ' रवीन्द्रक फुलझड़ी गीत आ' पुनः मधुप आ' सुमनजीक तत्समबहुल काव्य-भाषाक बीचक वस्तु लागल अछि।

'हम भेटव'क भूमिका आ' हिनक गीत सभकेँ पढ़ि एतेक स्पष्ट होइछ जे काव्यक नाम पर रचित तथाकथित छन्दविहीन आ' प्रयोगवादी

कविता हिनका निकृष्ट तँ बुझाइते छलनि, ओ सभ गीतक विरुद्ध षड्यन्त्र सेहो बुझाइत छलनि। अपन भूमिकामे ओ कहैत छथि– 'तथाकथित प्रगति आ' प्रयोगवादी लोकनि, सबसँ पहिने गीतकेँ उपेक्षित करबाक षड्यन्त्र करैत कविताकेँ नव्व कविता कहि-कहि आधुनिक घोषित कएलनि''। गीतक पक्षमे ओ आगाँ कहैत छथि, ''पद-लालित्य आ' लयात्मकता जाहि रचनामे होइछ, ओएह काव्य अछि आ' एहन काव्यत्व गीतहिमे भए सकैछ''। उपर्युक्त प्रकारक झाड़ूमार साधारणीकरण (अङरेजीमे Sweeping generalisation)केँ सम्पूर्णतामे गीरि लेब सम्भव नहि बुझाइछ। आधुनिक कालमे बेसी कविता मुक्तछन्देमे अछि आ' सम्पूर्ण जगतमे प्रशंसित आ' पुरस्कृत अछि। यात्रीक काव्य-काननमे विचरण करैत ई कल्पनातीत लगैछ जे ओ सन्नद्ध भए कहिओ गीत लिखैक लेल बैसल होएताह। काव्यमे पदलालित्य आ' लयात्मकता अवश्य आवश्यक छैक मुदा सभ प्रकारक कवितामे नहि। प्रवासी जीक उपर्युक्त प्रकारक काव्य परिभाषा तेँ, सोलहन्नी मान्य नहि। प्रवासी जी ई कहैत छथि जेँ गीत भारतीय काव्यक मूल प्रकृति अछि। हम एहिमे एतवहि जोड़ब जे काव्यक मूल प्रकृतिए गीत अछि। एकटा पाश्चात्य आलोचक कहैत छथि, "All poetry is lyrical in orgin" । मुदा तकर ई अर्थ नहि जे, जे गीत नहि, से काव्य नहि। प्रयोगक प्रसङ्ग ई कहब जे, प्रयोग करब तँ मनुष्यक स्वभावे छैक आ' तद्नुरूप काव्यमे अदौँ सँ नव-नव प्रयोग होइत रहलैक अछि। कविता अपन छावासँ छन्दक छान किएक छोड़ौलक? कारण, काव्यमे छन्द लयात्मकता तँ अनैत छैक, मुदा ओकर गतिमयताकेँ अवरूद्ध सेहो क्रैत छैक। तेँ प्राय: मनमे भावक ठेलमठेला काव्यमे छन्दक फाटककेँ तोड़लक आ' अभिव्यक्ति निर्वाध गतिसँ निकलि पड़ल। बहु रास बात बहुत आवेगसँ कहबाक काल मात्राक गणना आ' तुकक ताका-हेरी करब, बहुत कविकेँ व्यर्थक परिश्रम सन लगलनि, फलत: मुक्त छन्द। विगत शताब्दीक प्रारम्भिक दू-तीन दशक मध्य एकटा विख्यात आलोचकक इजरा पाउंड मुक्त छन्द पर की कहलनि अछि, जे काव्यमे अधिक मात्रामे अभिव्यक्तिक मुक्तछन्दकेँ जन्म देलक(I think the desire for vers libre (मुक्तछन्द) is due to the sense of quantity reasserting itself after years of starvation) । आन कोनो गूढ़ कारण वा षड्यन्त्र मुक्तछन्दकेँ अस्तित्वमे अएबाक लेल उत्तरदायी नहि अछि। नागार्जुन सहित हिन्दीक नामी-गरामी काव्यकार जेना, मुक्तिबोध, अज्ञेय, निराला, केदारनाथ अग्रवाल, रामशेर, गिरिजा कुमार माथुर, धूमिल आ' अनेक अन्य मुक्ते छन्दमे रचना कए केँ प्रसिद्धि पौलनि। काव्य जगतमे मात्रिक छन्दक अवसान एकटा कटु सत्य अछि। मुदा, अभिव्यक्ति शैलीमे प्रकार भेदक थाह पाएब कठिन अछि। जतेक कवि ततेक प्रकारक शैली। सम्प्रेषणीयताक लेल, चालू भाषाक प्रयोग जँ अड़घय तँ कहब जे आजुक काव्य-रचनाक परिदृश्यमे पद-लालित्य आ' लयात्मकता आउट ऑफ फैशन भए गेल छैक, उत्सवी परिधान जकाँ औपचारिक बुझाइत छैक, अलंकरण जकाँ बुझाइत छैक, आम आदमीक भाषा जकाँ नहि बुझाइत छैक। आजुक कविता अशिष्ट नहि मुदा नाङ्गट भाषाक खाँहिस रखैत अछि। मानवीय संवेदनाक उत्प्रेरणाक दृष्टिसँ आधुनिक कविताक 'तेवर' मे व्यंग्य विद्रूप आ' आक्रोशक भाव सर्वोपरि अछि। ई 'तेवर' प्रवासी जी सेहो अपन अनेक गीतमे प्रदर्शित कएने छथि, जे गीतक परिपाटी मूलक भावक्षेत्रकेँ टपि केँ आगाँ चलि जाइत छैक।

अपन भूमिकामे प्रवासीजी, उर्दू गजलक गेयतामे अपन गीतक गेयताक सादृश्य तकैत छथि। ग़जल, उर्दू काव्यक सबसँ सफल आ' सशक्त माध्यम अछि। कहि सकैत छी जे उर्दू काव्य-प्राङ्गनक बहुलांश क्षेत्र गजले छेकने छैक। गजलक अर्थे छैक 'प्रेमगीत' जे छलैक तँ, मूलत: प्रेमक स्थूल अर्थक मुदा जकरा पश्चात् सूफी सन्तलोकनि ईश्वरसँ मिलनक भाव धरि लए गेलाह। सूफीलोकनिक एकटा प्रसिद्ध गीत अछि–''छाप, तिलक सब छीनी रे तों से नयना लड़ाइ के।''

कहबाक ई छल जे.प्रवासीजीक गीत गजल शैलीक नहि अछि ओ सब गीते अछि कारण गजलमे जे लय-विधान छैक, से हिनक गीतमे नहि अछि। गजलमे दू-दू पाँतीक चरण (बन्द) होइत छैक आ' लय-विधान 1-1, 2-1, 3-1 .... क्रमश: होइत छैक। एहि लय-विधानक नाम छैक 'रदीफ'। निम्न किछु उदाहरणसँ ग़जलक स्वरूप बूझए मे आबि जाएत। पहिल उदाहरण अठारहम शताब्दीक प्रसिद्ध उर्दू शायर वली दकनीक अछि :

''सजन तुम सिती उलटो निकाब आहिस्ता-आहिस्ता-(1)
कि ज्योँ गुल से निकलता है गुलाब आहिस्ता- आहिस्ता-(1)
अजब कुछ लुफ्त रखता है शव-ए-खल्बज मे गुलरु सूँ-(2)
खिताब आहिस्ता-आहिस्ता, जवाब आहिस्ता-आहिस्ता-(1)
....

प्रसिद्ध उर्दू शायर, गालिवक गजलक चारि पाँती सेहो प्रस्तुत अछि

''कोई उम्मीद बर नहीं आती - (1)
कोइ सूरत नजर नहीं आती - (1)
मौत का एक दिन मुअइअन है-(2)
नींद क्यों रात भर नहीं आती-(1)

'हम भेटब'क भूमिकामे प्रवासी जी कहैत छथि, ''गजल भारतेसँ चोराओ गेल गेय छन्द अछि।'' जखन कि तकर प्रमाण हमरा कतहुँ उपलब्ध नहि भेल अछि। उलटे शोधकर्ता लोकनिक खोज ई छनि जे ग़जल मूलरूपसँ अरबी आ' पश्चातकाल फारसी भाषाक काव्य विधा अछि। निम्न उद्धरण देखल जाए, "The Gajal came into its own as a poetic genre during the Ummayyad Era (661-750) and continued to flower and develop in the early Abbasid Era." अर्थात् काव्य विधाक रूपमे गजल, अरब देशमे, इस्लाम पूर्व, खृष्टाब्द 661-750 उम्मायाद-युगमे अपन स्वरूप, ग्रहण कएलक। (गजलक संक्षिप्त इतिहास ले. डेविड जला जेल, 2007)। अत: प्रवासीजीक धारणा जे ग़जल भारतसँ चोराओल गेल विधा अछि, निर्मूल अछि। तहिना हुनक धारणा इहो अछि जे उर्दू भाषाक 'तख़ल्लुस' विद्यापतिक भनिताक नकल अछि। याहिया दाउद अब्बास नामक एकटा उर्दू लेखकक खोज छनि (आधार उपर्युक्त शोध-आलेख) जे 'तखल्लुस'क प्रयोग 1141 ई. सँ पूर्वक फारसी कवि सिनाइक काव्य

रचनामे पाओल गेल अछि। फारसी कवि, सादीक समय धरि 'तखल्लुस'क प्रयोग, धुरझार रूपेँ होअए लागल छल। इति भूमिका प्रसङ्ग।

आब हम, 'हम भेटब'क 77 गीतमे सँ किछुए गीतक विश्लेषणक माध्यमेँ प्रवासी जीक गीत रचनाक मर्म धरि पहुँचबाक प्रयत्न करब।

संग्रहक शीर्षक गीत, 'हम भेटब' प्रवासीजीक गीत रचनाक हस्ताक्षर धुन (Signature tune) अछि। गीतक प्रत्येक चरणक अन्तमे 'हम भेटव' टेकक आवृत्तिक संग, 'घाट पर', 'खाट पर', 'बाट पर', 'टाट पर'क तुक एहि रचनाक गेयताकेँ अव्याहत रूपेँ गतिमय तथा संगीतमय कएने छैक। प्रथम चरणक 'मोनक बाट पर' सरल रूपक उत्प्रेक्षा अछि मुदा 'इतिहास नदी के घाट पर' बाला बिम्बोत्प्रेक्षा मानस पटल पर चित्रित होएबामे सफले नहि छैक। 'इतिहास'क कोनो स्थूल बिम्ब नहि बनैछ आ' तकरा संग कवि एकटा मूर्त्त बिम्बकेँ जोड़लनि अछि। 'खाट पर', 'टाट पर' मूर्त्त बिम्ब सब अछि।

प्रवासी जीक बेसी रचनामे बिम्ब सभ अमूर्त्त रूपक अछि। प्रस्तुत रचनामे सेहो भाववाचक संज्ञा पदक मेला अछि–हृदयहीनता, शील आदर्श, मैथिलत्व। ''अछि, कविता कोइलीक बहिनपा। नहि बाजत कागक भाषा''- पूर्णतया मूर्त्त आ' भावोत्प्रेरक अछि। काव्यमे एही रूपक मूर्त्त बिम्ब-विधानकेँ हम बेसी सम्प्रेषणीय आ' तेँ विशिष्ट बूझैत छी।

प्रवासी साहित्य-रचनामे स्तरीयताक पक्षपाती छलाह। भाषाक दृष्टि सँ ई पण्डित छलाह, संस्कृतविद् छलाह, से बुझबा योग्य होइछ। एहि रचनामे ओ घटिया साहित्यकारक तुलना 'बबूरक गाछ' सँ कएलनि अछि जकर देहमे काँटे-काँट। बबूरक बिम्ब तँ सर्वथा मूर्त्त अछि मुदा, आगाँक पंक्तिक 'दुर्जनता' ओहिना सर्वथा अमूर्त। एहि शब्दसँ अहाँकेँ जे बुझबाक हो से बूझी। बूझी जे ई दूषित वायुक एकटा गुव्वारा अछि। आधुनिक आलोचनाक भाषामे एहि प्रकारक भाववाचक संज्ञापदक प्रयोगकेँ 'वायवीय' कहल जाइछ। गीतमे आगाँ 'गीदड़' एवं 'हरिण'क प्रतीक बिम्ब अछि–'अछि गीदड़केँ हरिण कहैले होड़ मचल/ हम मौन छी.. ..।'' नीक रचनाकार जेना, प्रवासी स्वयं हरिणक कोटिमे छथि, जनिक रचनाक नाभिसँ कस्तूरीक सुगन्धि निकैत छनि। 'गीदड़ भेलाह ओ अपरोजक आ' अशिष्ट रचनाकार जे अपन 'हुआ-हुआ'क कटुतासँ अहाँक कर्णरन्ध्रकेँ फाड़ताह।

ई भेल एहि गीत रचनाक भाषिक कायाक अध्ययनक एकटा प्रयत्न। भए सकैछ जे ई विश्लेषण अहाँ केँ बेसी ऋणात्मके लागय। मुदा, सम्पूर्णतामे ई रचना अपन भाव-सम्पदा आ' गेयताक कारणेँ हमरा नीक लागल अछि।

दोसर रचना जकर विश्लेषण हमर अभीष्ट से अछि, ''गदहा गरजै अछि शेर जकाँ''। एहिमे कवि प्रगतिशील (तथाकथित) रचनाकार पर अत्यन्त कुपित प्रतीत होइत छथि। क्रोध एहि रूपक छनि जे, पण्डित प्रवासी अशिष्ट रूपक भाषाक प्रयोग पर उतरि अबैत छथि। कुमर वाजितपुरक एकटा कथाकारक कथा हुनका 'खचरै' बुझाइत छनि। किछु पाँती द्रष्टव्य : ''भाषण कहबैए कविता/ खचरै कहबैछ कहानी अछि/ चोर-चुहारक मोट-मोट पोथी अछि ग़जलक शेर जकाँ।'' आगाँ, कवि उपर्युक्त कथाकारकेँ 'अशिष्ट भङ्गेर' सेहो कहैत छथि। कहैत छथि जे ई कथाकार 'राजनीतिक माँछी' छथि, 'गुटबाज' छथि, साहित्यमे 'अधलाहक दल' बनौने छथि आ 'खचरै' प्रभृतिक कहानी लिखि 'मैथिलीक आंगन'मे 'मैथिलपन' केँ अपमानित करैत छथि।

एहि गारि गीतसँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे प्रवासी पाश्चात्य प्रभावित काव्य वा कथा रचनाक प्रति पूर्णतया असहज छलाह आ' से एहि रूपेँ जे गारिपर उतरि अबैत छलाह।

अपन गीत रचनाक प्रसङ्ग ओ की कहि गेल छथि से हुनके मुहेँ सुनी। गीतक नाम अछि, ''गीते अछि वासभूमि''। ई हुनक कविकर्मक विचारदर्शन अछि, जाहिमे ओ अपन काव्य प्रतिभाक दम्भ सेहो प्रदर्शित करैत छथि। द्रष्टव्य: ''नव काव्यक नीरस इतिहासकेँ/ दै छी दानमे गीतरस/ हम गीतक बिड़ला/ गीते बटैत छी/ शेष किछु अछिए नहि/ लाथ की करब।'' विषय जे हो प्रत्येक चरणक अन्तमे ''लाथ की करब'' केर 'टेक' एहि रचनाकेँ पूर्ण रूपेँ गेय बनौने छैक।

संग्रहक अनेक कविता देशमे भ्रष्टाचार आ' राजनीति पर केन्द्रित अछि जेना–''आब चुप रहने नहि चलत काज कोनो अन्तर नहि, नङ्गटे नाचत देश आ' आइ राजनीति। संग्रहमे ऋतु-प्रकृति विषयक कविताक सेहो कमी नहि छैक। जेना, 'फेर पछवा बसातक स्वर वैह'; 'टहटह अछि क' रहल रौद; वरसू मेघ झहरि बरसू; नाचू जलधर'' इत्यादि।' शरद भेल वाममे ई ऋतुप्रियाक लेल विरह भावक पीठिका अछि। एहिमे भोरका कुहेसक काव्य दृश्य द्रष्टव्य : 'छिड़िऔने अछि निघेस, उषाकेर बाछी/ कहैछ जकरा कुहेस/ रवि किरनक गाछी।'' मुदा एहिमे 'सिन्धु-तरंगक रक्तचाप' नपबाक बिम्ब विचित्र लागल अछि। 'आँजुर भरि सिंगरहार' मे प्रकृतिक एकटा सुन्दर पेंटिंग अछि, सूर्यक गैरिक रंग, कचनारसँ झरैत फूल, पोखरिमे वत्तखक एकटा जोड़ा कुमुदनी फूल सबसँ कनफुसकी करैत' एकटा कलात्मक शब्द चित्र अछि। मुदा एहूठाम आगाँ अनेरुआ 'बबूर सिंगरहारक कोमलताकेँ मुह दूसैत छैक आ' कल्पनाक गागर लेने, आँखिक राधा, शून्यताक छाती पर नचैत छैक। मुदा, किएक से नहि बुझबा योग्य होइछ। ग्रीष्मकेँ कवि प्रकृतिक भ्रष्टाचार कहैत छथि। ''बरसू मेघ झहरि बरसू'' - एकटा सुन्दर पावस गीत अछि।

प्रवासी जीक शृङ्गार भावक सेहो अनेक गीत अछि। 'नुका रहल अछि चान' मे रतिभाव तान्त्रिक शैलीमे अभिव्यञ्जित अछि। एहिमे 'उनटा सरिसब' छीटल जाइत छैक; ''दरस-परस श्रुति गन्ध। पथमे टोना मोना छैक। एक चरण द्रष्टव्य: 'कुसक सेज पर सूति रहल अछि/ घोंघा-सितुआ/ आठ आँगुरक चोख नहरनी/ पजिऔने अछि।' अलसाएल भोरक पुरबैयामे दलान पर रंगल साड़ी पसरल छैक– नायिका पाहुनक लेल तिलकोड़क पात तरबाक इंतजाममे लागलि छथि, जकर वर्णन देखू:- ''नमहर सन डगरामे तिलकोड़क पात तोड़ि/ नवका बरगुन्नामे/ हींग, हरदि, घाटि, घोटि / उत्साहक झाँझरिसँ देखि रहल। प्रियतम पथ बावरिया।' ई, मिलन भावक एकटा सुन्दर गीत अछि। एतबहि कहब जे 'डगरा' माने सूप।

एकर अतिरिक्त मिथिला आ' मैथिलीपर सेहो कविक अनेक गीत अछि। 'तुरंत सम्हरू'क निम्न चरण द्रष्टव्य : 'चतुर्दिक रावणे अछि/

मैथिलीकेर हरणमे लागल/ धनुष पर तीन तानू/ युद्ध भ' रहले/ तुरत सम्हरू। ''तुरत सम्हरूक आवृत्ति एहि गीतकेँ ग़ज़लक ढब देने छैक। ''अछि विडम्बना प्रवासी'' मे शुष्कम काष्ठम् तिष्ठति अग्रे बाला बात अछि। एहिमे मात्र छाती तक हाहि अछि। 'मरैए', 'करैए' 'जरैए', 'पजरैए'क तुक अछि आ' विषयक रूपमे सत्य, निष्ठा, नैतिकता एवं सदाचारपर उपदेश अछि। काव्य भावक किछु नहि अछि।

विविध गीतक अन्तर्गत हम हिनक एकटा अत्यन्त सरल आ' गेय गीत, 'बहुत नीक लागल'क चर्चा करब। पाँच चरणक एहि गीतमे 'ल'कार व्यंजनक पुनरावृत्ति एकरा मनमोहक रूपेँ गेय बनौने छैक। एक दू चरण द्रष्टव्य: 'अहाँक प्रेम जागल/ बहुत नीक लागल/ घृणा जेँ कि भागल/ बहुत नीक लागल/ उजड़ि गेल छल जे आशक मड़ैया/ पुन: गेल छारल/ बहुत नीक लागल।''

''आशा रहैए नहि'' संग्रहक सबसँ कारुणिक गीत अछि। वार्धक्य आ' एकाकीपनक पीड़ाक भाव एहिमे कलात्मक काव्यभावेँ उपस्थित अछि। एहिमे पौराणिंक सन्दर्भकेँ विलक्षणतासँ उपयोगमे आनल गेलैक अछि। निम्न दू चरण द्रष्टव्य : ''एहन शंकर छी जकर गौरिआ/ नहि आब चीन्है छथि । निघटलै घास तेँ खुट्टामे/ केओ बसहा बन्हैए नहि/ जरौलहुँ कामकेँ तेँ/ स्वयं हम निष्काम रहै छी/ बिसरलहुँ ताण्डवो तेँ/ हाथमे डमरू बजैए नहि।''

मधुपजीक पश्चात आधुनिक कालमे मैथिलीमे जमि केँ गीत लिखनिहार निस्सन्देह, प्रवासीए छलाह। आधुनिक कालक मैथिली साहित्यमे सतहत्तरि गीतक संग्रह प्राय: हिनकहिँ छनि, ताहि दृष्टिसँ ओ, अवश्य गीतक 'बिड़ला' छलाह।

सम्पर्क :
मो. -09608011947
राज क्वार्टर्स श्यामाबाग
क.सि.द.सं.वि.दि.दरभंगा-846005



डा. अमरनाथ झा : एक स्मृति पुष्पाञ्जलि

आचार्य श्री आद्याचरण झा

डॉ झाक अङरेजी-हिन्दीक प्राण्डित्य तँ विश्वविख्यात अछि। एतय हुनक संस्कृतक अद्‌भुत पाण्डित्यक एक चमत्कारजनक घटनाक स्मरण कए रहल छी। जाहिमे हम स्वयं नवयुवक, एक व्याकरण साहित्याचार्य (लब्धस्वर्णपदक) उपस्थित सक्रिय रही। दरभंगाक मिथिला शोध संस्थान महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह प्रदत्त लगभग एक सए एकड़ भूमि, सैकड़हु आम्रकुञ्ज तथा पन्द्रह-सोलह आवासीय भवन। म.म. उमेश मिश्र प्रथम निदेशक रूपमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ महाराजाधिराज द्वारा आनल गेल छलाह आतए एक दिन बेलजियम देशीय डा. टुच्ची (Tuccey)नामक विद्वान 1951 ई. मे आएल छलाह। हुनक स्वागतार्थ डॉ अमरनाथ झा अध्यक्षता हेतु साग्रह आमन्त्रित छलाह। म.म.उमेश मिश्र अङरेजीमे स्वागत-भाषण कएलनि। डा. टुच्ची दश-पन्द्रह मिनटमे संस्कृतमे भाषण कएलनि। उपस्थित विद्वद् वृन्द राजपण्डित बलदेव मिश्र, पण्डितप्रवर त्रिलोकनाथ मिश्र, कविशेखर बदरीनाथ झा, पण्डितप्रवर ब्रह्मदत्त द्विवेदी (पटना सिटी) प्रभृति पचाससँ अधिक तथा नवयुवक हमरा सदृश पचीस-तीस विद्वान् सेहो उपस्थित रही। अध्यक्षीय भाषण डॉ झाकेँ देबाक रहनि। ओ माइकक सामने ठाढ़ भेलाह। अपन स्वभावानुसार दहिना हाथसँ माइककेँ धए ठाढ़ भए चालिस-पैंतालिस मिनट संस्कृतमे धारा-प्रवाह भाषण देलनि, जे समस्त सभागारकेँ चकित-स्तब्ध कए देलक। डॉ. झा अनुरोध कएलथिन्ह जे दश मिंनट अपने सब बैसी। डॉ टुच्चीकेँ राजदरभंगाक अपन विमान पर बैसा केँ हम आबि रहल छी। तदनुसार सब बैसल रहल। ओ अएलाह। पहिने तँ महामहोपाध्याय पर कुपित भए अङरेजीमे स्वागत भाषणक हेतु क्षोभ प्रकट कएलनि। तकरा बाद सम्पूर्ण विद्वान् समाजकेँ पुछलथिन्ह जे हमरा भाषणमे अशुद्धि कतेक भेल? सभ केओ एकस्वरमे बजलाह जे एको शब्द नहि। हम सब तँ अपनेक भाषण संस्कृतमे सुनैत आत्मविस्मृत भए गेल रही। ई हमरा लोकनिक प्रथम अनुभव छल। बहुत आग्रह पर पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्र कहलथिन्ह-अपने 'अस्मिन् विश्वे' कहलियेक। सामांन्यत: 'विस्वस्मिन्' होइत छैक। आर्षप्रयोगमे 'विश्वे' सेहो भेटैत छैक। एहि तरहेँ ई अद्वितीय घटना संस्कृत शिक्षा जगतकेँ महिमामण्डित कएलक। अन्तमे पाँच मिनट संस्कृतमे धन्यवाद देनिहार एहि पंक्तिक नवयुवक छलाह।

सम्पर्क:-
फोन 0612 2586792
61, ज्योतिपुरम्, खाजपुरा, पटना 800014



मैथिली साहित्यक राहु तिथि : 15 आ' 19 जून

✍ डा.देवशंकर नवीन

मणीन्द्र (मणिक इन्द्र) आ' मणिपद्म (मणिक पद्म) दूनू शब्द स्थूल रूपसँ समानधर्मा प्रतीत भए रहल अछि। कालान्तरमे, जखन मणीन्द्र नारायण चौधरी, राजकमल बनि गेलाह, मुदा तनखनहुँ मणिपद्म ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' शब्दसँ आकर अर्थ सान्निध्य बनल रहलैक। सम्भवत: इएह कारण हो, जे एक्के टा अङरेजी तारीख 19 जून, मैथिलीक एहि दूनू रत्नकेँ गीरि गेल। 19 जून 1967 (राजकमलक अवसान) आ' 19 जून 1986 (मणिपद्मक अवसान)क दारुण क्षति, जकर कोनहुँ हालतिमे वा कोनहुँ मूल्य पर पूर्ति सम्भव नहि अछि। एहि तारीखक प्रति अपशगुणक धारणा दैत अछि। ओना तँ सम्पूर्ण जून मासे मैथिली साहित्यमे उल्कापतनक मास (जेना, म.म.परमेश्वर झा 30. जून,1924, जनार्दन झा 'जनसीदन' 20 जून,1951, कुलानन्द नन्दन 24 जून, 1980, डा. इलारानी सिंह 19 जून, 1995, आचार्य परमानन्दन शास्त्री 20 जून, 2000, डा. दिनेश कुमार झा 06 जून, 2005, मार्कण्डेय प्रवासी, 13 जून 2010 आदि - सम्पादक) रहल अछि। मैथिली साहित्यक एकसँ एक अनमोल रत्नकेँ ई मास अपहृत करैत गेल अछि।

मैथिलीमे 'नऽव कविता'क पहिचान कोना तय भेल, तकर अलग कथा अछि। मुदा 'मैथिली नऽव कविता'केँ पहिचान दिएबामे राजकमल चौधरीक रचनात्मक भूमिका मैथिली जगत्मे विदित अछि। से राजकमल चौधरी, रामकृष्ण झा 'किसुन'केँ 'मैथिली नऽव कविता'क अग्रज कविक रूपमे स्वीकारैत छथि। हुनकर युगबोधक मादे मणिपद्मक कहब छनि-'किसुन जी पश्चिमक तुच्छ साहित्यक नकल करैक मोह कहिओ नहि कएलनि, यद्यपि ओकर यथार्थताकेँ कहिओ नहि नकारलनि। हुनक युगबोध कागजी नहि छल, अपना जीवनसँ आ' माटि-पानिसँ प्राप्त युगबोध छल।' एहन युगचेता रचनाकार रामकृष्ण झा 'किसुन'क अवसान सेहो जूने (15 जून, 1970)मासमे भेलनि।

कविवर सीताराम झाक स्मरण अबिते सम्पूर्ण चेतना झनझना जाइत अछि। कविवरक मूल्यांकन आधुनिक मैथिली साहित्यमे एहन रचनाकारक रूपमे छनि, जे सृजनात्मक साहित्यकेँ सहज, सुबोध आ' जनसामान्य लेल सुग्राह्य बनेबाक बाटकेँ प्रशस्त कएलनि। कथन-कौशलक सहजता, रचना-शिल्प, विषय-वस्तु एवं भाषा-प्रकार्यक विलक्षण स्वरूप ओ तय कएलनि। हिनक एहि प्रतापे मैथिली साहित्यक टुटैत जनसरोकार बाट पकड़लक। मैथिली साहित्यक परवर्ती कालक कतोक रचनाकारकेँ ओहिसँ प्रेरणा भेटलनि। ओहो सभ एहि प्रक्रियाकेँ आगू बढ़ौलनि। महाकवि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' तँ सदति काल, कविवर सीताराम झाकेँ अपन प्रेरक आ' काव्यगुरु मानैत रहलाह। एहन मातृभाषानुरागी, बोधगम्य साहित्यक रचनाकार कविवर सीताराम झा सेहो जूनहि मास (15 जून 1975)मे दिवंगत भेलाह।

एहि अवसान शृंखलाक पहिल अवघात भेल राजकमल चौधरीक। राजकमल चौधरी, माने परम्परागत संस्कारसँ बान्हल एकटा मैथिल ब्राह्मण परिवारक सन्तान मणीन्द्र नारायण चौधरी जिनकर अबोध हृदय पर उपेक्षा, अनादर, तिरस्कारक चोट निरन्तर पड़ैत रहल। ओ सब किछु सहैत रहलाह आ' अचानक एक दिन परम्पराक समस्त जर्जर बन्हनकेँ तोड़ि नव दृष्टिक मान्यता स्थापित करबामे जुटि गेलाह। सामाजिक -व्यवस्था आ' मानवीय आचरणक दार्शनिक पृष्ठभूमिकेँ देखैत-देखैत ओ ठानि लेने छलाह जे जीवन-विरोधी कोनो आचरण, कोनो व्यवस्था कल्याणकारी आ' ग्राह्य नहि होएबाक चाही। मूल्यहीन आदर्श, जनविरोधी सामाजिक मर्यादाकेँ अविलम्ब त्यागि देबाक संकल्प लेबाक चाही। 'आदिकथा' उपन्यासक पाण्डुलिपि प्रस्तुत करैत ओ धारणा व्यक्त कएलनि, 'जे भस्म करए, आगि लेसने रहए, से आदर्श कोना?, अनुकरणीय कोन तरहेँ? हम सामाजिक मर्यादा पूजा करैत छी, आ' अयथार्थ आदर्शवादिताक घोर विरोध' वस्तुत: मानव-जीवनकेँ जटिल, अव्यवस्थित, एवं दुर्वह बनाबय बाला कोनो मर्यादा पूजनीय नहि होएबाक चाही। मुदा मिथिलाक समाज छल जे यथास्थितिक बाहर निकलबाक लेल स्वयं कोनो तरहेँ उद्यमशील नहि होअए चाहैत छल। सामाजिक पर्यवस्थितिक एहि स्वरूपकेँ देखि हुनका एकमात्र संशोधक बाट साहित्य-सृजन सुझलनि। से, अपन सम्पूर्ण प्रतिभा, आ' समस्त ऊर्जाक संग लेखन-कार्य करय लगलाह। मैथिली साहित्यक ओ दुर्वह काल छल। बारहे-तेरह वर्षक वयसमे हुनकर चेतना एतबा जाग्रत भए गेल छलनि, जे मिथिलाक क्षेत्रीय विडम्बनाक संग-संग भारतीय पराधीनताक दंश हुनकर चेतनालोकमे अंकित होअए लागल छल, स्वाधीनता -आन्दोलनक गतिविधिकेँ गम्भीरतापूर्वक देखए लागल छलाह। मुदा ताहि लेल ओ कोनो संगोर, कोनो ओरिआओन, कोनो दलबन्दी नहि कएलनि। लौहपुरुष जकाँ पुरजोर तन्मयतासँ चौदिश पसरल दावानलमे कूदि पड़लाह। राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आन्दोलनक अगराही एक दिस, मिथिलाक समाज-व्यवस्था, धार्मिक पाखण्ड, जर्जर रूढ़ि, आ' निश्चेष्ट नागरिक मन:स्थिति दोसर दिस, मैथिली साहित्यक जन, समाज, आ' यथार्थ निरपेक्षता तेसर दिस आ' सर्वोपरि हुनकर अपन पारिवरिक रीतिबद्धता, चारिम दिस। एहि तरहेँ चारू भरसँ व्यूहमे घेराएल नि:शस्त्र अभिमन्यु अर्थात् राजकमल चौधरीकेँ एकमात्र कारगर हथियार साहित्य बुझेलनि। फलस्वरूप, विकृतिक एहि विकराल खाधिकेँ डेग-डेगमे

नापि लेबाक लेल उताहुल युग-पुरुष, कालजयी रचनाकार, मनुष्यकेँ कर्त्तव्यबोधक शिक्षा देनिहार सफल शिक्षक राजकमल चौधरीक कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, निबन्धादि हमरालोकनिकेँ उपलब्ध भेल। सरिया केँ देखी, तँ एखनधरि जाहि राजकमलसँ हमरालोकनिक परिचय बनि सकल, से बैनिए रहल छलाह। ओ चला-चलीक बेरमे स्वयं कहि गेलाह-

'हमरा दुख अछि/ कविता हमर काँचे रहि गेल
एहि जारनिसँ उठल कहाँ धधरा।'

धधरा उठेबाक एहि प्रवृत्तिमे चारूक चारू रचनाकार एक रंग छलाह। जेहने सीताराम झा, तेहने किसुन, तेहने मणिपद्म, आ' तेहने राजकमल।

मैथिली साहित्यक लेल तँ राजकमल (मणीन्द्र) चौधरी वस्तुत: एहन 'मणि' साबित भेलाह, जिनकर संस्पर्शसँ मैथिली कविता लोहासँ सोना भेल, आ' मणिपद्मक संस्पर्शसँ लोक-साहित्य उपेक्षितसँ अपेक्षित। दूनू गोटए मैथिली साहित्यक अलग-अलग विधाक नवोन्नायक भेलाह। अल्पावधियहिमे राजकमल चौधरी मैथिली साहित्यकेँ जतबा दए सकलाह, ताहिसँ सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे जँ ओ थोड़ दिन आओर जीबितथि तँ की-की ने आओर दितथि? मैथिली कविताकेँ रूढ़ि आ' रीतिबद्धताक जाहि बज्रालिंगनसँ राजकमल चौधरी मुक्त करौलनि, तकर प्रेरणादायक ओ रामकृष्ण झा 'किसुन'केँ मानैत छलाह। मुदा, ई प्रमाणित तथ्य थिक जे हुनकर एहि अपरिमेय सफलताक श्रेय हुनकर दारुण साहस, प्रचण्ड विद्रोही स्वभाव, विलक्षण जीवन-दृष्टि, परिपक्व अनुभूतिकेँ जाइत अछि। 'तथाकथित परम्परावादीक प्रति' कवितामे ओ साफ-साफ कहलनि अछि-

'जँ युगसँ पाछू रहब, विश्व मृतक अहाँकेँ जानि लेत
नवतुरिया-समाजकेँ हाँकि सकत नहि एक्को छन
स्वर्गस्थ पितामहक ओ टूटल फराठी।'

सभ केओ जनैत अछि जे समकालीन समाजक यथार्थक चित्रण साहित्यक मुख्य चिन्ता होइत अछि। बीसम शताब्दीक प्रारम्भिके समयसँ एहि चिन्ता पर विशेष जोर पड़ैत आएल अछि। यथार्थक विविध रूपक उद्घाटन साहित्यक विविधि विधामे होइत रहल अछि। मुदा, राजकमल चौधरी अनुभूत यथार्थकेँ जाहि अर्थमे ग्रहण करै छथि, से हुनकर कवितामे एना व्यक्त भेल अछि-

'आब अस्तित्वक अविचल यथार्थ दुइए टा अछि
प्रथम ई जे हम सभ ताकि रहल छी
किरणमाला/ दोसर एतबे जे अतीत-प्रेतक अनिवार्य संगतिमे,
महावनमे/ जीवित छी हम सभ!'

जिनगीक एहि अन्हार कुप्प बाटकेँ ज्योतित करए लेल किरणमालाक अनुसन्धान अर्थात् मानवीय मूल्यक खोजमे हमरालोकनि लागल छी, समाजमे जीबितहुँ महावनमे जीबि रहल छी। राजकमल चौधरी एही किरणमालाक खोज साढ़े सैंतीस वर्षक उम्र धरि करैत रहलाह। कोनो निष्कर्ष धरि जाएब एखन बाँकिए रहनि, आ कि कालपुरुष उठा लेलथिन।

सुपौलक एकटा मध्यवर्गीय मैथिल ब्राह्मण परिवारमे एक जनवरी उनैस सए तैस ईस्वीकेँ रामकृष्ण झा 'किसुन'क जन्म भेल छलनि। सरकारी स्तरसँ ओ कोनो उच्च शिक्षा तँ नहि प्राप्त कए सकल छलाह, मुदा स्वाध्यायक बलेँ ज्ञानोपार्जन करैत जे गरिमा प्राप्त कएलनि, से असाधारण छल। अल्प वयसमे दायित्वक पहाड़ माथ पर आबि गेलनि। मुदा कतहु अपन कान्ह नहि छिपलनि, सभठाम संघर्षरत रहलाह, संघर्ष हुनकर मूल प्रवृत्ति मानल जाइत छल। हिन्दी, मैथिली- दूनू भाषामे ओ दृष्टि सम्पन्न, प्रखर प्रतिभाशाली क्रान्तिकारी रचनाकारक रूपमे मान्य छलाह। सन् 1939 मे 'बालक' (हिन्दी मासिक)मे हुनकर पहिल हिन्दी कविता 'कौन है वह' तथा सन् 1945मे 'मिथिला मिहिर'मे पहिल मैथिली कविता 'शिशुसँ' प्रकाशित भेल। निर्णयात्मक रूपसँ हुनकर मुख्य विधा तय करब कठिन अछि। कथा, कविता, निबन्ध, एकांकी, पत्रकारिता सभ विधामे हुनकर लेखन बहुत पैघ अन्तराल धरि अनुप्राणित होअए चाहैत छल, मुदा से भए नहि सकल। एते धरि अनिश्चित अछि जे जीवन पर्यन्त सभ क्षेत्रमे समान अधिकारसँ लिखैत रहलाह। राँचीसँ प्रकाशित कथा-संग्रह 'प्रचोदयात्'क भूमिकामे सेहो हुनकर विलक्षण कौशल परिलक्षित अछि। कोनो शब्द पर कते तरहसँ विचार कएल जाए सकैछ, तकर अपूर्व उदाहरण थिक ई भूमिका। 'प्रचोदयात्'क पाँचो अक्षर पर विचार करैत, जाहि रूपमे ओ लिखल गेल अछि, से हुनकर गहन शास्त्रीय अध्ययनक झाँकी प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली 'नऽव कविता'क पुरोधा कवि राजकमल चौधरी सेहो हुनका नऽव कविताक अग्रज कहने छथि, आ' ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' प्रकाशित अपन निबन्धमे हुनकर प्रशंसा करैत लिखलनि--'तोहर सदृश एक तोहेँ माधव मन होइछ अनुमाने'।

लयाश्रित-छन्दाश्रित गीतक अनुशीलनसँ एक दिश ओ सम्पूर्ण गीताकार देखाइ छथि, तँ दोसर दिश नऽव कवितामे यथार्थ-बोध नूतन भावक परिपूर्ण कवि। हुनकर सम्पूर्ण रचना-परिदृश्य जनसरोकारक अनुराग, माटि पानिक सुगन्धि, मानवीय परिवेश, कोमल आ' उत्कृष्ट कल्पनाशीलतासँ भरल छनि। युगीन समस्याक कोनो अंश हुनकर तीक्ष्ण दृष्टिसँ उपेक्षित नहि रहि सकल अछि। उर्ध्वगामी पीढ़ीक प्रति ओ सर्वदा अपन उदार हृदय पसारने रहलाह। भखरैत सामान्तशाहीक जर्जरता पर मुदित होइत रहलाह--

'बँध गई है आज मुट्ठी हड्डियों की
जो पड़ेगी, और अब भी पर रही है
खून के चसके हुए वे दाँत उनके टूटते ही जा रहे हैं।'

अदौसँ प्रताड़ित सामान्य जनताक दु:ख दर्दकेँ अपन निजी व्यथा बुझनिहार किसुनकेँ एहि शोषणक प्रति अकुलाहटि आ' औनाहटि सर्वदा रहलनि। मुदा एहिसँ ओ विवश नहि भेलाह, अपितु शोषक वर्ग केँ ढाहि-ढनमना केँ एकबट कए देबए चाहैत छलाह--

'हम देख' चाहै छी
अहाँक नग्न प्लास्टिक पिरामिड रूप
जे चाटुकार इतिहास द्वारा बलात् हमर पीढ़ीक माथ पर
लादि देल गेल अछि।'

मुदा मैथिली साहित्यकेँ एहि तरहेँ सबल-सफल रचनासँ पूरित होएब बेसी दिन धरि नहि लिखल छलैक। राजकमल चौधरीक देहावसानक लगभग तीन वर्षक बाद दोसर कुठाराघात भेल एवं पन्द्रह जून उनैस सए सत्तरिकेँ चौदह दिन, पाँच मास एवं सैंतालिस वर्षक हमरा लोकनिक योद्धा रामकृष्ण झा 'किसुन'केँ गीरि लेल।

एहि दारुण व्यथाकेँ बिसरबाक चेष्टा मैथिली-प्रेमी एखन कए रहल छल, कि अगिला प्रहार आबि तुलाएल पन्द्रह जून उनैस सए पचहत्तरिकेँ मातृभाषा मैथिलीक प्रतिबद्ध सिपाही, हिन्दी, संस्कृत, मैथिलीक निष्णात विद्वान कविवर सीताराम झाक देहावसान भए गेल। ऊर्ध्व चेतनाक संग सीताराम झा सदैव समकालीन विषय-बोधक कविता सहज आ' जनपदीय भाषामे लिखैत रहलाह। कहबामे कोनो उजूर नहि होएबाक चाही जे निरन्तर वर्गीय आ' जननिरपेक्ष होइत चल जाइत मैथिली कविताकेँ जनोन्मुख बनेबामे ओ अग्रगण्य भूमिकाक निर्वाह कएलनि। संस्कृतक दुर्धर्ष विद्वान रहितहु 'अम्बचरित' महाकाव्यक अतिरिक्त समस्त कवितामे लोक-प्रचलित शब्दावलीक प्रयोग कएलनि, आ' कविताकेँ बोधगम्य बनौलनि, लोकोक्ति जकाँ हुनकर कविता सामान्य नागरिकक जीह पर अविकल अंकित रहैत अछि। मैथिली काव्यकेँ पण्डिताम भाषा आ' रजनी-सजनीक विषयसँ मुक्ति दिआ केँ नूतन भाषा-रूप आ' समकालीन भावबोधक चलन स्थापित कराएब हुनकर विराट योगदान थिक। मातृभाषाक उपेक्षा कएनिहार लेल ओ क्रोधित होइत लिखै छथि--

'पढ़ि-लिखि जे ने बजैछ हा! निज मातृभाषा मैथिली।
मोन ह्वैछ झुटकीसँ तकर कान दूनू ऐंठि ली।।
एहना कुपूतक जीह छाउर लेपि सट दै खैंचि ली।
पर खेद जे अधिकार ई हमरा ने देलन्हि मैथिली।।'

सीताराम झा द्वारा चलाओल एहि भाषायी क्रान्तिक प्रभाव तेना भए केँ पड़ल जे समस्त परवर्ती साहित्यकार एहिसँ प्रभावित भेलाह।

मुदा जून मास तैओ निश्चन्त नहि भेल। उनैस सए छियासीक उनैस जून फेर एकटा झमटगर गाछकेँ उखाड़ि देलक। साहित्यक समस्त विधामे रचनाशील ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क देहावसानसँ वस्तुतः मैथिली साहित्यकेँ अपूरणीय क्षति भेलैक। लोक साहित्य तँ ठामक ठामहि थुसकुरिआ मारि देलक। मैथिली लोक साहित्यक अस्तित्व हिनकासँ पूर्व करीब-करीब लोक कण्ठहिमे निवास करैत आबि रहल छल, बहुत सम्भव जे ओ ओहिना रहि जइतए, जँ मणिपद्मक कान्ह नहि लगितैक ।

आम नागरिकक जीवन-व्यवस्थाक भरिसके कोनो एहन विषय अथवा बिन्दु हो, जे हुनकर विपुल रचना-संसारक परिधिसँ बाहर रहि गेल हो। *कौसर*, आ' *चिरैनगन्ध* सन हुनकर किछु प्रसिद्ध कविता बेस चर्चित अछि। प्रसिद्ध तन्त्रसाधक,फल चिकित्सक, निष्णात भाषणकर्त्ता, प्रबल मातृभाषासेवी मणिपद्म वस्तुतः मैथिली साहित्यक मणि छलाह। दहेज दंशसँ भयभीत समाजक मनोदशाकेँ ओ बहुत निकटसँ देखने छलाह। दहेज-समस्या पर केन्द्रित हुनकर नाटक 'तेसर कनियाँ' एकटा नव बाट फरीछ करैत अछि। मणिपद्मक रचनाशीलतामे ई विलक्षण बात अछि जे ओ समाजक दुर्व्यवस्था, कुरीति आदि देखा केँ नहि रहि गेलाह,ओकर मूल तकलनि आ' निदानक बाट देखौलनि। साहित्य अकादेमी सहित कतेको सम्मानसँ सम्मानित एहि मनीषीकेँ विद्यापतिक वर्षीक नामपर जतएसँ विद्यापति अछूत जकाँ अनुपस्थित रहै छथि, भोज आ' नाच-गान आयोजित कएनिहार संस्था दिशसँ जहिना कविता पढ़बा लेल अथवा भाषण देबा लेल आमन्त्रण भेटैत छलनि, आ' ई जनतब होइ छलनि जे आयोजक लोकनिं, मंचक नटक-चटकमे फिजूल खर्च नहि कए केँ एकटा नव पोथी प्रकाशित कए रहल अछि, ओ गद्‌गद् भए जाइत छलाह।

एहन विराट योद्धा लोकनिक विराट महात्म्य कोनो एक निबन्धमे अंकित करब सम्भव नहि अछि। मुदा एतबा अवश्य कहबाक अछि जे एहि चारू योद्धाक अवसानक मास जून थिक, से जून मास बड़ भारी बुझाइत रहैत अछि।

सम्पर्कः
मो. 09868110994
ए-2/198, फेज-5, आयानगर एक्सटेंशन,
नई दिल्ली 110047
अनुवाद, अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इन्दिरागाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदानगढ़ी,
नईदिल्ली-110068
deoshankar@hotmail.com



मिथिला भवन, राजेन्द्र नगर, पटना

मिथिलाक कला संस्कृतिक विकास आ' प्रचार-प्रसार हेतु राजेन्द्रनगर, पटनामे निर्माणाधीन चारि महला मिथिला भवन लेल समाजक उदारमना महानुभावक आर्थिक सहयोग प्रार्थित अछि।

चेतना समितिक निर्णय अछि जे पाँच हजार वा ओहिसँ अधिक राशिक दाताक नाम शिलापट्ट पर अंकित कएल जाएत तथा कक्ष वा तलक निर्माणक हेतु प्राप्त दानक अनुरूप ओकर नामकरण, दाताक परामर्श पर होएत।

- विवेकानन्द ठाकुर, सचिव, चेतना समिति

अप्रकाशित/अमंचित नाटक चाही

चेतना समिति विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक अवसर पर प्रतिवर्ष अप्रकाशित अमंचित मौलिक मैथिली नाटकक मंचन कए प्रकाशित करैत आएल अछि। एहिक्रममे मैथिलीक सब तूरक नाटककारसँ अनुरोध जे आगामी विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक अवसर पर मंचन हेतु अपन अप्रकाशित अमंचित मौलिक नाटक 31 अगस्त, 2011 धरि उपलब्ध कराए मैथिली रंगमंचक आ' नाट्य साहित्यक अभिवृद्धि लेल कएल जाइत समितिक प्रयासमे सहयोग करथि।

- विवेकानन्द ठाकुर, सचिव, चेतना समिति

पुण्यतिथि, 11 अप्रैल

खिलखिलाइत हंसराज

✍ चन्द्रेश

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध साहित्यकार हंसराजक पार्थिव शरीर यद्यपि पंचतत्वमे विलीन(28.10.1938-11.04.2005) भए गेलनि, परंच, अपन कलात्मक लेखनी एवं रंग-विरंगक रोचक गप्पक लेल ओ स्मरणीय छथि। साँझक बैसकीमे ओ रंग-बिरंगक गप्प की कहैत छलाह, कहबाक कलामे साहित्य रचैत छलाह। एहिठाम हुनका द्वारा कहल गेल दू टा गप्प प्रस्तुत करैत छी।

ई ओहि समयक गप्प थिक जखन 'मिथिला मिहिर'मे उप सम्पादक छलाह। पटना-गामक अबरजात रहनि। एक खेप गामसँ पटना जाइत छलाह। दरभंगासँ ट्रेन चढ़ि पहलेजाघाट। पहलेजाघाटसँ महेन्द्रूघाट लेल जहाज, फेर विभवक अनुसार सवारी लए पटना डेरा। ट्रेनसँ उतरि जहाज पकड़ब एक दुरूह काज होइत छलैक। तेँ पहलेजा माने होत छल 'पहले जा' अर्थात् पहिने जाउ तखने जहार पर सीट पाउ। सभ बेर ओ जहाज पर चढ़बासँ पहिने लघुशंकासँ निवृत्त भए जाइत छलाह। से एहू बेर धड़फड़ाए बैसले छलाह कि पाछूसँ ककरहु हाक कानमे पड़लनि। पहिने आहे माहे फेर उपरागक मुद्रामे ओ व्यक्ति कहलथिन जे हुनक रचना 'मिहिर'मे नहि छपैत छनि। ओ काल्हि फेर एकटा रचना पठौलनि अछि। हंसराज जीकेँ जहाज पकड़बाक धड़फड़ी छलनि। मुदा, ओहि व्यक्तिकेँ अपन रचना छपेबाक। जेना तेना हंसराज जी हुनकासँ पिण्ड छोड़बैत जहाज पर चढ़लाह। पैर कतए रोपताह, तिल भरि जगह नहि। मोन तुरुछि गेलनि। मोने मोन बुदबुदेलाह, एहन चालिमे रचना कोना छपत। तामस मगज ठेकि गेल छलनि। मुदा, उपाय कोन छलैक? ठाढ़े ठाढ़ जाए पड़तनि। ता' एकटा उपाय सूझलनि। ओ डेक पर बैसल एकटा व्यक्ति लग जाए ठाढ़ भए गेलाह। अखियासलनि। लाटफारम पर ककरोसँ गप्प करैत सुनने छलथिन। हुनकासँ कहलथिन, 'यौ महाशय! बरजू बाबू अहीं छी ? ओमहर केओ हाक दैत छथि।' ओ व्यक्ति धड़फड़ाएल विदा भए गेलाह। हंसराज जी चट जगह दफानि लेलनि। किछुए कालक बाद ओ व्यक्ति आबि कहलथिन- उठू, हमर जगहपरसँ।'

– हम तँ खाली जगह पर बैसलहुँ अछि।

– नहि, किछुए काल पहिने हम बैसल रही।

– वाह! अहाँ आइ बैसल रही। हम कैक दिनसँ एही जगह पर बैसि कें अबैत-जाइत छी। तखन अहीं कहू जे ई हमर सीट भेल कि नहि?

– हे! हमरा देहाती जुनि बुझू।

आँखि लाल टरेस करैत तमतमाइत हंसराज जी बजलाह–'तँ की कए लेब। हमहूँ गर्दनीबागमे रहैत छी आ' गरदनियाँ पासपोर्ट ऑफिसमे काज करैत छी।

नहि रहल गेलनि बगलगीरकेँ ओ अपन मुह खोललनि आ' ओहि व्यक्तिसँ कहलथिन, 'जखन अहाँ जगह छोड़ि कें चल गेलहुँ तखन अनेरेक गलथोथड़ी करैत छी? जाउ कतहु झोड़ा राखि कें बैसि रहब। ई तँ खाली जग देखि बैसल छथि।' ओ मुह लटकौने चल गेलाह। हंसराज फक् दऽ निसांस छोड़ैत बजलाह–'अवस्था देखि कें व्यवस्था करए पड़ैत छैक।'

हंसराजक हृदयमे गंगाक प्रति अगाध श्रद्धा-भाव रहनि। तें ओ एहन कोनो काज नहि करैत छलाह आ' ने चाहैत छलाह जे आने केओ एहन आचरण करथि जाहिसँ गंगाक पवित्रता मलिन होइत होनि। से जखन जहाजसँ अबैत काल अपन एक सहयात्रीक हाओ-भाओ देखि किछु शंका भेलनि तँ दोसर सहयात्रीकेँ अपन झोरा देखैत रहबाक भार सौंपि जहाजक शौचालयमे घुसि भीतरसँ बन्द कए लेलनि। ओ व्यक्ति शौचालयक दरबाजापर अहर-पहर तकैत रहलाह। मुदा, हंसराजजी बहरेबाक नामे नहि लेथि। जखन महेन्द्रूघाट पहुँबाक भोंपू जहाज बजौलक तँ हंसराज जी निकललाह। सहयात्री पुछलथिन–'एती काल किएक लागल?'

हंसराज जी झंट उत्तर देलथिन– ई श्रीमान् गंगाजीकें वाह्यभूमि बूझि लेने छलाह, तें? आब बाहरमे जे करथि।'

सम्पर्क :
मो.09430640883
मनमीत कुटी,राजपूत कॉलोनी, मौलागंज,दरभंगा-846004

पावनि-तिहार

रामनवमी	12 अप्रैल, 2011	महावीर जयन्ती	16 अप्रैल	जानकी नवमी	11 मई
मेषसंक्रान्ति	14 अप्रैल	अक्षय तृतीया	06 मई	बुद्ध जयन्ती	17 मई
नव वर्षारम्भ (शकाब्द 1933)	14 अप्रैल	परशुराम जयन्ती	06 मई	बटसावित्री	01 जून
जुड़िशीतल	15 अप्रैल			गंगा दशहरा	11 जून

संस्मरण

ई लोक : ओ लोक

डा. प्रेममोहन मिश्र

अपना बुझना गेल जे मिथिला यूनिभरसिटी परमोशन-तरमोशन नहि देमए जाए रहल अछि। तँ कतहु बाहरेक रस्ता नापी। एही बीच इन्द्रप्रस्थ यूनिभरसिटी रीडर पदक हेतु विज्ञापन कएलक। हम इन्टर नेटसँ आवेदनक परफोरमा ऊपर कएलहुँ। एकटा अगौती कॉपी सोझे डाकसँ पठा देलिऐक आ' दोसर कॉपी विश्वविद्यालयकेँ अग्रसारित करबाक हेतु कालेजमे जमा कएहुँ। लगभग तीन मासक बाद इन्द्रप्रस्थ यूनिभरसिटीसँ साक्षात्कारक हेतु दिल्ली बजाओल गेल। ओ लिखलक जे आवेदन-पत्र उचित माध्यमसँ नहि आएल अछि,अतएव अपन नियोजकसँ अनापत्ति प्रमाण पत्र अवश्य लेने आबी। हमरा ई पत्र शुक्र दिन भेटल। पत्र प्राप्तिक पन्द्रहम दिन, सोमकेँ हमरा साक्षात्कारक हेतु दिल्ली पहुँचबाक छल। दुर्योग एहन जे शनिसँ बुध धरि कालेजमे छुट्टी छलैक। आतुरतावश हम अपन प्रधानाचार्य डा.आर.के.मिश्रजीक दूरभाषक नम्बर डायल कएलहुँ। श्रीमान् अपने फोन उठौलनि। मधुर स्वरेँ-'हेलो! कौन बोल रहे हैं?'-पुछलनि। मन पुलकित भए गेल। आ' बड़ उत्साहित भए कहलिअनि-'श्रीमान् प्रणाम,. हम प्रेममोहन बाजि रहल छी, अपनेक कालेजमे रसायन शास्त्र विभागमे छी।' ओ कने गम्भीर भए गेलाह आ' बाजि उठलाह-'हाँ, प्रेममोहन जी! कहिये क्यों फोन किये हैं?' हम हुलसैत कहलिअनि-'श्रीमान् हमरा इन्द्रप्रस्थ यूनिभरसिटीसँ इन्टरभ्यू लेटर आएल अछि। जाहिमे अनापत्ति प्रमाण-पत्र अनबाक निर्देश अछि। करीब तीन मास पहिने हम अपन आवेदन-पत्र कालेजमे जमा कएने छी, सम्भवत: विश्वविद्यालय अग्रसारित नहि भए सकलैक अछि। ओकर कॉपी हमरा लग अछि। से यदि अपने अग्रसारित कए दितहुँ तँ हम विश्वविद्यालयसँ एन.ओ.सी. लेबाक प्रयास करितियैक।' प्रिन्सिपल साहेब आर कने रुक्ख भए गेलाह आ' कहलनि-'अभी तो कालेज बन्द है, अभी हम कैसे फॉरवार्ड कर सकते हैं? कालेज खुलने दीजिए, एप्लिकेशन आफिसमे दीजिएगा, मेरे पास भेरीफाइ हो के आएगा, हम अवश्य फॉरवार्ड कर देंगे।'

हम कने कातर होइत निवेदन कएलिअनि-'श्रीमान् कालेज तँ तीन-चारि दिन बन्द छैक, फेर हमरा यूनिभरसिटीओमे किछु समय लागि जाएत। जँ अपने आदेश करी तँ हम अपन आवेदन लए कँ अपनेक डेरा पर चलि अबितहुँ आ' अपनेसँ अग्रसारण करबाए विश्वविद्यालयमे जमा कए दितिऐक?' ओमहरसँ तमसाएल सन आवाज आएल-'टीचर होकर कैसे मूर्खो जैसी बातें करते हैं? जबतक आफिस भेरीफाइ नहीं करेगा तब तक हम कैसे फारवार्ड कर देंगे। सभी काम का एक तरीका होता है न?'-ई कहैत ओ फोन काटि देलनि। ई सुनितहि हमर उत्साह पर नओ मोन पानि पड़ि गेल। मन मसोसिकँ रहि गेलहुँ। अकस्मात रवि दिन जेना फेरसँ मोनमे एकटा नव उमंग संचरित होअए लागल। कुलपतिक नामे फेरसँ एकटा आवेदन-पत्र लिखलहुँ आ' पहुँचि गेलहुँ लहेरियासराय। दरभंगा कमिश्नरीक आयुक्त अमिता पॉल कुलपतिक प्रभारमे छलीह। आ' ओ सोम दिनकेँ जनता दरबार लगाबथि। हम ओही दरबारमे अपन आवेदन जमा कए देलिऐक। आ' बाहरमे ओसारापर बहुत फरिआदीक संग बैसि गेलहुँ। मोनमे रंग-विरंगक बात आबय लागल। बेसी काल खराबे बातक शंका छल। आर.के. बाबूक मोन पड़य तँ सोचय लागी जे अमिता पॉल कड़गर आइ.ए.एस. छथि, एहि माटिपानिक सेहो नहि छथि, आवेदन-पत्र प्रधानाचार्यसँ अग्रसारितो नहि अछि आ' ई विश्वविद्यालय कार्यालय सेहो नहि छैक, भए सकैछ आइ नीक जकाँ हमरा डाँट पड़ि जाए। मोन कहय लागल, बेकार एतेक परिश्रम कएलहुँ। आइ भरल सभामे हमर बेइज्जती निश्चिते अछि....आदि आदि। एही गुनधुनमे छलहुँ कि आयुक्तक अरदली आवाज देलक-'प्रेममोहन मिश्रा अन्दर आइये।' डरे छातीक धकधकी बढ़ि गेल। डेराइते भीतर गेलहुँ। पूब मुहेँ आयुक्त महोदया बैसल छलीह। चेहरासँ रोबदार चमक निकलि रहल छलनि। सामने करीब पचास-साठि टा अधिकारी राजसभाक सभासद जकाँ बैसल छलाह। आवेदन हाथमे लेलनि आ' उपेक्षा भावेँ बाजि उठलीह- 'अच्छा! आप दिल्ली इन्टरभ्यू देने जाएंगे?' हम कने हिम्मत कएलहुँ आ' कहलिअनि-'मैडम! कॉल लेटर आया है तो इन्टरभ्यू दे देना चाहता हूँ।' ओ हमर चेहरा दिस तकलनि। हम कने सहमि गेलहुँ। ओ पुछलनि- 'आपका बायोडाटा कहाँ है?' सुखद संयोग छल जे हम अपन बायोडाटा संगे लए गेल रही। चट पेंटक जेबीसँ निकालि हुनका आगूमे बढ़ा देलिअनि। ओ हमर पचपेजी टंकित बायोडाटाकेँ बहुत ध्यानसँ पढ़लनि आ' हमरा दिस बड़ आदरयुक्त दृष्टिसँ तकैत कहलनि-'ठीक है।' आवेदन -पत्रपर अङरेजीमे अर्जेन्ट लिखि ओही सभामे बैसल भू-सम्पदा अधिकारीकेँ बजा कँ आदेश देलखिन -'हरि बाबू तीन दिनमे इनको एन.ओ.सी.मिल जाना चाहिये। इनको दिल्लीमे इन्टरभ्यू देना है।' ई सुनि हम गद-गद भए गेल छलहुँ। हृदयसँ प्रणाम करैत उल्लसित मने डेरा आबि गेलहुँ। हमरा देखितहि गृहिणीकेँ बुझबा योग्य भए गेलनि जे हमर काज भए गेल अछि। ओ हमर दिल्ली जएबाक तैआरीमे लागि गेलीह। हमहूँ अपन कागज-पत्तर सरिआबए लगलहुँ। कखनो काल किताबो उनटा लेल करी। प्रतीक्षा छल, तीन दिन बीतल कि चारिम दिन हमरा एन.ओ.सी भेटि जाएत। अमिता पॉलक बड़ नाम रहैक। लगैत छल जे पूरा विश्वविद्यालय हुनका डरेँ थरथरा रहल अछि। कोनो शिक्षक-नेता, कर्मचारी-नेता वा विश्वविद्यालयक अधिकारीक मजाल नहि छल जे

हुनका विरोधमे बाजि सकितय। तँ हम निश्चिन्त रही जे आब हमर काज तँ भेले अछि। कहुना तीन दिन बितलै, चारिम दिन वृहस्पतिकेँ हम पहुँचि गेलहुँ रजिस्ट्रारक आफिस। प्रभारी रजिस्ट्रार डा. गौड़ीशंकर राय पूर्व परिचित रहथि। ओ अपन कार्यालयमे बैसल आ' तीन कातसँ बहुत रास लोक सब हुनक टेबुलकेँ घेरने बैसल छल। हम कनेक काल चुप्प-चाप ठाढ़ रहि प्रतीक्षा करैत रही जे हुनकर ध्यान हमरापर पड़तनि आ' चट् दए पत्र निकालि कें देताह आ' हम हँसैत हुनका धन्यवाद दैत पत्र लए कें जाएब। मुदा हम बहुत काल धरि धैर्य नहि राखि सकलहुँ। हुनकर ध्यान भंग करैत कहलिअनि-'प्रणाम सर! हमर एकटा एन.ओ. सी. बनल होएतैक। से कतय भेटत?' ललाट पर थाकनि, लेकिन चेहरा पर स्वभाविक मुस्कान छोड़ैत बजलाह, 'हँ, आएल तँ छल आवेदन, कतय अछि?' मोनमे भेल, आफिसक मालिक अहाँ आ' पुछैत छथि हमरासँ। तथापि हम कहलिअनि -'हमरा तँ बुझल नहि अछि, कुलपति महोदया हरिबाबूकेँ हाथमे देने छलखिन। आ' कहने छलखिन,'तीन दिन में इनको मिल जाना चाहिये।' तँ चारिम दिन हम आएल छी। ओ अपन मुस्कानक तीव्रताकेँ बढ़बैत कहलनि, एना काज होइत छै यूनिभरसिटीमे? आवेदन पर लागए पड़ैत छै। जाउ, देखियौ कतय अछि।' हमर मोनक उमंग सरंगसँ पताली भए गेल। ओहि कोठलीसँ निकलि बाहर भेलहुँ। आब कतय जाएब? सोलह बरखसँ नौकरी करैत छी लेकिन विश्वविद्यालय कार्यालयक कोनो ज्ञान नहि अछि। आब ककरा पुछबैक! पुछारी करैत-करैत पता लागल जे हमरा कालेजक फाइल जीबछ बाबू डील करैत छथि आ' ओ आइ आफिस नहि आएल छथि। ओ कहिआ अओताह से निश्चित भए कहब असम्भव। हम हताश भए बाहर निकललहुँ आ' जीरो रन पर आउट भेल क्रिकेटक खेलाड़ी जकाँ मुह लटकओने बिदा भए गेलहुँ। बुझबामे नहि अबैत छल जे हमर भाग्य खराब अछि कि एहिठामक व्यवस्था? एही चिन्तामे उगडुग करैत हमर डेग डेरा दिस बढ़ल जाए रहल छल कि काली बाबूक नजरि हमरा पर पड़लनि। अपन चिर-परिचित अन्दाजमे बड़े आह्लादसँ कुशल-क्षेम पुछलनि। आ' कहलनि जे चेहरा किछु उदास बुझना जाइत अछि, किछु खास बात छै की? कोनो परेशानी हो तँ कहल जाओ, हमरासँ कोनो सहायता भए सकत तँ अवश्य करब। हम हुनका आजुक पूरा घटना सुना देलिअनि। ओ हमर बात सुनलनि। किछु काल चुप रहलाह। आ' फेर उत्साहित होइत कहलनि, चलू हमरा संगे। जीबछ झा कबिलपुरक थिकाह। हुनका गामसँ पकड़ि अनैत छी। ओ अहाँक फाइल निकालि देताह आ' फेर चल जएताह। हमर अभिलाषा फेर हिलोर मारलक। हम हुनक मोटर साइकिल पर पाछूमे बैसि जीबछ बाबूक गाम पर पहुँचि गेलहुँ।

जीबछ बाबू बेस सामाजिक लोक छथि। आइ हुनकर गाममे कोनो बचियाक विवाह छलैक। एही हेतु आइ ओ कार्यालय नहि गेल छथि। हुनक दरबाजा पर ज्ञात भेल जे ओ काजक अङना दिस गेल छथि। काली बाबूक आग्रह पर एकटा युवक हुनका हमरा सबहक आगमनक सूचना देबाक हेतु काजक अङना दौगल। आध घंटाक बाद जीबछ बाबू अपना दलान पर अएलाह। बड़ा आदर-भावक संग ओ काली बाबूक अभिवादन कएलनि। दूनू गोटेमे सामान्य शिष्टाचारक आदान-प्रदान भेलनि। तकरा बाद काली बाबू हमर परिचय करौलनि। हमर प्रशंसामे खूब सुन्दर-सुन्दर शब्द-जाल बिनलनि। आ' तकरा बाद प्रयोजनक सेहो बखान कए देलनि। जीबछ बाबू एक बेर जोरसँ सांस छोड़लनि आ' कहलथिन, काली बाबू! हम सभटा बात बुझलहुँ। मुदा हम आइ आफिस नहि जाएब। काली बाबू अनुनय कएल। अपने मोटर-साइकिलसँ चलल जाओ। खाली फाइल निकालि देबै आ' हम एही मोटर साइकिलसँ गाम पर पहुँचा देब। एक घंटासँ बेसी नहि लागत। बरिआती साँझमे ने आओत, ताबत अपने एतहि रहब। ओ अपन असमर्थता देखबैत कहलनि, काल्हि आफिस आउ, काली बाबू आएल छथि तँ हम जरूर मदति करब। ओ हमरा दिश ताकि कहलनि, खाली विद्वाने भेने काज नहि होइत छैक। दरश-परश कहिओ नहि दैत छियै तँ काज कोना होएत? लेकिन जाउ, काल्हि अहाँक फाइल हम बढ़ा देब।'

हम अनुभव कएलहुँ, काली बाबू असमंजसक अवस्थामे पड़ि गेल छथि। हम हुनका बोल-भरोसक भाषामे कहलिअनि, अपने तँ बड़ प्रयास कएलिऐक, आब हमर काज भइए जाएत। आब अपने सब चली।' ओहो मौनं स्वीकृति लक्षणम् दैत बिदा भए गेलाह। भरि रास्ता दूनू गोटे चुप्पेचाप रही।

शुक्र दिन लगभग बारह बजे हम पुनः विश्वविद्यालय कार्यालय पहुचलहुँ। सोझे जीबछ बाबूक टेबुल लग जा कें ठाढ़ भए गेलहुँ। ठाढ़ होइते ओ झपटि पड़लाह, 'कतेक लेट कए देलिऐ, हम एक दिनमे दू टा फाइल मात्र देखै छिऐ, से आजुक कोटा पूरा भए गेल अछि। काल्हि आउ।' हम अनुनय विनय करैत कहलिअनि, 'आब समय बड़ कम छैक कोना होएतैक हमर काज? ओ मुह बिजकबैत कहलनि- 'से तँ अहाँ ने जानब, जे काज कोना होएत? एतेक चिन्ता छल तँ सबेरे ने आएल रहितहुँ? आइ हम अहींक काजक हेतु आफिस आएल छी, लेकिन अहाँ अपने नहि अएलिऐक तँ हम की करू? अहाँक दुआरे हम अपन प्रतिज्ञा कोना तोड़ि लिअ?'

शनि दिन हम सकाले तैआर भए ठीक साढ़े दस बजे विश्वविद्यालय पहुँचि गेलहुँ। छाती कने बेसिए तना गेल छल जे आइ तँ हम एकदम समय पर आएल छी। गेटे पर चेहरा-मोहरासँ चपरासी सन ठाढ़ आदमी अपन धियापूता जकाँ दबारैत बाजल-'कोने काम धन्धा नहीं है,भोरे सूत के उठे आ' चल दिये यूनीभरसिटी? अभी कोई नहीं आया है। एक घंटा के बाद आफिस के टाइम पर आयेगा।' अपन सन मुह भेल। ओकरा दिश बिनु तकने हम बरंडा पर टहलए लगलहुँ। ओ चपरासी फेर हुंकार मारलक। 'ई कोनो मन्दिर है जे परिकिरमा कर रहे हैं। आपही जैसे लोग के कारण इहाँ कोनो काम नहीं होता है। हरदम बाबू के माथ पर चढ़ले रहते हैं।' हम कने कात हटि गेलहुँ आ' बाहरसँ अबैत जाइत लोक दिश ताकय लगलहुँ। ओहि चपरासीक कहल समय पर बाबू लोकनि आफिस आबि गेलाह। हमहुँ जीबछ बाबूक टेबुलक आगूमे ठाढ़ भए गेलहुँ। ओ कहलनि, 'आइ ठीक समय पर आएल छी, एकटा कुर्सी बगलसँ खींचि लीअ आ' बैसू। हम फाइल निकालि दैत छी, हुनकर आज्ञाक अनुसार हम एक टा कुर्सी लए बैसि गेलहुँ। ओ कने काल सुस्तेला फेर

आफिसक आन-आन मुलाजिम सभसँ हालचल पुछलनि आ' तकरा बाद आलमारीसँ हमर फाइल निकाललनि। फाइल कँ देखैत-देखैत हुनकर चेहरा पर जे भंगिमा बनल, से फेर हमरा क़ातर बना देलक। ओ बजलाह, 'प्रेम बाबू अहाँक दरखास प्रिन्सिपलसँ अग्रसारित कहाँ अछि? हम कोना एकरा आगू बढ़ाएब।' हम कने थेथर भए कहलिअनि, 'जखन भी.सी.आदेश कए देलखिन तँ आब प्रिन्सिपलक अग्रसारणक कोन काज? प्रिन्सिपल तँ भी.सी.एकँ अग्रसारित करितथि ने?' ओ एकदम गम्भीर भए गेलाह आ' कहय लगलाह, 'अहाँ सब नहि बुझै छियै? समय साल खराब छै, कमिशनर भाइसचान्सलर छै, हम अपन नोकरी फंसा कँ अहाँक फाइल नहि बढ़ा सकैत छी। अहाँ कालेजसँ दोसर दरखास पर प्रिन्सिपलसँ फोरवार्ड करा कँ नेने आउ, तखने अहाँक काज होएत। हम खिसिआएल बिलाड़ि धुरखुर नोचयबाला मुद्रामे आपस कालेज अएलहुँ। एकटा दरखास लिखल, बड़ा बाबूसँ भेरीफाइ कराओल। फेर प्रिन्सिपलसँ फारवार्ड कराए तीन बजे धरि पहुँचि गेलहुँ जीबछ बाबूक टेबुल लग। पता लागल जे ओ सब चाह पीबाक हेतु बाहर गेल छथि, आधा घँटाक बाद अओताह। हम ओहीठाम बैसल रहब उचित बुझलहुँ। लगभग चारि बजे एक झुंड कर्मचारीक संग हमरो इष्टदेव पहुँचलाह। हमरा देखिते पुछलनि,'की भेल? फोरवार्ड भेल की हाथ डोलबैत आबि गेलहुँ। हम विजेताक मुद्रामे दरखास हुनका हाथ दिश बढ़बैत कहलिअनि, 'नहि, काज करबा कँ आएल छी।' ओ दरखास हाथसँ लए लेलनि। ओकरा नीक जकाँ अवलोकन कएलनि आ' जोड़गर सांस लैत कहलनि, 'जाउ, आब हम सोम दिन फाइल बढ़ा देब, आइ तँ आब हमरा जएबाक बेर भए गेल अछि।

हम सोम दिन पुनः साढ़े बारह बजे जीबछ बाबूक समक्ष हाजिर भए गेलहुँ। हमरा देखैत जीबछ बाबू कहए लगलाह, 'आइ अहाँक काज भए जाएत। अहाँ एखन कियेक अएलहुँ? एखन जाउ, अपन काज करू ग' चारि बजे आबि कँ चिटठी लए लेब। हम ई समाद रजिस्ट्रार साहेबकँ कहि अपन डेरा आबि गेलहुँ। ठीक चारि बजे रजिस्ट्रार साहेबक सम्मुख भेलहुँ। ओ बिना किछु पुछने उत्तर देलनि। अहाँक फाइल कहाँ आएल अछि?' हम मुह बिधुओने नीचा आफिसमे अएलहुँ। जीबछ बाबू कहलनि, 'हम तँ फाइल बढ़ा देने छी, कने डिपुटी रजिस्ट्रारक आफिसमे खोज करिऔक।' ओहो आफिस सटले छल। ओहिमे गेला पर पता चलल जे आइए तँ फाइल आएल अछि, सेम डे फाइल कोना बढ़त? काल्हि अहाँक फाइल रजिस्ट्रार लग जाएत। हम निष्प्रभ आपस आबि गेलहुँ।

मंगल दिन दुपहरमे फेर डिपुटी रजिस्ट्रार कार्यालयमे धमकलहुँ। ओहिठाम उपस्थित एकटा कर्मचारी हमरा चिन्हैत छलाह, कहलनि 'सर अपने कियेक हरान होइत छियैक? आइ निश्चिते अहाँक फाइल रजिस्ट्रारक ओहिठाम चल जाएत। अपने साँझमे वा काल्हि सबेरे खोज कए लेब।' हम हुनका उपरका मोनसँ धन्यवाद दैत घुरि अएलहुँ।

बुध दिन फेर हम हेहर जकाँ रजिस्ट्रार साहेबक आफिस पहुँचलहुँ। ओ देखिते हँसय लगलाह आ' कहलनि, अहाँक फाइल एखने आएल छल, हम ओकरा प्रो.भीसी. लग पठा देने छी, कने जा कँ देखियौ, ओकरा ओहि ठामसँ भीसीक ओहिठाम पठबा दियौक। हम आइ साँझमे भीसीसँ आर्डर करबा लेब तँ काल्हि अहँक एन.ओ.सी बनि जाएत।' ई सुनितहि जेना हमर पैरमे घिरनी लागि गेल हो। हम पवन वेगसँ प्रोभीसीक आफिस पहुँचि गेलहुँ। ओतय रवीन्द्र जी नामक एक स्टाफ भेटलाह। बड़ आदरसँ बैसौलनि। पहिल दिन यूनीभरसिटी आफिसमे एतेक सम्मान भेटल छल। मोन तँ गद-गद भए गेल। रवीन्द्र जी अएबाक कारण पुछलनि। हम अपन फाइलक प्रसंग कहलिअनि। ओ टेबुल पर राखल फाइल सबहक निरीक्षण कएलनि। आ' कहलनि, 'फाइल तँ आएल अछि, मुदा साहेब नहि अएलाह अछि। हुनका अबैत देरी पहिने अहींक फाइल हम बढ़ा देब। अपने तीन-चारि बजे आएल जाओ।' हम कने काल बैसि उर्जा संचय कएल आ' उठि कँ बिदा भए गेलहुँ। चारि बजे पुनः पहुँचला पर बहुत अफसोच करैत रवीन्द्रजी कहलनि, 'सर, अपने निश्चित भए कँ जइऔक, काल्हि अहाँक फाइल निश्चिते बढ़ि जाएत। हमरा मुहसँ अकस्मात निकलि गेल, 'ठीक छै' आ' उल्टे पैरे बिदा भए गेलहुँ। अगिला दिन हमरा दिल्लीक गाड़ी पकड़बाक छल। हम अपना मोनमे एकटा अज्ञात आत्मविश्वास लए दिल्लीक लेल प्रस्थान कए गेलहुँ। दिल्ली पहुँचि मोसाफिर खानामे नित्यक्रिया आदिसँ निवृत्त भए स्नान कएल। किछु जलखै कएलहुँ। आ' इन्द्रप्रस्थ यूनीभरसिटीक लेल बिदा भए गेलहुँ। ओहिठाम कार्यालयमे जा कँ बात बनबैत कहलिऐक,'जे हम दिल्लीए आएल छलहुँ। हमरा गामसँ टेलिफोन आएल जे एहिठाम इंटरभ्यू अछि। मुदा हमरा लग ने यूनीभरसिटीक कॉल लेटर अछि आ' ने एन.ओ.सी. अनने छी। हम की करू?' ओ कर्मचारी कहलनि जे चिन्ता जुनि करू। रजिस्ट्रार साहेब इन्टरभ्यू बोर्डमे बैसल छथि, कने हुनकासँ भेट कए लिअनु।' दिल्लीक ई यूनीभरसिटी, तकर रजिस्ट्रार सन व्यस्त हाकिम आ' ताहि परसँ इन्टरभ्यू बोर्डमे बैसल! ई सब सोचि कँ हमर पैर तरक माटि ससरय लागल। मुदा 'हारे को हरिनाम'क स्मरण करैत हम इन्टरभ्यू हॉलक गेट पर पहुँचि गेलहु। ओहिठामक दरवानसँ कहलियैक, 'रजिस्टार साहेब से मिलना है।' ओ पुरजा पर नाम लिखि देबाक हेतु कहलक। हम ओकर आदेशक पालन करैत अपन नाम-पता लिखि देलिऐक। ओ चट हमर पुरजा लए इन्टरभ्यू बोर्डमे गेल कि एक भारी भरकम हाकिम सन लोक बाहर अएलाह। हम उचित अभिवादन कए आफिसमे कहल गप्प दोहरा देलिअनि। हमर चेहरा पर डरक चेन्ह ओहिना पढ़ल जाए सकैत छल। हम उमेद करैत रही जे ओ खूब जोरसँ डपटैत कहताह जे 'मैं क्या करूँ? आप कैसे यहाँ चले आये? मैं अभी बोर्ड में बैठा हूँ? आपकी हिम्मत कैसे हुई यहाँ आने की?' लेकिन एकटा मनोवैज्ञानिक जकाँ कहलनि, 'डौन्ट वरी, यू गो टू माए आफिस, कमल इज देअर, ही विल गीभ यू डुप्लीकेट लेटर, यू एपीयर एट दि इन्टरभ्यू। यू केन सबमिट एन. ओ.सी. इफ यू आर सेलेक्टेट।' हम गद-गद भए हुनका 'थैंक यू सर' कहैत पुनः आफिस अएलहुँ। कमलजीक खोज कएलहुँ। हुनका रजिस्टार साहेबक समाद कहलिअनि। अपेक्षा करैत रही जे ओ कहता 'लिखबा कर कहाँ लाये हैं। अभी कैसे होगा, अभी फुरसत नहीं है। कल

आइयेगा।' लेकिन ओतय बिना किछु बजने कम्प्यूटरक माउस पर हाथ देलनि आ' दू तीन मिनटमे प्रिन्टरसँ चिट्ठी निकालि हमरा हाथमे दए देलनि आ' कहलनि, 'रजिस्ट्रार का साइन ले लीजिये'।

आब हमर हिम्मत जवाब दए देने छल। फेरसँ रजिस्ट्रारकेँ इन्टरभ्यू हॉलसँ बाहर बजबाए ऐ चिट्ठी पर साइन करबाक हेतु कहबैक तँ ओ एहि बेर कोनो दशा बांकी नहि राखत। लेकिन दोसर कोनो उपाइओ तँ नहि छल। हिम्मत कएलहुँ। ओही चपरासीकेँ पुरजा देलिऐक। ओ जा कँ देकनि। देखितहि साहेब बाहर अएलाह, जेना हमरे बाट ताकि रहल होथि। हम चुपचाप चिट्ठी बढ़ा देलिअनि। ओहो चुपचाप निर्दिष्ट स्थान पर अपन हस्ताक्षर कए देलनि। आ' हमरा पीठ पर हाथ रखैत कहलनि, 'गौड ब्लेस यू।' हमरा पूरा शरीरमे कम्पन जकाँ होमए लागल। हम सोचय लेल विवश भए गेलहुँ जे सब किछु रहितो मिथिलाक अधोगति कियेक? की तकर कारण लोके अछि? ओतहु लोके अछि आ' दरभंगोमे लोके अछि। मुदा लोक–लोकमे कतेक अन्तर, कोना छैक?

सम्पर्क :
मो. 09431691686
रसायनशास्त्र विभाग,
एम.एल.एस.एम.कालेज, दरभंगा–846004

FORM IV

1.	Place of Publication	PATNA (Bihar)
2.	Periodicity of Publication	Once in three month
3.	Language	Maithili
4.	Publisher's name	Bibekanand Thakur, Secretary, Chetna Samiti, Vidyapati Marg, Patna-1
5.	Whether citizen of India	Yes
6.	Address	Chetna Samiti. Vidyapati Marg, Patna-800 001
7.	Editor's name	Dr. Basukinath Jha
8.	Address	Chetna Samiti. Vidyapati Marg. Patna-800 001
9.	Whether citizen of India	Yes

I, Bibekanand Thakur, hereby declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief

Bibekanand Thakur,
Secretary,
Chetna Samiti. Vidyapati Marg,
Patna-800 001

चेतना कैलेन्डर

(नोट-विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक अतिरिक्त)

1.	जननायक कर्पूरी जयन्ती	- जनवरी 24
2.	पंडित ललितनारायण मिश्र जयन्ती	- फरवरी 02
3.	महाकवि लालदास जयन्ती	- फरवरी 09
4.	डा. अमरनाथ झा जयन्ती	- फरवरी 25
5.	पंडित जयनाथ मिश्र जयन्ती	- मार्च 04
6.	पंडित विनोदानन्द झा जयन्ती	- अप्रैल 17
7.	महाकवि यात्री जयन्ती	- जून 11
8.	चेतना समितिक स्थापना दिवस	- जुलाइ 18
9.	डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' जयन्ती	- सितम्बर 07
10.	प्रो. हरिमोहन झा जयन्ती	- सितम्बर 18
11.	कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' जयन्ती	- अक्टूबर 02
12.	डा. कांचीनाथ झा 'किरण' जयन्ती	- दिसम्बर 01

उड़ाहल

पूछनि क्यो नहि तैओ आतुर अपने मनसँ आनक हेतुक।
करथि उड़ाहल किछु नहि हम हम कय कें मिलबथि ओ तुकमे तुक।

दँतखिसोटि

दँतखिसोटि थिक तनिक नाम जे गढ़ि-गढ़ि गप्प चिबा कय बाजथि।
बिन कारण हँसि देथि सदच्छन विहुँसि बतीसो दाँत उघारथि।

टभका

गप्प कतहु क्यो करय केहनो बिच्चहिमे जे टपकि पड़ै छथि।
बिनु बुझनहि ओ बिना टोकनहि, बाजथि टभका से कहबै छथि।

छिछिआएल

पैघ बनैलै ओ छिछिआएल जनिका क्यो नहि कतहु गुदानिनि।
तदपि अपन गुण घेरि घेरि कय सुनबथि माननि वा नहि माननि।

ठहक्का- मतिनाथ मिश्र

कथा

कैंसर–वार्ड

साकेतानन्द

ओ दूनू जनी जेना एक दोसराकेँ गरामे हाथ दए केँ हबोडकारे कनै छली, से देखि नवहट्टा बजारक लोकक की बात, जे बसमे बैसल लोक हतप्रभे नहि, किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए गेल छल। ककरो इएह ने बूझल छलै जे ई दूनू जनी, एक गोटे बसमे बैसल आ' दोसर नीचामे ठाढ़ि, एना विलखि–विलखि केँ किये कानि रहल छथि? बड़ी काल धरि, करीब आध घंटाक बाद ककरो तंद्रा टुटलै तँ बाजल– 'भेलै, बढ़ा गाड़ी रे डलेवरा!'

महेश साह अचंभित भेला जखन बात बुझै मे अएलनि। ई लोकनि कोनो सम्बन्धिक नहि, पड़ोसी छली। कतौ, गोमिया कि राउरकेलामे। बस पर बैसल जनीकेँ जखन भेलोर कि टाटा कैंसर अस्पताल निरसि देलकनि, तँ मोन भेलनि जे आखिरी बेर गामे जा केँ छठि करी। सएह कए केँ जा रहल छली बेटा लग दिल्ली। ओतए कमसँ कम डाकदर–वैद तँ छैक! तँ दूनू जनीकेँ की जानल छलनि जे ई भेंट आखिरी भेंट छनि। तेँ एना कनै जाइ छली? ओ! आब बुझलियै!' कहि ओ अन्यमन्यस्क भए गेला। इएह छै दुनिया..... एकरे एत्ते लोक चिंता करैत रहैये? बलाँ सँ। हुनकर पछिला पैंसठि बरिसक अनुभव इएह कहै छनि। ओहो जा रहला अछि दिल्ली। मायमोहक बन्धन ने छियै इहो। बसकेँ ससरिते महेशो साह अपन सीट पकड़लनि।

केहनो रिजर्वेशन रहै कि किछु यात्रा महेश साहुकेँ आब नहि सोहाइ छनि। पैंसठि सालक भेला। गरीबरथसँ नई दिल्ली स्टेशन पर उतरहि ओ थाकि केँ चूर भए गेल छला। जाबे हिनकर तेसर बेटा मुन्ना बाबू हिनकर डिब्बा लग आबथि ताबे तक तँ ई दू छोटका बोरिया, जाहिमे चाउर कि चूड़ा, दादी की सब ओइमे कोंचने रहै जे लोत्थे भारी रहै, उतारि चुकल छला। एकटा बोराकेँ उतारैत काल मुन्ना बाबू आएल छलनि। देखिते तेज स्वरमे कहलकनि जे कोनो कुली बजा लितह से नहि! फेर ओकर नजरि हिनकर रस्तामे गंदा भेद पहिरनाक धोती पर गेलै आ' ओकर मुह बिचकलै। बाजल तखन नहि। बाजल जखन नई दिल्ली स्टेशनक आगाँ लागल नव चमचमाइत स्कॉर्पियो पर बैसला। मुन्ना बाबू बच्चेसँ गणितमे तेज रहनि। क्लास छौ मे जखन रहै तँ गणितक टीचर दीने बाबू एकरा बी.कॉम करबा केँ चार्टर एकाउंटेंट बनबैक विचार देने रहथिन। हुनकर भगवान भला करथुन! हुनकर भखनाइ एते सत्य हेतै से तँ ककरो ने आस छलै। से जे से एखन तँ दिल्लीक मक्खन सन सड़क पर मुन्ना बाबूक गाड़ी सरसराइत उड़ल जा रहल छलै। ओ गमेसँ पुछलकनि–'कोनो साफ धोती नहि छल', बाल–बच्चा देखत'! ओ छगुनतामे छलाह अछि मर्र, दू दिनसँ, गाड़ीमे छलाहे तँ, धोती तँ, गन्दा हेबे ने करतै! डेरा पर नहेता–सोन्हेता तँ बदलि लेता। एतबा बात कि आब अजय–विजय नहि बुझतै? ओहो सब तँ दस वर्षक भेलै आब। मुन्ना बाबूक डेरा देखि केँ तँ महेश साहकेँ टराटक्क लागि गेलनि। दू महला मकान, आगाँमे पोर्टिको, फुलवारी, बगलमे गेराज। जेना कोनो बड़का हाकिम सबहक डेरा होइ छै। कि कही ओहू सँ चिक्कन। देखि केँ पिपनी भीजि गेलनि, एक्के बेर मुन्ना बाबूक जन्मसँ लए केँ बाढ़ि तक कोनो सिनेमाक रील जकाँ नाचि उठलनि। कोसी पीड़ित इलाका, ने कोनो खेती–पथारी ने कोनो रोजी–रोजगार, लए दए केँ एकटा किरानाक दोकान छलनि–पंथक पाखड़ि। कोना–कोना केँ चारू भाए केँ पढ़ेलनि, से सोचै छथिन तँ आइओ रोइयाँ ठाढ़ भए जाइ छनि। ताहिमे अपनहुँ किछु दोख छलनि। देखिते–देखिते छौ टा बच्चा जन्मा लेलनि। साहुक जाति आ' मोन जे बच्चा सबकेँ नीक जकाँ पढ़ेथिन, डंडी नहि पकड़ेथिन। "जे ने करे कपार–से करे" व्यापार बला लोकोक्ति मोन छलनि साहकेँ मुदा से ई गाम मे नहि ने। एतय तँ बारह सीट नक्शा छै आ' तेरह टा नेता। जँ कि क्यो पनुकल तँ ऐ गामक लोक मूड़िए ने मोच्चाडि देत'। तँ एकटा सबसँ छोटका बेटा जे कोरपच्छू छलनि आ' जकरा ओ बड दुलार सँ "सुन्ना बाबू" कहैत रहथिन, ओकरा कोनो नीक कॉलेजसँ एग्रीकल्चरमे बी.एस. सी. करा केँ गाममे रखने छला। कोसीक चलतीमे नीक पाइ जे कमेलनि, ताहि सँ मुन्ना बाबूसँ लए केँ सुन्ना बाबू तक केँ नीक जकाँ पढ़ेबो केलनि आ' दस बीघा चिक्कन भूमियो अरजलनि। जै पर एखन सुन्ना बाबू नीक खेती करै छनि। बिचला दूटा होटल मैंनेजमेंट केने छनि। दूनू ताज ग्रुप ऑफ होटल मे छनि। एकटा सम्भव मुम्बईमे आ' दोसर कोलकाताक होटलमे, बढ़ियाँ कमा रहलनि छनि एहि तरहेँ महेश साह सोचलनि जे हुनको सफले पिता लोक कहतनि। गाड़ीसँ उतरिते 'दादाजी' कहि केँ अजैया छरपि केँ कोरा पर चढ़लनि, मुदा विजैया केँ जखने साह जी अपन दोसर कोरामे समेटबाक प्रयास केलखिन ओ बिमछि केँ नीचा सिसरि गेलनि आ' पुछलकनि'दादाजी! अहाँ डी.ओ. नै लगबै छी..... अहाँक देह गन्हाइये....हम नै चढ़ब अहाँक कोरा पर।' हिनकर हाथक टॉफी हाथे मे रहि गेलनि। तखन जा केँ ओ डी.ओ.क माने बुझलखिन। मुदा पुतहु उषाकेँ अबै सँ पहिने नवहट्टाक महेश साह जी, गाममे धोआएल धोती आ' रस्तामे कने मोचड़ल सन कुर्ता पहिर केँ, नहाएल – सोन्हाएल बेस मटोमाट भेल मुन्नाक बीस हजारक की तीस हजारक सोफा पर विराजमान रहथि। उषाक हाथ महक चाहक प्याली दैत ओहो हुनकर कपड़ा केँ देखि केँ बाजि उठल रहथिन जे गाम बाला धोबी कपड़ामे नील–तील नहि दै छै की? आ' कुर्ता एहन चीप कपड़ाक

कियै छनि.... हिनको पैसाक कमी छनि की?' बजै चल गेली दूनू बेटा कें होमवर्क कराबए। ई हाथक कपसँ उठै भाफकें बड़ी काल धरि देखैत रहला। बादमे ओकरा जेना-तेना घोंटि गेला। मुदा मोन? मोन तँ दौड़ैत रहनि पाछाँ।

पछिला तीन-चारि दिनसँ ई मरमरी फर्श हुनका काटब दौड़ैत रहनि। मोन अछतानि-पछतानि। कोन गिरगिटिया चढ़ि बैसलनि कपार पर, से नहि जानि। एतय हुनका ड्राइंग रूममे, खास कें तखन, जखन कि मुन्ना बाबूक कोनो संगी कि साथी आ कि क्यो जँ बाहरी आबि जाए, तँ जएबाक ऑडर नहि रहनि। हुनका आब कोन लेसन-फैशन करबाक रहनि? तें महेश साह पाँच-छौ दिन पर दाढ़ी बनाओल करथि। मुदा एतय तेसरे दिन क्यो टोकि देनि। किओ कि मुन्ने बाबू कहि दनि–''खराब लगै छह, दाढ़ी काटि लैह''। भोरे-भोर उठि कें नहाबय पड़नि। ब्लडप्रेशर रहनि, तें की? पानि तँ सात-आठ बजैत-ब्रजैत बन्न भए जानि।

एक दिन अजैया कहलकनि-'दादा! पिज्जा खेबाक मोन होइये?'

'ई पिज्जा की होइ छैक रे?''

'खा कें देखहक ने,तोरो नीक लगतह!''

''कत' भेटै छै रौ?''

''जामा मस्जिद नै छैक लगे दूरमे.... ओत्तै ठेला लगबै छै। खाली पापाकें नै कहियहक।''

''से कियै रौ? पापाकें कियै ने कहबै?''

''दूर, अनेरे भाषण देबय लगतह जे बजारक चीज खेलासँ पेट खराब होइ छै। बेकारक पैसा खर्च होइ छै।... हम तँ, मम्मीसँ, पैसा माँगि कें कैक बेर खेलौं। मम्मीयों कें आनि कें देलियै, कहाँ ककरो पेट खराब भेलै! बलौं सँ बहाना।''

अजैया मुह बना कें कहलकै -'तँ चलबहक स्कूलक बाद?''

''आ जँ कहीं तोहर पप्पाकें खबरि लागि गेलै, तब? तब रे छौंड़ा?

''तोँ तँ हमर पापाक पापा ने छहक। तोरो पापाक डर होइ छ'?''

''बड्ड रे।''

ओइ दिन पाँच बजे अजैया-बिजैयाकें संग लए कें महेश साह जामा मस्जिद गेला तँ ओतय परबा बिकाइत देखलखिन। पुछलखिन तँ पोसै बाला आ' खाइ बाला, दूनू परबा बिकाइत रहै। एकाएक हुनका मुबारक मियाँ, जे हुनकर ग्रामीणे नहि लंगोटियो रहथिन, मोन पड़ि एलखिन। हुनकर पिता अरब गेल रहथिन तँ मुबारक मियाँ लए एकटा जर्मन एयर राइफल किनने आएल रहथिन। मुबारकक निशाना एहन-एहन जे लोक देखै तँ देखिते रहि जाइ। महेश साहक देयाद रहथि बटेसर साह। हुनका परवा पोसबाक सौख। नहियो किछु तँ, पाँच-सात सए पोसा परबा रहनि हुनका। महेश साहकें ओएह परबाक मांसुक चाट लगेलथिन। जें कि ओ बद्रेश्वर बाबाक मंदिर पर बैसे? मुबारक हिनका परबाक मांसुक व्यवस्था कए देथिन। ककरो कानोकान खबरि नहि होइ। जाड़ मास रहै, साहक जीह ललचेलनि। बच्चा सबकें पिज्जा खुआ आ' पुतहु लए बन्हबा, हरलनि ने फुरलनि तीन टा परबाकें कटबा कए ओकरो प्लास्टिकमे बन्हबा लेलनि। डेरा अबिते पहिने पुतहुक मोन बिधुआ गेलनि। देखलखिन तँ चिन्हि नहि पेलखिन, पुछलखिन-'मर्र, ई कथीक मांसु छियै? उत्तर अजय देलकनि ई परबाक छियै।'

'परबा? एकरा तँ हमरा बनबैयो लए नहि अबैयै? 'फेर हिनका दिस घुमैत पुछलखिन 'ई कोना बनेबै?'

''जहिना खस्सीक मांसु बनै छै तहिना इहो बनै छै। जाड़मे एकर मांसुसँ देहमे गर्मी अबै छै।'' 'एक सए एक अजनास बेसाहि अनै छथिन, आइ तँ मांसु मंगेबे करितियै..।'

खाइ कालमे मुन्ना बाबूक सेहो तेहनाहे सन प्रतिक्रिया। परबाक चिमडाह मांसुकें एक्को रत्ती तिड़िते मुन्ना बाबू मुह बना लेलकनि। बाजल किछु नहि तँ तेकर कारण रहै। कत्तौ दूर सँ नोयडामे मुन्ना बाबू जमीन देखि आएल रहै। काल्हि जा कें प्रोपर्टी डीलरकें एडवांस देबाक रहै आ' कने कनियांक संग प्लौटो देखत। बाबूओ आबि गेल छैक। तें गप्प ओही जमीन दिस घुमि गेल छलै। बच्चा सब मुदा बड़ा स्वादि-स्वादि कें परबाक मांसु आ' गरम-गरम झोर पीलक। मुदा मुन्ना, एक रत्ती चीखि कें बाटी डाइनिंग टेबुलक एक कात सरका देलकै। जेना ओ कोनो अखाद्य हो।

मुदा दोसर भोर, जखन मुन्ना आ उषा बड़ा विनीत भावें कहलकै जे जमीनक पाइ एडवांस कए कें आइ एग्रीमेंट लिखेतै, अहूँ चलियौ, एही सबठाम तँ अनुभवी लोकक जरूरति होइ छै, तँ नवहट्टाक महेश साह बेटा-पुतहुकें नहि, नहि कहि सकलखिन आ' अपन सबसँ सुंदर कुर्ता आ' सबसँ साफ धोती पहिर कें तैआर भेला। मुन्ना बाबू आब नीक ड्राइव करय लागल छल। स्कॉर्पियोक लंबा-चौड़ा सीट पर एक कात उषा आ' दोसर कात ई बैसल छला। रस्तामे इएह कहलखिन जे लेन-देनक बात तों अपन कए ले, हँ दस्तावेज पर साइन करै सँ पहिने हम देखबौ, जे जमीन कत्ते छै, आ' लिखा कत्ते रहलें अछि। मुन्ना बाबूकें आश्चर्य भेलै जे बिना पैमाईशे के ई कोना बुझि जेथिन जे जमीन कत्ते वर्ग गज़ कि कत्ते कट्ठा छै? बेटाक बात पर महेश साह मोनो-मोन हँसल रहथि, मोनमे जे एलनि से बाजल नहि रहथि। मोनमे एलनि, कहथिन जे वर्ग आठे मे जे 'यादवचंद्र चक्रवर्तीक' अंकगणित पढ़लकै, जे दस बीघा भूमिक मालिक अछि, ओ जमीनक टुकड़ा देखि कें नहि कहतै जे ई जमीन कत्ते हेतै? ताहूमे शहरी प्लॉट? ओकरा तँ महेश साह डेगेसँ नापि लेथिन जे कत्ते वर्ग गज कि वर्ग फीट छै। तें ओ बिहुँसला आ' कहलखिन जे-प्लौटेक बगले मे ने डीलर छौ? हमरा प्लौट पर उतारि दे आ' तोरा लोकनि गप्प कए, पाइ-कौड़ी दए दहीक, ताबे हम प्लौट देखबौ! सेह भेलै। मुन्ना बाबू उषो कें नहि लए गेलै। अपनहि ब्रीफकेस उठेने गेल। महेश साह गाड़ीसँ उतरला। प्लौटक चौहद्दी घुमला, तखमीना लगौलनि। अपन छोट गंदा सन डायरीक एक पेज पर ''शुभ-लाभ'' लिखि कें, डेगकें गज, आ' तकरा वर्ग गज़ आ' तकरा वर्ग फुट बनेलनि। ई सब ओ एकटा चाहबालाक बेंच पर बैसि कें रहल छला, जे हिनकर प्लौटक बगलमे फुटपाथ पर छलै। दिल्लीक फरवरी मासक सुसुम रौदमे मगन छला महेश साह, अपन प्रियतम काज, हिसाब-बारीमे। सामने मुन्ना बाबूक पक्षीराज सन स्कॉर्पियो लागल छलनि, जाहि पर उषा अन्यमन्यस्क भावसँ दोसर दिस ताकि रहल छली। जेना ओ छथि, तकर

हुनका कोनो परवाह नहि होनि। पहिने महेश साह प्लॉटक चारू आरि घूमि कें चाहक दोकान लग ठाढ़े-ठाढ़ अपन डायरीमे गोंद-गांद करै छला। तखन चाह बाला, नहि जानि कोना परेख गेलनि आ' कहलकनि 'बाबू! ठाढ़े-ठाढ़ कियैक लिखा-पढ़ी करै छियै... बिरिंच पर बेस कें करियौ ने।'' हुनका बड्ड सुखद आश्चर्य भेल रहनि, दिल्लीमे केओ मैथिलीमे टोकलकनि? ओ अपन भावना पर काबू करैत गाड़ी लग गेला आ' पुतहुसँ पुछलनि....''चाह पीबै?'' ओ जेना मूंडी झाड़ि नहि कहने रहथिन, ओहि सँ साफ पता लागि गेलनि जे हुनकर चाह पियैक आग्रह पुतहुकें एकदम नागवार लगलनि। कियैक? से ओ कने कालक बाद बुझलखिन। ओ पुनश्च चाह बालाक बेंच पर बैसि एकटा चाह बनबै लए कहि, अपन हिसाबमे व्यस्त भए गेला।

हिसाब केलाक बाद हाथमे चाहक गिलास लेने ओ बड़ी काल तक सोचैत रहला जे इएह प्लॉट पर केहन मकान छजतइ? कि ओ मकानकें बनैत देखि पेथिन? शूगर आ' ब्लड प्रेशर दूनू छनि। चाह बनबिते-बनबिते महेशकें नीक जान-पहिचान चाहबाला आ' ओकर संगे-संग काज करैत अधवयसू पत्नीसँ भए गेलनि। बेनीपट्टी साइडक कोनो गामक, बाढ़िक मारल सब छियै। ई सोचि कें कने विकल भए अएला महेश। ई बाढ़िक मारल लोक, कहिए तक किसानसँ मजदूर, मजदूरसँ अदना चाह बाला बनैत रहत? कि एकाएक मुन्ना बाबूकें सीढ़ीसँ उतरैत देखलखिन। एक बेर तँ ओ गाड़ी दिस तकलकं कि हिनका पर नजरि पड़लै। ओ सनसनाइत हिनका लग आएल आ' कहलकनि....'तोरा कोनो गत्तरमे लाज नै छह? घर पर चाह नै भेटै छह जे एहि ठाम फुटपाथी चाह पी रहल छह?'' ई अवाक, कोनो उत्तर नै दए सकलखिन ओकरा। ओ जहिना सनसनाएल आएल रहै ओहिना, बिना हिनका कागज़ देखौने वापस जमीन बालाक ऑफिसमे घूसि गेल। चाहबाला, जे ई सब गप्प सुनै छल से गमे सँ पुछलकनि...''बाबू! ई अहाँक बेटा छला कि...?' महेश साह कने काल तक चुप रहला, फेर कहलखिन....''नहि-नहि हम तँ हिनकर कारखानामे चपरासी छियै.... तें मालिक डांटलखिन।'' ई कहैत ओ चाह बालाकें पाइ देलखिन। हुनका लगलनि हुनके टा नहि जे बसमे बैसि कें हबो डकारे कानि रहल छली, पूरा समाजकें कैंसर सनक असाध्य रोग भए गेलैए। इएह सोचैत आ अनावधाने, यन्त्रचालित सन मुन्ना बाबूके पक्षीराज सन स्कॉर्पियो पर बैसि गेला।

सम्पर्क :-
मो.-9431046447
ए/85, ''मधु विलास''
गाँधी विहार, पुलिस कॉलोनी, अनीसाबाद, पटना-800002,



पढ़लेसँ देशक ह्वैछ उन्नति ई कथा सब फूसि औ!
पढ़लो कतेको व्यक्ति अपनहिमे लड़ै छी ढूसि औ!
पढ़ले विदेशक वस्तु लै छी अपन देशक दूसि औ!
पर ओ विदेशी बूड़ि बुझि-बुझि तदपि दै अछि धूसि औ!
पढ़ले गुनल गाड़ीहु पर चढ़ले सुपारी पान लै।
चिबबैत छी, गिड़ि लैत् छी तरकारियो पकवान लै।
लगबैत छी साबून सोड़ा-वाटरो चढ़बैत छी।
कैंचीसँ केश मुड़ाय चुकड़ी माथ पर बढ़बैत छी।
तजि देल पहिरब पाग देशक बनल तौनी धोतियो।
पछबारिपार-निवासिए नहि, आब बहुतो सोतियो।
अङरेजिये दड़रैत छी नित हिन्दिए फटकैत छी।
निज-मातृभाषा नाम सुनि अपने कियै भटकैत छी।
मिथिलाक अक्षरमात्र ने पढ़ुआ कहाय जनैत छी।
छथि जे स्वदेशक चालि दै तनिका असभ्य गनैत छी।

– पढ़ुआ चरित्र – सीताराम झा

मूर्ख

रटि पुस्तक दुइ चारि मानि अपनाकेँ पण्डित।
पाबि परीक्षकक कृपा प्रतिष्ठापत्र घमंडित।।
परनिन्दा ओ अपन प्रशंसा करथि सदक्षण
मानथि नहि निज दोष, असल ई मूर्खक लक्षण। -

डपौरशंख

साँझ कहै जे देब परात, प्रात-काल पुनि साँझक बात
किछु नहि जकरा बातक ठीक, असल ठपौरशंख से थीक।

चुगिला

आनक फुसियो दोष लगाए, ककरहु कान कहै अछि जाए।
खाए सदा जे आनक उगिला, कलह लगाबै से थिक चुगिला।

पुरुष मसोमात

जकरा कतहु अपन नहि जूति, ने मनमे अभिमानक छूति।
मौगिक हाथ जकर हो. टीक, पुरुष मसोमात से थीक।

जिहुलाहि

यदपि अपन घर भरल पुरल चाउर ओ चूड़ा
तदपि जीह पनिछान्हि देखि आनक घर गूड़ा
खन चिन्नी खन चूक चाखि चट चटनी चाखथि।
चाहथि चिकन चहटगर से जिहुलाहि कहाबथि।

छुलाहि

चट मुहमे दै देथि कतहु घरमे किछु पाबथि।
लै सिधहहु सौं अन्न मुठी भरि गाल दबाबथि।
खाइत ककरहु देखि ताहि दिसि टक्क लगाबथि
भँड़दुलाहि सौं छोटि कनेक छुलाहि कहाबथि।

– कविवर सीताराम झा

बियाहक ओरिऔन

डा. उषाकिरण खान

लगभग बारह वर्ष पर महामायाके ँ पलखति भेलनि अछि कामिनीक आवासपर अएबाक। कामिनी प्रायः सभ भाए बहिनिक दुख-सुखमे हाजिर भए जाइत रहैत छलीह। माइ महामायासँ भेंट होइत छलनि। कहिओ कहिओ सप्ताह भरिक छुट्टी लए गाम सेहो जाइत छलीह। गाम धरि सड़क जाइत छलैक। स्टेशनसँ बस, टेम्पो किंवा रिक्सा इत्यादि जाइत छलैक ते ँ कोनो विशेष झंझटि नहि छलैक। जा धरि भाए-बहिनि पढैत छलै ता माइ नगरमे रहथि। पढैत लिखैत नेन्नाकें ककरा पर छोड़ितथि। जखन डाक विभागमे काज करएबाली कामिनिक पिता अनायास मस्तिष्क ज्वरसँ पीड़ित भए दुनिया छोड़ि गेलाह तखन दशवीं पास कए कामिनी काओलेजमे नाम लिखऔने छलीह। हुनकासँ छोट दू टा भाए आ' ताहिसँ छोट एकटा बहिनि छलखिन जे दुधपीबा छलैक। बज्राघात अनायासहि होइत छैक आ' से रोकब अपना हाथमे नहि। कामिनि बुझनुक छलखिन आर सभ अकबकाएल सन। मनजीत बाबूक फरीक तँ बेस छलखिन मुदा अप्पन भाए एको टा ने, दू टा बहिनि छलनि। तनिक पति अमदाबाद दिस नोकरी करैत छलखिन। ताहि दुआरे ओलोकनि आपत्ति-विपत्तिक अतिरिक्त कोनो सम्पर्क नहि राखि पाबथिन। मिथिलासँ बाहर ना-ना तरहक लोकक सम्पर्कमे रहलाक कारणेँकने ओ ओलोकनि बेलाइस सेहो भेल जा रहल छलाह।

मनजीत बाबूक मृत्युक पश्चात तत्काल आएब हुनका लोकनिक लेल सम्भव नहि भेलनि। सुविधासँ छुट्टी लए अबैत गेलाह आ' अत्यन्त शोक प्रकट कए जाइत गेलाह। गाममे जे फरीक तनिका स्वाभाविक रूपेँ कोनो खास रुचि नहि रहनि। छोट-छीन सरकारी नोकरी जे छलनि मनजीत बाबूकेँ, से करेजमे फाँस जकाँ गड़ल रहनि। ई ककरो मोनमे नहि छलैक जे एतेक कम आयुमे अनायास पछबरिया घड़िडह सुन्न भए जाएत। मुदा अधिक सहायता देबाक ने ओकाति छलैक ने इच्छा। मनजीत बाबूक जीता जिनगी पछबरिआ घड़िडह पर बनल सिकमी कोठा गुलजार होइक वर्षमे एक बेर अवश्य आ' आङनक बियाह दुरागमनमे जखन-तखन। खेत-पथार पुरना हरबाह देखल-सुनल करै छलनि, ओएह घरक साफ-सफाइक भार सेहो लेने छलनि। पुरना सम्बन्ध कायम रहलनि। मनजीत बाबूक काज नगरमे भेलनि। सरकारी क्वाटर तीन मास धरि रहलनि। आ' एहि आश्वासन पर पेंशन सेहो बहाल भए गेलनि जे वयस्क भेला पर एकटा सन्तानके ँ नोकरी भए जेतनि। मनजीत बाबू बड्ड स्नेहसँ बाल-बच्चाके ँ उच्च-शिक्षा देमय लागल छलाह। हुनकर कल्पनाक उड़ान उँच छलनि मुदा नियति पर ककर सक? महामाया केर अवाक् भेला पर कामिनी बल देलखिन।

'माइ हमरा पर भरोस राखू, हम अहाँके ँ आ' छोट भाए-बहिनि के ँ सम्हारि लेब।' अबूझ जकाँ माइ हुनका दिस तकलखिन। कोन उपाय छलनि? आइ.ए.केलाक बाद कामिनी एकटा स्कूलमे नोकरी करए लगलीह, दू चारि टा टयूशन जुटा लेलनि आ' खानगीसँ बी.ए.पास कएलनि। कखनो कखनो माइ हुनका विवाहक मादे चर्च करथिन। परंच कामिनी हँसि कँ टारि देथिन। भाए सुबोध पढ़यमे बेसी मोन नहि दैक, मैट्रिक साधारण अंकसँ पास कए गेलैक आ' आइ.कॉम करए लगलै। ओकरा पिताक स्थानक नोकरीक छटपटी छलैक। किन्तु उमेर होइतैक तखन ने? से ओ लागल छल। छोटका प्रमोद प्रतिभाशाली सेहो छल आ' बेस परिश्रमी, ओकर लक्ष्य उँच बुझना जाइत छलै। छोटकी बहिनि मालिनी सेहो नीक जकाँ पढब आ' घरउआ लूरि सीखब नहि छोड़ने छलि। कामिनीक लक्ष्य एकेटा छलनि, भाए सभकेँ पिताक अभाव नहि खटकनि, आ' बहिनिक नीक शिक्षा होइक। नगरमे गामेक लोक बसै छैक, तें अपवाद-प्रवाद ओहने होइत छैक, अन्तर एतबे जे एक सीमाक पश्चात केओ ककरोसँ बेसी मतलब नहि राखैत अछि। एक प्रकारसँ नीक गप्प।

गामक हिनक हरबाह रामसेवक जे मैनेजर भए गेल छलनि, तकर बेटा नान्हिएं टासँ हिनका ओतए रहैत छलनि। घरक काज करैत छलै। मुदा मनजीत बाबू ओकरा पढ़बै छलखिन, ओ बालक महेश पढ़यमे बेजाए नहि रहैक। हिनका संगे रहि आ' हिनकहिसँ खानगी पढ़ि ओ कामिनीक संगे स्कूल पास कए गेल रहैक। कामिनी कॉलेज जाए लागलि आ' ई कम्प्यूटरक कक्षामे टाइप इत्यादि सिखय लागल छल। तखन एहि नगरमे कम चलनिसार रहैक। मुदा आगमजानी मनजीत बाबू महेशकेँ तकरे सुझाओ देलखिन। महेश आ' ओकर पिता, रामसेवक मोनमे आइ काल्हुक लेल दुर्लभ होइत दायित्वबोधक संचार भेलैक। रामसेवक गाममे रहैक? तें खेत खरिहानक देखभाल करैक आ' महेश नगरमे। महामायाके ँ एक प्रकारसँ चिन्ता कम छलनि। हिनकर चिन्ताक बंटबारा जे भए गेल छलनि। बहुत बेसी हाहें-बेरवाहे करयबाली नहि छलीह महामाया, ते ँ लगभग निश्चिन्त छलीह। जखन हिनका फरीक

लोकनिक बेटा सभक कोनो नीक समायोजन नहि भए पाबि रहल छलनि काजमे तखन हिनक बेटा पिताक स्थानपर लागि गेलाह। छोटका सेहो लाइन पकड़िए लेने रहनि। छोटकी बेटीक बियाह सुठाममे भए गेल छलनि। सभटा होइतो एक टा बड्ड बेसी चिन्तनीय विषय छलनि, से छलैक कामिनीक विवाह। ओ कखनो कखनो कामिनीकेँ धरथि। कहए लागथि–'अहाँ कहने छलहुँ जे सभकेँ रस्ता धराएब तखन बियाह करब, तँ आब की भेल जाइत अछि? कामिनी हँसि कँ टारि देथिन।

'एखन कहाँ रस्ता धएलक? नूनूक बियाह होमय दिअ।'

'ई कने फाजिल गप्प भेल। जेठ जनक बियाह छोट होइतहु अहाँ करक आज्ञा देलिअनि तँ हम चुप्प रहलहुँ आब ई पछ नहि होएत, अहाँ नूनूसँ बारह वर्ष पैघ छी, अहाँ उमेरक बुचिया, सावित्री, आब कन्यादान करत।' माइ रुष्ट भए जाथिन। कामिनी हँसि कँ रहि जाथि।

जा धरि महामाया देवी नगरमे रहथिन, महेश नित्य दिनं दोकान खोलब आ' शटर खसएबाक पहिने आ' पछाति अवश्य हिनकासँ भेंट करनि। खगताक वस्तु कीनि बेसाहि दैक। बहुत दिनसँ तरकारीबाली, मलाहिनि इत्यादि, घरे पर आबि सौदा बेचि जाइक। महेश भरिपेट्टा जलपान कए कँ जाए आ' फेर रतुका भोजन सेहो करैक। ओना ओ अपना कम्प्यूटर ट्रेनिग सेन्टरक पाछाँ एकटा कोठली किराया पर लेने छल। एकाकी मनुष्यक लेल ओं बेस छलैक। एक दिन महामाया देवी असगर पाबि महेशसँ पुदलखिन–

'कतेक कमाइ भए जाइ छौ, बाउ?'

'अपनासँ फाजिल माजी।'

–'सभटा घरे पठबै छहक कि कि बैंकमे राखै छह?'

–'बैंकमे माँजी, एकटा फलैट बुक केलिअइ।'

'की?'– महामायाकँ छगुन्ता लगलनि। ओ मौन भए गेलखिन। रातिमे जखन माइ बेटी पड़लि रहथि तँ ई चर्चा उठौलखिन। 'महेशुआ तँ बेस कमाइये, सुनलौं जे ओ फलैट बुक कएलक अछि।'

–'ऐं? के कहलक?'– कामिनी सेहो चौंकलि सन पुछलखिन। ओ अपनहि बाजल,'बेस कमाइ होइत हेतैक?'

'ओकर काज नीक चलैत छैक माइ। परिश्रमी छै ने?काज करैत–करैत बी.ए.बी.सी.ए. सेहो कए लेलकै आ' जॉब वर्क सेहो लैत छैक। कमाइ तँ छैक।'

–'आ' तखन देखही जे नान्हि टामे जे बियाह भेलैक, तकर द्विरागमन नहिएं करेलकै।ओइ छौंड़ीक बियाहो भेलै, चारि टा सन्तान छैक आ' ई एहिना ठुट्ठा गाछ जकाँ ठाढ़ छैक।'

–'अपन ओकर इच्छा।'

–'अरे करितय दोसर बियाह, ककरा ले आफन तोड़ने अछि।'

–'अइ सँ तोड़ा की?बेसी माथा नहि खराब कर।' कामिनी अपना मोने कथा–कथान्तरक पटाक्षेप करए चाहलखिन।

–'हमरा किएक नहि, नान्हि टासँ पोसलौं ओकरा। जन्म देलकै माइ–बाप ओकर अपार आ' फेकलकै हमरा कपार। संस्कार देनिहार तँ हमहीं छियैक, तँ हमरा की?'

फेर माइ आवेशमे आबि गेलथिन। कामिनी चुपचाप चादरि तानि फोंफ काटए लागलि। मोने मोन भगवानकँ गोरौलक–' हे भगवान! माइकेँ चैन दिअनु।'

भोर जगजगार छलैक। कामिनी स्नान पूजन कए लेने रहथि।महामाया सेहो तुलसीमे जल ढारि टेबुल पर आबि गेली। कामिनी जलपान आ' टिफिन तैआर कए लेने छलीह। माएइ संगे बैसि खएलनि, आ' कहलथिन–'जाए छी माए।' सब दिनुका चर्या छलनि। बेटीकेँ बहराइत एवं स्कूटीकँ स्टार्ट करैत महामाया उदास भए गेनीह।हम नहि छलहुँ तँ कतेक बेसी सुन–सनाटा रहैत हेतैक। बड़ मोह उपजलनि। कने काल बैसलि रहलीह तखन अंगनइ दिसका कोठली दिस गेलीह। जहिआसँ अएलीह तहिआसँ एक्को बेर ओमहर ध्यान नहि गेल छलनि। विचारलनि, ई घर फुजिते नहि छैक। गन्दा हेतैक। आइ देखिऐ, कने साफ–सफाइ कए दिऐक। कोठली बाहरसँ ओहिना बन्द छलैक। महामाया फोलि कँ प्रवेश कएलनि कि हुनका चकबिदोर लागि गेलनि। कोठलीमे एकटा पैघ चमचमाइत पलंग छलैक। जाहि पर नीलरंगक साटनक फूलदार बेड कवर ओछाओल छलैक। दू टा गोदरेज अलमारी छलैक, टेबुल छलैक, पोथी राखक रैक छलैक आ' कम्प्यूटर सेहो कवर लगाओल राखल छलैक। पतिआनीसँ जूता, आ' चप्पल सभ छलैक, सेहो पुरखाही। सभ वस्तु चमचमाइत जेना एखनहिं गर्दा पोछल गेल हो। खिड़की आ' दरबाजाक परदा साफ आ' भारी छलैक। महामाया टेबुल लग गेलीह। आ' एकटा भरिगर डायरीक प्रथम पृष्ठ उनटौलनि? लिखल छलैक मोट आखरमे – महेश प्रसाद। ओ ठामहि कुर्सी पर बैसि गेलीह। कुर्सी पर गद्दा छलैक। बैसला पर देखलनि, पलंग पर बेड स्वीच छैक, ओ दाबि देलखिन। भक् दए इजोत भए गेलैक। एकटा रंगीन लैम्पशेडसँ छनाएल प्रकाश कोठलीमे पसरि गेलैक। सोफा जे कोनमे राखल छलैक, से जगजगार भए गेलैक। महामायाकेँ कौतुक सुझलनि। ओ सोफा पर जाए बैसलीह। वाह! केहन कोमल गद्दा छैक आ' केहन रेशमी खोल। सोफा पर बैसला उत्तर महामायाकँ एहि कोठलीक इतिहास भूगोल सूझय लगलनि। मनजीत बाबू ई अंगनइबाला तीन कोठलीक घर रहय लेल एकटा वयोवृद्ध महिलासँ किराया पर लेने रहथि। डाक विभागक हिनका जोगर जे क्वार्टर छलैक से खाली होएबामे समय लगलैक। ई घर एकटा बड़का कोठीक एनेक्सी छलैक। महामाया ढहल ढनमनाएल एनेक्सीकेँ साफ सुथरा कए चमन बना देने रहथि। फूल–पत्ती, साग–भाजी रोपने रलीह। मनबोध बाबू अचक्के चल गेलाह तँ ओही घरमे रहि गेलीह महामाया। वयोवृद्ध महिलाकेँ दू बेटा आ' बेटी कोठीकेँ अपार्टमेंट बनबए लागल, सभ गोटा जतय ततय चल गेल। माएकेँ एही

अंगनइबाला कोठलीक भरोसे छोड़ि गेल। महामाया ओहि वृद्धाके ँ अपनहि माइ जकाँ सेवा केलथिन। कोनो सन्तान देखय नहि अएलनि। मुइला पर श्मसान लए जएबा लेल अएलनि आ' वस्तुजात समेटि लए गेलन्हि। कोठरी ओएह छैक। फर्श आ' देबाल बदलल छैक। महेशुआक सर-सामान छैक। कामिनी आ' महेशक संग सँझुका पहरक चाह पीबैत महामाया पुछलथिन-' अनका मकानके ँ एतेक साज-बाज किएक केने छी? अनेरे पाइ बुकलौं?'

-'कोन मकान? ई तँ कामिनी कीनि लेने छथि।'-महेश कहलकनि। महामायाके ँ धक् सन लगलनि।' हमरा कामिनी कहलनि नहि? किएक?' कामिनी ओहिना चुपचाप बैसलि रहलि।

-'ई घर रजिस्ट्री भेना छओ मास भेलैक, माँजी । छोटछीन पूजा सेहो भेलैक। कामिनी! अहाँ माँजीकेँ कहलिअनि नहि?'

-'आब कहितिअनि।' माइ कने अप्रतिभ भए गेलथिन।

कामिनी अपना जीवनक एहन अहम् फैसला माइसँ पूछिके ँ नहि केलखिन। आब सभसँ पैघ निर्णय सेहो बिनु पूछने, बिनु कहने करतीह, सएह बुझाइत अछि। मुदा से पच्छ हम होमए नहि देब।

'कामिनी, महेश! हम अहाँ सभसँ एकटा बात कहू?'

'कहू ने।' महेश बजलाह। कामिनी चुप्पे रहलीह।

अहाँ दूनू गोटे एक दोसराक संग एतेक दिनसँ छी, समतूल छी, तँ बियाह कए लीअ।'

'जी?'

'की जी?'

'अपने सत्ते कहै छी?'

'सोलह आना सत्त।' - अनायास कामिनी माइक कान्हपर माथ टेकि देलनि।

'माइ छी बाउ! हमरा कोन? अहीं सभक सुखमे हमर सुख। जे सन्तान, सभ सन्तानक माइक तोष रखलनि तनिका पीड़ा दए हम कोन मुहेँ परलोक जाएब, कोन समाद कहबनि कामिनीक पापाके ँ। उठू बियाहक ओरिऔन करू।'- महामायाक आँखि डबडबा गेलनि। मुदा, मुख-मुद्रा अपार सन्तोषसँ उदभासित छलनि।

सम्पर्क :

मो. 09334391006

1, आदर्श कालोनी,श्रीकृष्णनगर,

पटना-800001



पीपनी पर नोर

✍ सुशील

हम आ' हमर मीत शर्माजी बेसी काल भोर खन नदी कातमे घूमय चलि अबै छी। एहि उपनगरीय क्षेत्रमे एहि उद्देश्य लेल ई सभसँ उपयुक्त स्थान छै। एतयसँ ओतय धरि आगू-पाछू जेम्हर मोन होअए, घूमि लिअ। जगह-जगह पार्क आ' जगह सभ बना देल गेल छै। नदीमे जौं भाटा रहलै तँ हरियर दूभिक कालीन जमल-पसरल भेटत। जहाँ कतौ जगह भेटल कि बैसि जाउ। सुस्ता लीअ। गप हाँकि लिअ। जहाँ-तहाँ बैसल चोंचमे-चोंच मिलौने मुस्किआइत, हँसैत आ' गम्भीर चिन्तनमे डूबल जोड़ सभकेँ देखि लिअ। एक आध जोड़ाक कहिओ-कहिओ अश्रु पूरित नेत्र सेहो देखयमे आबि जाएत।

हमरा दूनू गोटेक ई नियम एहिना नहि बनि गेल अछि। दूनू गोटेक एक्के डाक्टर छथि। हुनका बिचारे ब्लड शूगरके ँकाबूमे रखबाक लेल आधुनिक चिकित्सा पद्धतिमे ई बहुत उपयोगी उपाय साबित भए रहल छै। हम आ' हमर मीत, दूनू गोटे ब्लड शूगरक रोगी छी। डॉक्टर एकटा आर बहुत सुन्दर बात कहने छथि जे आन उपचार एवं नियम निष्ठाक संग कमसँ कम दस मील प्रतिदिन घुमने एक-डेढ़ बर्खक बाद दबाइ छोड़य पड़ि सकैत अछि। एहि बातक असरि दूनू गोटे पर बहुत पड़ल। मीत छथि बड आसकती लोक देहके ँ नारब-चारब सभसँ कठिनाह काज बुझाइत छनि। दुइयो डेग रिक्शेसँ चलै छलाह। मुदा हमर आग्रह आ' संग हुनका बाध्य कए देलकनि। हमरो तँ एकटा संगी चाहैत छल। हमरा लेल तँ आर पजबहि पएर। बतिआइत-सतिआइत दूनू गोटेक रस्ता आ' समय अबूह नहि लगैत अछि। ओना हंगामा लोक हुगली कातमे घुमनाइ सँ लए केँ व्यायाम, जौगिंग आ' रामदेव बाबाक अनुलोम-विलोम, कपाल-भाति आ' अन्य योगासनमे संलग्न रहैत अछि। किंतु शर्माजी सन मीत संगमे रहने बात किछु आर रहैत अछि।

हमरा टोलक पएरा आ' गंगा कातक रस्ताक मिलन पर पहिल दिन हम वामा हाथ दिस मुड़ले रही कि मीत धुकचुकाइत मना कएने रहथि 'ओम्हरे चलब?'

फेर मोनमे कीं भेलनि, से पता नहि। बेसी तारतम्यमे नहि ओझरा वामे दिस आगू बढ़ैत बाजल रहथि-'अच्छा चलू। कोन्हरो चलू। टहलबासँ मतलब अछि।'

एहि बातकेँ तखने बिसरि गेलिऐ।

डॉक्टरक बातकेँ गीरह बान्हि प्राय: बेसी काल दूनू गोटे संगे-संगे घूमय जाइ छी। मुदा, दस मील घूमब सम्भव नहि भेल शुरूमे। छह-सात मील मुदा पुरा दिऐ दूनू सांझ मिलाकेँ । किछुए दिनक बाद मीत खनहन मोने बजला-'आइ तहन भए चलय दस मील'।

'आह, एहूमे मीन-मेष? डॉक्टरो तँ बूझत जे हम सब मात्र दबाइये फांकयमे विश्वास नहि रखै छी।

'हँ-हँ, देखिऐ तँ अजमा केँ । मीतक उत्साह द्विगुणित भए उठलनि। 'धुत, किये ने हेतै! हम तँ पनरह-पनरह मील तक घुमने छी'। हमर बेधड़क उत्साहवर्धक समर्थन झूठक सहारा लेअएमे आगू-पाछू नहि सोचने छल। पाछू जहन अख्यास भेल तँ सोचलिऐ तँ सन्तोष भेल जे एहन झूठक सहारा लेअएमे लाभ छोड़ि हानि नहि छै। एतयसँ जहाँ धरि घूमय जाइ छी, चारि बेर नित्यप्रति से जोशमे ठीक आठ बेर भए गेलै। हम कहलिअनि,'मीत, किंछु सांझो लेल छोड़बै ने?'

हमरा सभक घरमे सभ सूतिकेँ उठिते छै सात-साढ़े सात बजेक बाद। तेँ घर पहुँचबाक चिंता आने दिन जकाँ छल। कियेक तँ हमरे सभ पर नित्यप्रतिक जिम्मा रहैत अछि तीमन-तरकारी, दूध-मांछ आ' घरक फरमाइसक अगरम-बगरम कीनब-बेसाहब। नहि तँ ऑफिस आ' इसकूलक रूटिन गड़बड़ा जेतै ने। एमहरेसँ घुरैत काल से सब कीन लै छी दूनू गोटे।

हँ-हँ चलू। बूझि गेलिऐ आब। आगिला रविसँ दस मील भोरेमे पुरा देबै। रवि दिनकेँ कि होली डेक दिन धियापूताक हाथ बाट रहै छै। निफिक रहब।' मीत कहलनि।

अगिला रविकेँ बेसुरतामे आर बेसी चला गेल तँ बिचला बैसार पर तहिना बैसियो रहलिये बेसीक काल दूनू गोटे। थाकि जे गेल रहिऐ बेसी, से उठबाक मोने नहि भेल। एतबे मे एकटा बुढ़हा छँड़ी टेकैत हमरे सभ दिस दुघड़ल अबैत सन बुझा पड़ला। ओ दूर सँ बजला, 'आइ पकड़ा गेलौं शर्मा जी। बड्ड छिंटकल घुरै छी अहाँ। हम केहन लस्सा छी, से बूझबै आइ।' 'देहमे सक्क छै नहि, आ बोलीमे टेसी केहन!' हमरा मुहसँ तत्क्षण निकलि गेल।

नामे ओ हमरा सभ लग पहुँचि गेल छला। ओकरा स्वागत मे शर्माजी उठिकेँ ठाढ़ भए गेल रहथि। ओ बुढ़हा कने ठिकिया केँ हमरा देखैत बीचमे बैसबाक उपक्रम कएलनि तँ हम कात दिस डोलैत जगह बना देलिअनि। बैसते-बैसते ओ बजला,'हमरा बारे मे तहन अहाँ नहि जनै छी। एहन टेसी नहि रहैत तँ डी.आइ.जी. रैंक तक पहुँच सपने रहि जाइत। रोब जमबयमे अबाजक बड महत्व छै। आ' ताहिमे पुलिस विभागमे? सब गुण अछैत बोली रहत पठरू सन मेमिआइत तँ सब गुण गोबर! की यौ शर्मा जी?

हम तँ लाजे गड़ि गेल रही जे अपना भरि तँ हम नहुँएँ सँ बजलिऐ, मुदा बुढ़हाक कोनो 'सिक्स बाइ सिक्स' छनि से की पता?

बुढ़हा मुदा हमर मन:स्थिति बूझि गेला। हमरा लजाएल सन देखि कहलनि 'कोना बात नहि। एना भए जाइ छै। रिमार्क देब मनुष्यक सोभाव छै। हमरा तकर कनिको दुख नहि अछि। हम केहन लोक छी से शर्माजी जनै छथि। हिनका सँ बड पुरान परिचय अछि। हम रही एहि थानाक प्रभारी, आ' शर्माजी, ओ जे बम्मा देखै छिऐ ठाढ़, ओही फैक्ट्रीमे एडमिनिस्ट्रेटिव इंचार्य। आब तँ दूनू गोटे दोस्तियारे जकाँ छी।'

ओ कने गुम भए गेला, आ' फेर कहय लगला, 'हम बड कलुषित लोक छी। साओन-भादवक मेघ जकाँ उमड़ि-घुमडिकेँ हमर कृत्य सब सता रहल अछि। उपकारो तँ केनहिं छिऐ लोकक। मुदा विश्वास हेतै ककरा। ई लाइने तेहने छै। बर्दी पहिर लीअ तँ राक्षस। उतारि लिअ तँ मनुक्ख। लोक विश्वास कइए लेत तँ हमरा मुक्ति भेटि जाएत? नहि ने? मुदा, तैओ सज्जन लोक पाबि मोन हल्लुक कए लै छी। थोड़बो काल लेल आत्माकेँ सन्तोष भेटि जाइत अछि। कने काल लेल जीवनसँ मोह भए जाइत अछि।

ओ फेर गुम्म भए गेला। हमरा लागल जना बेसिये बजा गेलनि हमरा सभ अपरिचित लोकक लग। तेँ तकर पश्चाताप छनि, अथवा तकर काट सोचि रहल छथि। ई बात सोचिते रही कि 'शर्माजी तँ सबटा कहनहि हेता?' ओ बेलागि भए पुछिए देलनि हमरा झन्न दए माथमे उठल। हम विस्मित भए गेलौं।

'नहि, नहि! बस आंइये एखने अपने सँ जतबे सुनलौं, बस ततबे। जानबा-सुनबाक रूचि तँ परिचिते लोकक बारेमे रहै छै ने?' हमर सहज जबाब तत्काले हुनका भेटलनि।

'हँ, से तँ अहाँक बाजबे सँ साफ अछि। तेँ कने खुलयमे हमरो असौकर्य नहि भेल। शर्माजी पर कैक दिन नजरि पड़ै छल। संगमे अहाँकेँ देखि होइ छल जे अहाँ गेस्ट छिअनि। तेँ अनेरे बाधा देब ठीक नहि बुझाइ छल। मुदा, आइ मोनमे पक्का भए गेल जे अहाँ गेस्ट किन्नहु नहि भए सकै छिअनि। ककरा समय छै आइ-काल्हि जे अतेक-अतेक दिन पहुनाइ करत। आन दिन अहाँ सब बैसतो कहाँ छलौं अतेक काल एतय। एक दिन तँ जावत अपना गेटसँ निकली-निकली, अहाँ सब नदारद। सभसँ पैघ कारण तँ ई जे अहाँ सब बड़ सकाले निकलै छी। हम तँ सुतिये केँ उठै छी, आठ बजेक बाद। तेँ, तँ नहि पकड़ाइ छलौं अहाँ सब। अच्छा चलू हमरा घर। नौ बाजि रहल छै। हमरा दबाइ लेबाक समय सेहो भए गेल। चाह बनि रहल अछि। कहि आएल छिऐ।'

अतेक बाजि केँ डी.आइ.जी. साहेब ठाढ़ भए गेला। शर्माजी संगे लागल ठाढ़ भए हमरा दिस तकलनि। आब आगू-पाछू सोचय लेल बाट कहाँ बांचल छल हमरा लेल।

डी.आइ.जी. साहेब छड़ी टेकैत डेग आगू बढ़ा देने छला। अगल-बगल आ' आगू-पाछू होइत हम दूनू गोटे हुनकर संग देबय लगलिअनि चुपचाप। डी.आइ.जी. साहेबक छड़ीक मृदु ठक-ठक चुप्पी

के॑ मुदा खटकय नहि देलक। अन्दाज इएह लागल जे छड़ीक गोरामे लागल रबड़क टोपा खिआ गेल छैं। नहि तँ कतबो पक्का रस्ता किये ने होइ, छड़ीक क्वालिटी देखि एना ठकठकाएब सम्भव नहि भए सकै छै।

गेटक भीतरमे प्रवेश कए डी.आइ.जी. साहेब हमरा दिस उनटि के॑ देखलनि। हम तखन गेटक बाहरे कने दूर बनबैत टुघड़ैत सन रही। हम अपना गतिके॑ कने आर मधिम बना देलिऐ।

सीढ़ी पर दए उपर चढ़ैत काल ओ दुनू गोटे अगल-बगल भए के॑ पएर उठबैत एना बुझएला जेना लतमारा सभ पर गनिगनि चढ़ि रहल होथि। हमहूँ कने पछुआएले सन हुनकर सभक गनती के॑ जाँच करैत सन डेग उठबय लगलौं। कारण, सीढ़ीक चकरैयो तँ ततबे रहै।

सामने हालमे पैसिते नजरि पड़ल सोफा पर बैसलि यौवनसँ परिपूर्ण, करीब तीस-बत्तीसक औन-पौनक जिनगीक सभ तरहक अर्थ प्रदान करबाक क्षमता राखयबाली युवती पर। हमरा देखिते ठाढ़ि भए गेलि ओ हम बिल्कुल नव लोक जे रहिऐ ओकरा लेल। ओकर स्मित सिक्त ओष्ठ-पल्लव किंचित विगलित भए गेलै से मात्र शिष्टतावश। कियेक तँ डी.आइ.जी. साहेबसँ ओकर आँखि मिलिते ओकरा मुखाकृति पर एकटा अभिभावकक डांट पसरैत देरी नहि भेलै। 'घड़ी देखियौ तँ? की अहाँ के॑ अपना दबाइ खेबाक चाँकि नहि होएबाक चाही?'

डी.आइ.जी. साहेबक मुह-मुस्कीक संग खुजि गेलनि, 'अरे, एक आध दिनसँ फर्क नहि पड़ै छै। शर्माजी सन प्रिय लोक कतय पाबी। ई बेचारे से एकटा नीक लोक भेट गेला। हमर सौभाग्य।'

हम शर्माजी दिस तकलिअनि। ओहो हमरा देखलनि।

डी.आइ.जी. साहेब अपना आराम कुर्सीपर बैसि गेला। हमरा सभके॑ ठाढ़े देखि बजला, 'एना किए शर्माजी? अहाँ तँ नव लोक नहि छी?'

हमरा दिस तकैत अपना बामा कातक सोफा पर बैसबाक संकेत केलनि। हम आ' शर्माजी ओहि पर बैसि रहलौं।

युवती तीन टां गिलासमे पानि धए गेली। लगले ‍फेर तीनटा ट्रे मे सैंडविच सेहो।

'अहाँक नाओं की भेल श्रीमान?'

'वेदप्रकाश।'

'वाह, की सुन्दर! अहाँक माइ-बाप निश्चय सुसंस्कृत रहल होएताह। ओ लोकनि छथि तँ ?'

'नहि, गोलोक वासी भए गेल छथि।'

'वेदप्रकाश जी, हम दिन-दिन बिसरभोर भेल जाइ छी....।'

'ताहू मे सन्देह'–हमर दूनू ठोर कने उपर-नीचा भए उठल।

'किछु कहलिऐ अहाँ?'

'नहि, नहि, कने अन्यमनस्क भए गेल रही।'

'हँ तँ हम जे कहैत रही जे परिचयक आरम्भ तँ नाओं सँ होइ छै ने? से पुछब हमरा आब प्रभोजनीय बुझाएल अछि। ओम्हर सामनेमे देबाल पर देखियौ ओ दूनू फोटो, हमर बेटा-पुतहु छथि। दूनू छथि एम. डी.। एकटा पोता आ' पोती, से अछि। कोरा-काँख लेब ककरा कहै छै, से सेहन्ता लगले अछि। कोरैला बच्चा कोरामे कोना पैखाना-पैशाब कए दै छै से सुख नहि बुझलिऐ। अपन सभ किछु छनि। अपन नर्सिंग होम, से छनि। हम एतय आन डॉक्टरसँ देखबै छी।'

कहैत-कहैत हतप्रभ भए गेला डी.आइ.जी. साहेब। फोटो पर सँ नजरि ससरि गेलनि। हमरा दिस ताकय लगला। आ' भीतरक शेष क्वाथ निकालय लगला।-'हमरो संग तँ मजबूरी छल। हमरो बैटा 'व्रती' भए गेल रहथि। हम पढ़य लेल तँ॑ बाहर पठा देने रहिअनि। 'व्रती'क अर्थ बुझिते हेबै? हम अपना व्रतीके॑ बचा लेलौं। पूरा परिवारके॑ एक तरहसँ बचा लेलौं। की ई अपराध भेलै? माया ममताक जड़ि परिवारे होइ छै ने? अपन-अपन बूझब-सीखब लोक एतै सँ सीखैये ने?'

ओ कने फेर चुप भए गेला। भीतरक क्षोभ मुहपर पसरि गेलनि। हमरा बगलमे शर्माजी सोफा पर पाछू भरे ओङठि के॑ पसरल आँखि मुनने औंघाएल सन बुझाइ छला।

'शर्माजी, राति निन्न नहि भेल की?'–डी.आइ.जी. साहेब पुछलथिन।

'आइ तीने बजे निन्न टूटि गेल। फेर निन्नो कहाँ भेल'–शर्माजी सोझ होइत बजला, आ'फेर हमरा देखलनि जेना कहय चाहतै रहथि–'एहन झूठ, झूठक श्रेणीमे नहि अबै छै। ई बुढ़बा जे कहैऐ सुनि लीअ चुपचाप।'

'हमरो बेसी राति निन्न उचटि जाइये। अहाँ के॑ तँ सभटा बुझले अछि शर्माजी! हिनको किछु-किछु कहि दिअनि। सज्जन लोकके॑ कहने बड़ सन्तोष भेटै छै....

.....हँ तँ वेदप्रकाशजी, एहि जन्मक फल हमरा एही जन्ममे भेटि रहल अछि। ई नान्हिटा बात नहि छै। अगिला जन्म लेल रखबे किये करू?.... वेदप्रकाश जी, अहाँके॑ पुनर्जन्ममे विश्वास अछि?'

एहन अप्रत्याशित प्रश्नपर हम कने सकपका तँ गेलौं। मुदा तैओ अपनाके॑ सम्हारलौं तँ तत्काले प्रत्युत्पन्नमति संग देलक–'कोनो नियामक धारणा नहि पोसने छी। ओना पाप जे करय, से ने सोचय ई सब।'

हमर ई बात हुनका नीक जकाँ छुलकनि, ताहिमे मिसिओ भरि सन्देह नहि। ओ बकर-बकर सामनेमे नीचा उतरैत सीढ़ी दिस ताकए लगला, आ' हमर टुकुर-टुकुर हुनका जे, जे घड़ी ने जएबाक आदेश भेटि जाए कहबी नहिं छै, 'सड़लो भुन्ना, रहुक दुन्ना से भय समा गेल छल हमरामे।

शर्माजी हमरा बगलमे निश्चिन्त भए आँखि मुनने आराम फरमा रहल छला। हमर आशंका बढ़ि रहल छल।

डी.आइ.जी. मुदा फेर सहज रूपे॑ कहब आरम्भ कएलनि तँ प्रकृतिस्थ भेलौं।

'छोड़ू एहि सबके॑। एकर सभक निर्णय ने भेलैए, ने हेतै। ई सब मनुक्खक दिमागिक प्रपंच छै। सबटा ठकहरा बुद्धि। हम तँ एतबे

बुझलिऐ जे जिनगी बौआएब छोड़ि किछु नहि छै। चर्वाक तेँ कहने छथि–'ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत।'....

.....श्रीमान् अहाँ महाश्वेताक '2084क माँ' पढ़ने छी? ... नहि ने? ठीके नहि पढ़ने होएब। एकबेर अवस्स पढ़ब। शर्माजी पढ़ने छथि। हमही देने रहिअनि किताब। इच्छा होअए तँ अहूँ लए जा सकैछी। अहाँ घुरा देब पोथी, से विश्वास अछि। दूटा एहिनामे 'पर हस्ते गता-गता' भए गेल'। ई तेसर प्रति अछि। धृष्टता लेल माफ करब।'

कहैत-कहैत आराम कुर्सी पर ओङठि गेला, ओ उपर छत दिस ताकय लगला। आरामक स्थितिमे सोचब कि मोन पाड़ब सुविधाजनक रहतनि, तेहने सन स्थिति हमरा बुझाएल। हम किछु आर सुनबा लेल उत्सुक भए गेलौं। आ' तेँ हमर नजरि हुनका परसँ एम्हर-ओम्हर नहि भेल।

डी.आइ.जी. साहेब बड़बड़ाइत सन, मुदा स्पष्ट शब्दमे, बाजय लगला–'एकछेहा न्यू ब्लड। स्कूल-कॉलेजक छात्र सब। बारह-तेरह सँ लए केँ बाइस-तेइसक भीतरेक नवछुहिया! जंगलमे जा केँ छोड़ि देने रहिए! गाड़ीसँ उतरि केँ सब नारा देने रहै, 'वंदे-मातरम्! वंदे मातरम्!' पता नहि, की भेलै तकरा बाद!'

डी.आइ.जी. साहेब दूनू हाथे मुह झांपि बच्चा जकाँ फफकए लगला।

'भेलै ने? हम तँ जखने नव लोक अहाँ संग देखलौ तँ मोन छगा गेल छल। अहाँ केँ कहने व्रती सब घुरि औतै? सब व्रतीक माइक नोर कहिआ ने सुखा गेलै'। युवती कॉफीक ट्रे सजौने हॉलमे ढुकिते बजलै। सेंटर टेबुल पर ट्रे रखैत काल नजरि सैंडविचक ट्रे पर पड़लै तँ अकचका उठलि–'ज्जा:, सबटा सेरा गेलै!'

'रहऽ दही। हम सब एहने खा लेब'। डी.आइ.जी. साहेब कहलथिन, तँ ओ चोट्टहि सीढ़ीसँ नीचा उतरि गेलि।

'की कहू श्रीमान्! एकटा भाए पढ़ैत रहै कॉलेजमे। एकरा सब केँ चिन्हितो कहाँ रहिऐ तहिआ! चिन्हितो रहितिऐ तँ कोन फर्क पड़बाला रहै। अपन विवेक साथ दैक तँ देशकेँ पुलिस विभाग रामराज्य बना सकैये! दूनू माइ-धी केँ लए आइए छिऐ। दूनू नीचामे रहै छै। एकर व्याह करयबाक अछि। प्रायश्चित तँ अपना भरि करबे करब। की श्रीमान्, ई उचित कि अनुचित? लोक हमर बात बुझओ कि नहि बुझओ। आकि नहि?'

ओ अपन पिपनी पोछलनि आ' जेना हठात मोन पड़ल होनि, अपन प्लेट उठबैत बजला–'आउ, हम सब नाश्ता करी पहिने।'

हम आ' मीत अपन-अपन प्लेट उठा लेलौं। मीतक लेल तँ रेहल खेहल रहनि। हमर हाथ मुदा थरथरा उठल। मरकौर जकाँ सैंडविच गीरय लगलौं। सेराएल कॉफी चिरैता सन लागल।

नाश्ता करैत काल कोनो गप्प नहि भेलै। मुदा डी.आइ.जी.क लारैत मुहसँ चभर-चभर शब्द सुनयमे अबैत रहलै। चम्मचक टनटन -खटखट ताल मिलबैत रहलै तकर समर्थनमे। बुझाइ जेना कत्तेक -ने-कतेक दिनक भूखल छला ओ।

बिदा होबय काल ओ '2084क माँ' धरा देलनि। हमरा ई पोथी पढ़ल अछि। तथापि लए लेलौं जे स्मृत्तिकेँ नव कए लेब।

रस्तापर थोड़े दूर चलि अएलौं तँ मितभाषी मीत कहय लगला-'बेटा-पुतहु लग रहै छइ एकर बहु। सप्पत खा केँ गेल छै। कहाँ दन चूड़ी फोड़ि लेने छै। सिन्नुर से नहि करै छै।'

एहि छौंड़ियाक ब्याह कैक बर्खसँ करबै छै। असल नकेल तँ छौंड़िया छै। इएह अढाइ-तीन मास पहिने भर्ती छल अस्पतालमे। समाद आएल तँ लाजे-पक्षे जाए पड़ल रहए देखय लेल। अपने कहलक जे बाथेरूपमे खसि पड़ल रहए। भगवाने जानथि!'

छौंड़ियाक देहदशा देखबे किएक केलिऐ? नीचामे बुढ़बाक जिमखाना छै। उपयोग मुदा करै छै छौंड़िया। आब तँ ओकर मितबा से आबए लगलै हे। हिनका छटपटेने हेतनि की! बुझाइए घर लिखबा लेने छै। छौंड़िया। कनिको जान-पहचानक लोकके घोरि-घोरि केँ कहै छै। तें कि लोक विश्वास कए लेतै?जतेक अहाँके कहलक-ए, ततेक सभके थोड़बे कहै छै? घरमे तँ टपहे नहि दै छै ककरो। एकरे दुआरे एम्हर आबय सँ छीह कटैत रहै छी हम।'

मीत चुप भए गेला। कनी दूर चुप्पे रहलौं दूनू गोटे।

डी.आइ.जी.क अरण्य रोदन पर अपन भाए अखिलेश स्मृति-शेष जे जागल छल से एक बेर जोर मारलक। मीतसँ चर्च करबाक जे एकरे प्रभारी कालमे तँ हमर भाए जे गुम भेल, से गुम्मे रहि गेल। मुदा नहि। स्मृतिक अतल-तलमे सूतल अखिलेशके उच्छन्नर देब नहि अरघल।

मीत दिस किताब बढ़बैत कहलिअनि–'लिअ, अहीं घुरा देबै।'

'चलू, ईहो ठीके रहत। हमहूँ ककरो अनके दुआरा पठेबै। काल्हि सँ पाछुए दिस घ्रमय चलब। ओना सुनबे केलिऐ जे आठक बाद उठैये ओ सूति केँ ।

दूनू गोटेक घर समीप आबि गेल छल। अपना-अपना घर दिस दूनू मीतक डेग अपनहि उठि गेल।

सम्पर्क:
मो. 09831263722
गवर्नमेंट कॉलोनी
ब्लॉक ओ, प्लॉट-3,
बजबज, कोलकाता-700137

उग्रह

शिवशंकर श्रीनिवास

स्कूलसँ घूरल अबैत काल जखन जिलाधिकारीक आवास लग अएलहुँ तँ नव आएल जिलाधिकारीक नामपट्ट पर ध्यान गेल। नाम रहैक दिनकर। ई नाम पढ़ितहि लागल जेना हमर कोनो अपन लोकक नाम होअए। मन पड़लाह कथाकार दिनकर। हुनका देखने नहि छिअनि। किन्तु हुनक दर्जनहुसँ ऊपर कथा पढ़ने छी। हुनकर कथा सभक एकटा आकर्षण हुनका देखबाक इच्छा जगौने रहय, किन्तु संयोग नहि लागल। ओना आब पन्द्रहो वर्षसँ ऊपर भए गेल हेतै हुनका कोनो कथा नहि अभरल। तथापि कहिओ-कहिओ हुनक कथा मन पड़ैत ओहो मन पड़ि जाइ छथि।

एक बेर राकेश जी कहलनि जे पूर्णियामे जखन ओ बी.डी.ओ. रहथि तँ दिनकर जी हुनकर एस.डी.ओ. रहथिन। किन्तु हुनकासँ दिनकर जीकेँ कहिओ विभागीय गप्पसँ अतिरिक्त गप्प नहि भेलनि। ओना दूनूकेँ दूनूक कथाकारी, बूझल रहनि।

हमरा मनमे भेल भए सकैए जे दिनकरजीक सेवा उत्क्रमित भए गेल होइन आ' ओ भारतीय प्रशासनिक सेवामे आबि गेल होथि। आगू बढ़लहुँ तँ हमर संगी रामचन्द्र ओकील भेँटल, ओ एतहि जिला न्यायालयमे ओकालत करैए। भेल जे एकरा बूझल हेतै। हम साइकिलसँ उतरलहुँ। दूनू संगीमे हास्यक संग अभिवादन भेल, कुशल-क्षेम भेल आ' हम दूनू सहटि पानक दोकान लग ठाढ़ भेलहुँ। हम रामचन्द्रसँ पुछलिये –''अँय हौ भाइ, ई कलक्टर कत्तक थिकाह?''

''से नहि कहबह। मुदा थिकाह मैथिले, प्रोमोटी छथि। आब एक-दू वर्षमे रिटायरे करताह।''–रामचन्द्र कहलक।

हम दूनू गोटय पान खएलहुँ आ' विदा भेलहुँ। मन मानि गेल जे हो-ने-हो ई कलक्टर ओएह दिनकर जी थिकाह।

दोसर दिन स्कूलसँ घूरैत काल मने-मन साहसकेँ ओङारैत कलक्टर-आवास लग अएलहुँ। फाटकक दूनू कात दू-दूटा सिपाही ठाढ़ रहै, हम ओकरा सभसँ पुछलियै– ''कलक्टर साहेब छथिन।''

ओहिमे एकटा सिपाही पुछलक–''किए? की बात छै?''

हम कहलियै–''कलक्टर साहेब हमर मित्र छथि, सैह कने भेंट करबनि।'' हम ओहि सिपाहीकेँ अपन गप्प कहैत भीतरे-भीतर डरेलहुँ सेहो। शंका भेल ई दिनकर जी जँ ओ कथाकार दिनकर नहि होथि! मुदा, ओ सिपाही फाटक खोलैत कहलक–''जाउ, ओहि कोठलीमे पी.ए. साहेब छथिन, गप्प क' लीअ।'

हम आगू बढ़लहुँ। पी.ए. साहेब कम्प्यूटरपर काज कए रहल छलाह। हम जाइते नमस्कार केलिअनि। ओ काज करैते पुछलनि–''की बात?''

''दिनकरी जीसँ भेंट करबाक अछि।''–हम कहलिअनि।

ओ काज करब छोड़ि हमरा ऊपरसँ नीचा देखैत, जेना हमर परीक्षण करैत रहथि, तहिना देखलनि आ' पुछलनि–''कोन काज अछि?''

''हमर ई मित्र थिकाह।'' हमर गप्प सुनि जेना एकाएक पी.ए. साहेबक आँखि पर सहृदयताक भाव आबि गेलनि आ' ओ हमरा कुर्सी पर बैसबाक संकेत करैत पुछलनि–''साहेब केहन मित्र छथि ?''

''असलमे हमहूँ लेखक छी आ' ईहो लेखक छथि।'' - हम कहलिअनि। ओ माने पी.ए. साहेब कहलनि–''हँ, एहि बीचमे ई किछु पुरान भजनकेँ खोजि-खोजि केँ संकलन कए रहलाहे। ई लेखक छथि से हमरा बुझल अछि।''

पी.ए. साहेबक गप्पसँ हम पुनः सन्देहमे पड़ि गेतहुँ। कारण हमर कथाकार दिनकर जीक कथा पढ़ैत जे भाव होइत छल ताहिमे ओ कथाकार भजन संग्रह करताह, से असम्भव, किन्तु पुनः मनमे भेल जे संत लोकनिक जे भजन मानवीय राग जगबैत अछि ओहन भजन सभक संग्रह करैत हेताह, से सम्भव। ई सोचितो हम दुविधामे रहिये गेलहुँ–जे 'ई दिनकर जी वैह थिकाह, वा....'।

हम दुविधामे रही वा जाहिमे, पी.ए. साहेब बहुतो आत्मीयता प्रगट करैत कएकटा गप्प कहलनि। हम कतबो मना केलिअनि तथापि ओ चाह मंगबौलनि। जखन हम विदा भेलहुँ तँ कहलनि–'एहि पुर्जी पर अपन नाम आ' फोन नम्बर लिखि दिऔक, जखने साहेब पटनासँ औता, हम ई पुर्जी दए देबनि।'

हम ओहि दुविधेमे पुर्जी पर अपन नाम आ' फोन नम्बर लिखि केँ दए देलिअनि। पी.ए. साहेबकेँ यथोचित अभिवादन कए विदा भेलहुँ।

ओकर बाद रवि दिन साँझमे जखन हम टहलि-बुलि घर पर अएलहुँ तँ पत्नी कहलनि–''थोड़बे काल पहिने दिनकर जीक फोन आएल छल।''

''दिनकर जीक?''

''हँ।''

''की कहलिअनि?''

''की कहबनि? गाम पर नहि छथि, से कहलिअनि।''

''ओ की कहलनि, हम दिनकर जी बजै छी?''

''रहथि दिनकर जी तँ की कहितथि?''

''हँ, मुदा अहाँ एकटा बात बुझै छी, ओ कलक्टर छथि, अपना सभक जिलाक सभसँ पैघ हाकिम।''

''से हम की जान' गेलिऐ....।'' - कहि ओ अपन काजमे लागि गेलीह। ओ जाहि उदासीनतापूर्वक उत्तर देलनि से हमरा नहि सोहाएल। मनमे भेल जे ओ एकर महत्त्व नहि बूझि रहलीहे जे एकटा जिलाधिकारी

अपन मात्र नाम कहि हमर खोज कएलनि। हम अपन मोबाइल सेट पर नम्बर देखि कॉल बैक कएलहुँ। ओम्हरसँ आवाज आएल–''प्रणाम, हम पटना चल गेल रही तेँ भेंट नहि भ' सकल। एखनहि अएलहुँ अछि अपनेक नम्बर भेटल। बहुत आनन्द भेल। हम अपनेक बहुत कथा सभ पढ़ने छी। अबियौ बहुत आनन्द हैत।''

हम धन्य-धन्य भए गेलहुँ। मिडिल स्कूलक एकटा साधारण गुरुजीसँ जिलाधिकारी एना सहज गप्प कएलनि, तकर प्रसन्नताक अपूर्व सुगन्धिसँ हमर मन महमहा उठल। सम्पूर्ण शरीरमे नव स्फूर्ति जेना सहजि आएल।

दोसर दिन स्कूलसँ घुरैत काल जिलाधिकारीक डेरापर गेलहुँ, ओ छलाह। बहुत अपनत्व देखबैत ओ स्वागत कएलनि। हमर हुनक पहिल भेंट छल, किन्तु हुनक आदर आ' आर गप्प एना छल जेना हम सभ पुरान मित्र होइ आ' बहुत दिनुक बाद भेंट भेल होअए। बड़ी काल बैसलहुँ। ओहि दिन ओहो आ' हमहूँ दूनू गोटय कएकटा परस्पर कथाक चर्चा कएल। जेना हम हुनक कथाक चर्चा कएल ओ हमर कथाक चर्चा कएलनि।

एहि तरहेँ हम हुनका डेरा पर जाइत रहलहुँ। ओ हमर घर पर तँ कहिओ नहि अएलाह किन्तु फोन यदा-कदा अवश्य करथि। दूनूक सम्पर्क गाढ़ भेल। एहि क्रममे हम हुनक कथाकार मनकेँ उत्साहित करए चाही। हमर इच्छा रहै जे ओ पुन: कथा लिखथि। किन्तु ओ हमर गप्पसँ कन्नी काटि जाथि। हुनक रचनाकार मन इतिहासकेँ निहारबामे आनन्द लए रहल छल। तथापि हम थाकल नहि रही। इतिहासकेँ निहारैत जखनहि हुनकर नजरिमे कनियोँ फाँक देखी बहुत आत्मीयताक संग कोनो तरहेँ कथाक बीज लए केँ ठाढ़ भए जाए। माने 'हे ई लीअ' एकरा कथा भूमि पर रोपि दीऔ।

हमरा दूनू गोटेक दोस्तीक बीच जे कथाकारी संघर्ष रहय ओहिसँ भिन्न संघर्ष हमरा अपन परिवारसँ समाजक बीच सेहो प्रारम्भ भए गेल छल।

एक दिन पत्नी कहलनि–''अहाँकेँ कलक्टर साहेबसँ दोस्ती अछि, बस सैह?''

''किए?'' हम पुछलिअनि।

''आब सिलिण्डरमे गैस लगिचाएल अछि, फेर ब्लैकसँ लेब तँ सात सए लागत आ' ओ चाहता तँ कोटाक रेटमे दिआ देताह। जकर कलक्टर दोस्त रहतै से ब्लैकसँ कोनो वस्तु किए लेत?''–ओ हमरा बुझबैत कहलनि।

''नै, एहि लेल हम हुनका नै कहबनि। हम ब्लैके सँ लेब।''

''तखन दोस्त कथीक?''

हम किछु उत्तर दैतिअनि ताहिसँ पहिने हमर छोट बालक पुष्पक अपन माइकेँ कहलक–'माइ, बाबूकेँ तोँ कथाकारसँ पैरवीकार बना रहलहुन हें। मुदा तखन हिनक कथाकार महत्त्व घटि जएतनि।''

''वाह बेटा, पुष्पक एकदम ठीक कहलक-ए।''–हम ओकर पीठ ठोकैत आनन्दसँ पत्नीकेँ कहलिअनि। ओ एक नजरिये तमसाइत बेटा दिस तकलनि। किन्तु तुरते छाहकेँ रेबारैत रौद जकाँ आह्लाद हुनका मुखमुद्रा पर पसरि गेलनि आ' बजलीह–''जेहने बाप तेहने ने बेटा!''

पत्नी द्वारा उठाओल गप्प आएल-गेल, किन्तु एक दिन करीब एक बजे हमर स्कूल पर अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारी पहुँचलाह। ओ स्कूलक निरीक्षण करैत प्रधानाध्यापकसँ हमर पुछारि कएलनि। प्रधानाध्यापक हमरा कक्षासँ बजौलनि। हमरा जाइते शिक्षा पदाधिकारी उठि केँ, ठाढ़ भए कलजोड़ि हमर स्वागत कएलनि आ' कहलनि–''महादेव बाबू, अपने एहि स्कूलमे छिऐ से तँ काल्हि हम ठीकसँ बुझलिऐ।'- अपने जिला शिक्षा पदाधिकारी महोदय हमरा कहलनि। ''अपने तँ हमर कार्यक्षेत्रक गौरव छीये।'' एहि तरहेँ ओ कएक टा बात कहलनि। मुदा हमरा हुनका गप्प नीक नहि लागल। ठीक ओहिना जेना पटनामें एकटा मित्र हमरा एकटा गद्दीदार पलंग पर सूतय कहलनि। भरि राति हमरा नीन्द नहि भेल। करोट फेरैत रहि गेलहुँ। तहिना अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारीक गप्प हमर मगज केँ भीतरे-भीतरे असहज कए देलक। हुनक गेलाक बाद प्रधानाध्यापक कहलनि–''हिनकासँ सतर्क रहब। ई कतो फँसा सकैत छथि।''

हम प्रधानाध्यापककेँ किछु उत्तर नहि देलिअनि। अपन वर्गकार्यमे लागि गेलहुँ, किन्तु अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारी ई बात बूझि गेल छथि जे जिलाधिकारी हमर मित्र छथि आ' हमर प्रशंसा एहि हेतु ओ करैत छलाह जे हिनका कोनो काजक लेल हमरासँ पैरवी करेबाक हेतनि, से बात मनकेँ मथैत रहल।

एहि बातक एक-दू दिनुक बादक घटना थिक। हम एकटा चाहक दोकान पर चाह पीबाक लेल साइकिलसँ उतरलहुँ कि आगूमे एकटा कार रूकलै। ओहिमेसँ एकटा सम्भ्रान्त व्यक्ति उतरलाह आ' अभिवादन करैत सहटि आबि कहलनि–''मास्टर साहेब, अपनेसँ किछु गप्पक काज अछि, चलल जाए जलपान-गृह, ओतै गप्प करब। हम कहलिअनि –'नहि, एतहि एहि कातमे गप्प कए लैत छी।'' ओ पुंन: जोर देलनि किन्तु हम एक कातमे आगू बढ़लहुँ तखन, ओहो हमरा संग कात अएलाह। ओहि भद्र पुरुषकेँ हम जनैत नहि छलिअनि तेँ पहिने हमहीं पुछलिअनि–''अपनेकेँ चिन्हल नहि?''

''हमर नाम थिक शुभेन्द्र सिंह। बेगूसराय हमर घर अछि। हम अपनेक जिलामे किछु काज सेहो करै छी। जाहिमे कएकटा रोड हमर बनाओल अछि। सभटा ठीके छल, एहि बीच जहिआसँ ई जिलाधिकारी अएलाह अछि, हिनका हमरा विरुद्ध केओ-केओ किछु कहि देलकनिहें। ताहीमे एक एकटा रोड फँसि गेल अछि। एहिमे, अपनेक किछु मदद चाही।''

हम हुनक गप्प सुनि सन्न रहि गेलहुँ। हुनक मुह दिस हम टुकुर-टुकुर ताकए लगलिअनि।

ओ माने शुभेन्द्र सिंह हमर चेहरामे अपन अनुकूल भाव पढ़ि कहलनि–''अपनेक सेवा हम अवश्य करब, कही तँ साँझमे हम अपनेक डेरा पर आबी।''

''नहि अपने गलत बुझलहुँ हमरा। हमरा हुनक जिलाधिकारीसँ कोनो लेना-देना नहि अछि। हमर ओ साहित्यकार मित्र थिकाह। बस।'' कहि हम अपन साइकिल लेबय विदा भेलहुँ। ओ हँसैत कहलनि–''ठीक छै, एक दिन हम डेरे पर अबै छी तँ गप्प करब।''

हम आब चाहो ने पीबय लगलहुँ, विदा भेलहुँ। कने दूर गेलहुँ तँ हमर गामक फेकन झा भेटलाह। ओ ईशारासँ साइकिल रोकैक लेल

कहलनि। हम उतरलहुँ। ओ कहलनि–''मास्टर साहेब, शुभेन्द्र ठीकेदारसँ गप्प करैत छलहुँ, से सावधान। ई कतेको खून कने अछि। एकरा जालमे नहि फँसब, एकरा पता लागि गेलै जे कलक्टर साहेब अहाँक संगी थिकाह।''

''नै....नै....फँसबाक कोनो बात नहि छै।'' – हम कहलिअनि।

''सैह सावधान क' देलहुँ हें।'' – फेकन झा कहलनि। हम हुनका कोनो बात नहि कहि विदा भेलहुँ। देहमे किछु दर्द बुझना गेल, मुहमे किछु तिताइन सन स्वाद। मन-मने सोचलहुँ। ज्वर तँ ने भए गेल अछि।

गामपर अबैत-अबैत मूनहारि साँझ भए गेल छलैक। दलान पर लालटेन जरैत छल। चारि-पाँच गोटय बैसल देखेलाह। हम दलानक आगू साइकिल ठाढ़ कए दलान पर चढ़लहुँ। देखल, भैरव बाबू, श्रीमोहन मिश्र, अमृतनाथ मिश्र, पुरान मुखिया ओ दूटा युवक प्रदीप ओ कौशल छलाह। हमरे दलानपर हमरे स्वागत करैत भैरव बाबू कहलनि–

''मास्टर साहेब, हमरालोकनि किछु पहिने आबि गेलहुँ से गलती भेल, खैर! अहाँ थाकि कें अएलहुँ हें, पैर-हाथ धौ, जलखै-तलखै करू। काल्हि रविए छै। बेर खसला पर हम सभ आएब।''

''किए, बैसियौ ने! कने चाहताह.....?''

''नहि.... चाह आङनसँ आएल छल, पुष्कर स्वागतमे छलाह। आब काल्हि....।'' – पुन: भैरव बाबू कहलनि।

''कोनो काज?'' -हम जिज्ञासा कएलिअनि। ''हँ काज...मुदा काल्हि कहब...।'' कहैत भैरव बाबू उठलाह। हुनका संग सभ उठि गेल।

जाइत-जाइत श्रीमोहन मिश्र कहलनि–''मास्टर साहेब कोनो चिन्ताक बात नहि, कलक्टर साहेब अहाँक मित्र छथि, हुनकासँ किछु गामक काज करेबाक अछि....।''

हुनकर गप्प कटैत भैरव बाबू कहलथिन–''एखन गप्प छोड़ू मोहन बाबू, काल्हि आएब तँ फैलसँ गप्प हेतै। मास्टर साहेब की कोनो अनगौआँ छियाह। अपन दोस्तसँ किछु काज नहि करौता, से कोना हेतनि।''

ओ सभ जाइए गेलाह। किन्तु हमर मोन कोनादन करए लागल। ओहि राति, ने खेबामे कोनो स्वाद लागल आ' ने नीने भेल।

भोरमे चाह पीबैत रही। अखबार आएल। मुख्य पृष्ठक नीचला भागक बामा कातमे. मोटगर अक्षरमे बारह जिलाधिकारीक बदलीक समाचार छपल छल। धक्-धक् क़रैत ओहि समाचारकें पढ़लहुँ। ओहिमे दिनकर जीक नाम सेहो रहनि। हुनकर बदली सचिवालयमे भए गेल छलनि।

लागल, जेना सम्पूर्ण शरीरक टहकैत गूर एकाएक बहि गेल होअए। हम फक् दए निसांस छोड़लहुँ।

किन्तु मोन एखनो ख़ूब उलसगर नहि भेल छल।

कने कालक बाद दिनकर जीक फोन आएल–''भाए, अपन टटका कथाक संग पहुँचि रहल छी, हमरो सिदहा लगबा देबैक।''

हमर आह्लादक तँ कथे नहि हो। मनमे लाबा फूटय लागल। खने बैसी, खने बाट दिस ताकी। मनमे होअए, कखन औताह आ' कथा सुनेताह।

सम्पर्क :
मो. 09473147844
ग्राम+पोस्ट: लोहना
सरिसब-पाही,
मधुबनी-847424

'सपनकें नहि भरमाउ.....'

विभारानी

संकटमे स्वप्न! ई केहन अजगुत कथा! मुदा हमरा स्वप्न आबि रहल छै आ' हम चाहै छी जे हमरा संगे-संग अहूँ सभ ई सपना देखी। देखबे टा नहि करू, ओकरा साकार करबामे अपन सार्थक हस्तक्षेप करू। घरमे तँ कोहराम मचले छै। ककरो ने खाए-पीबाक सुधि छै ने पहिरय-ओढ़यक। दू-दू गोट विपत्ति। पन्द्रह दिनक भीतर। एक गोटक काजसँ निश्चिन्तो नहि भेल कि दोसर विपत्ति?

आइ-काल्हि रोग ककरो उमेर आ' हैसियत नहि देखै छै। बस घुमैत-घुमैत जतय मोन होइ छै, सन्हिया जाइ छै। भागक दोख कही कि संयोगक स्वरविहीन पगचाप?

चौंतीसे-पैंतीस बरखक उमेरमे महेशक किडनी खराब। पाइ तँ छलै महेश लग, मुदा डोनर किओ नहि, किडनी रैकेटिंग केर भंडाफोड़ होएबाक बाद लोक आओर कनेक सावधान भए गेल छलै। डाक्टरो सभ कहै छै, परिवारसँ आनू। कानूनी झंझटि सेहो नहि आ' घरक जीन्ससँ रोगीकें आफियत सेहो। महेश बरमहल सुनैत छल जे माइक किडनी बच्चासँ मैच कए जाए छै। अपना एक-दू गोट हित-मित्रक खिस्सो सभ सुनल छलै, एक-दू गोट भेटबो कएल जे माइक देल किडनीसँ मस्त पन्द्रह-सोलह सालसँ जिनगी गुजारि रहल छलाह। आ' भगवतीक दयासँ माइयो ठठगरि, ने केस उज्जर भेलै ने दांत टुटलै। सत्तरि-बहत्तरिक उमेर टपि गेलै, टटका आम जकाँ हरियर, मस्त। गोसाईं गीत गबैत, सोहर गबैत, धानक खेतसँ, खरिहानमे, खरिहानसँ बखारीमे आ' बखारीसँ बजारमे करैत, पठबैत। नाती-पोता संगे खेलाइत-धुप्पाइत।

महेश कहलकै-'माइ! द' दे! माइ तँ जनम आ' जिनगी दून् देबय बाली होइत छै। जनम देनहें छें। जिनगीयो दए दे।'

दीप्ति विरोध केलकै-"एना कतहु किओ ककरोसँ कहै छै? जिनगी छै, पाइ आ' समान नहि?"

महेश खिसिया उठल-"अपना माइसँ कहलौं? कोनो आनसँ नहि ने? आ' माइये नहि बुझतै बेटाक पीर तँ आन के बुझतै?"

-"बूझल, जे माइ बुझतै अपना बाल-बच्चाक दुख दर्द, मुदा एकरा माने ई तोड़बे छै जे बच्चा, माइ से अपन प्राण मांगि लै?"

-'प्राण कतय? मात्र एक गोट किडनी।"

"यदि अहाँ कें एक गोट किडनी देलाक बाद हुनकर दोसर किडनी फेल भए जाए, तहन?"

पुरना खिस्सा सभ झूठ भए गेलै, जाहिमे माइ बेटाक सुख लेल गरा कटबा लेलकै आ' खून चुबैत रस्तापर बेटाकें सावधान कए देलकै -'आह! बेटा, सम्हरिकें! खून पर पैर नहि धरिहह। पिछड़ि जेबह।"

महेशक माँग सँ माइ सावधान भए गेलै। बेटासँ प्रेम छै, मुदा अपन जिनगीसँ सेहो पियार छै। माइ महेशक कोठरीमे जाएब छोड़ि देलकै। कोना कें नहि कहतै। एक दिन कहलकै-"बाऊ रे, दए दितिअऊ। मुदा जौं हमरा किछु भए गेल तँ तोहर बाउजीकें के देखतौ? ई उमेरमे तोँ सभ हुनका दोसर बियाह करय देबहीं? डगराक भाँटा जकाँ एम्हर-ओम्हर भए जेथुन्ह ओ।'

डायलिसिस सप्ताहमे एक बेर। फेर एकसँ दू, आ' दूसँ बढ़ैत-बढ़ैत दिनमे तीन बेर धरि पहुँचि गेलै। माइ गै! डायलिसिसक कष्ट आब सहन ने होइए।'

"हमरा सँ, अहाँक दुख नहि देखल जाइए। कहियौ बाउजीकें हमर जाँच करबा दौथु। हम दए देब किडनी।" दीप्ति हथियारि रोपि देलकै।

'नञि दीप्ति!.जहन माइ भ' कें ओ नहि राजी छथि तँ अहाँ....'।

'देखियौ, माइ-बापक कर्त्तव्य संतानकें पालि-पोसिकें अपना पएर पर ठाढ़ करब धरि होइत छै, जे ओ सभ केलनि। जिनगी भरि हुनके सभ सँ आस बान्हने राखबन्हि? अपना सँ नहि किछु सोचबनि?'

'मुदा, अहाँ.... हमर जिनगीक कोनो भरोस नहि! एक गोट किडनी पर कहिआ धरि ठठब अहाँ?

'जहिआ धरिक सांस लिखल रहतै। भाग्यसँ बढ़ि कें बेसी ककरो थोड़बे भेटै छै?'

'तइयो...?'

'पत्नीक काज छै, पतिक संग-साथ देब। अहाँक जिनगीए सँ हमर जिनगी, मान-सम्मान सभ छै। बिन घरबालाक एहि समाजमे घरबालीक कोनो मानदान रहै छै?'

'हमर जिनगीक भरोस तँ एहिना नहि अछि, एक गोट किडनी हमरा दए देब। जौं अहूँ कें किछु भ' गेल तँ ई दून् कें के देखत?'

जे तकदीरमे हेतै, हेतै। मोनमे मलाल तँ नहि रहि जाएत ने जे रस्ता रहितहुँ हम किछु नहि कएल। आगाँ भगवतीक इच्छा।'

दीप्ति स्वप्न देखल। सभ किओ स्वप्न देखै छै। महेश देखल, जे माइ दए देतै। दीप्ति देखल जे महेश ठीक भए जेतै।

दूनूक स्वप्न खंडित भए गेलै। ने माइ किडनी देलकै, नहि महेश बचलै। नहि बचलै दीप्तिक् किडनी, नहि ओकर सोहाग आ' नहि सार्थक भेलै ओकर बलिदान!

एक्के मास तँ भेल छलै। एखनि धरि तँ ऑपरेशनक घाओ भरलो नहि छलै, महेशक देह दीप्तिक किडनीकें स्वीकार नहि केलकै, जेना रूसि गेल होअए, नान्हिटा बालक जकाँ-माँ नहि देलीह तँ हम अहाँ सँ नै लेब।' कि कोनो पुरुषप्रधान हठिमे तँ नहि भरि गेलै शरीर-'घरबालीक देहक सहारे आब हम चलब? एक गोटे माउगिक भरोसे। एह! एहेन दिन देखय सँ पहिने मरि नहि जाएब।'

'तँ एक मास पहिने मरि गेल रहितहुँ। कमसँ कम हमर त्याग तँ व्यर्थ नहि गेल रहितियैक?' दीप्तिकें दांती लागि गेल छलै। ओकर देहमे एखन एतेक सको नहि छलै कि छाती पीटि कें भोकासी पारि कानए।

टोला मोहल्ला, नाता-रिश्ता सभटाक जुटान भए गेलै-डबल अभाग। एतेक कम उमेरमे ई सोग, दू-दू टा छोट-छोट बच्चा आ' आब देहो नहि रहलै। एक गोट किडनीक कोन भरोस?

संयोग पर भरोस करी की भाग पर? दुर्दैब जहन घेरे छै, तहन लोक आओर सभसँ, पहिने भाग्य पर पतियाइ छै। अहूठाँ लोक सभ पतिऐलै -'भाग्यक बलिहारी! प्रभुजीक लीला!'

दुइए टा भाए छलै, महेश जेठ आ' छोट रूपेश? रूपेशक सेहो विवाह भए गेल छलै, ओकरो दू गोट बच्चा छलै। पूरा परिवार संयुक्त रूपसँ संगे-संगे रहै छलै। माइ बाप, दून् भाए, दून् पुतौहु, चारू बच्चा। मेलो मोहब्बत बड्ड छलै दून् दिआदनीमे, एकदम सहोदर बहीन जकाँ। केओ फर्क नहिं कए सकै छलै जे ककर बच्चा के?

मुदा तकदीरक फर्क भए गेलै। महेशकें किडनीक दिक शुरू भए गेलै आ' रुपेशक पत्नीकें दोसर संतान बेर मे अशुद्ध रक्त चढ़ि गेलै। एहेन ओहेन अशुद्ध नहि-एच.आई.वी. पॉजिटिव।

दूनूक बेमारी एक-एक करोड़क, कमेबाक सभटा भार आब रूपेश पर। बाउजी जतेक देर बैसि सकैत छलाह, बैसि जाइत छलाह, दोकान पर। माइ दीप्तिक संगे-संगे घर-गृहस्थी आ' पोता-पोतीमे लागल रहै छलै। इलाज होइत गेलै, दूनूक देह गलैत गेलै। महेशक दून् किडनी फेल, श्रद्धाक रक्त एच.आई.वी. संक्रमित श्रद्धा की करय?

एक बेर सभकें भेलै-'केस करी अस्पताल पर। बन्द करबा दी एहन-एहन अस्पताल, जे रोगी सभक प्रति एतेक लापरवाह। कि ब्लड बैंककें कोर्टमे घसीटी। बगैर जांच केनहि दानकर्ताक रक्त लए लेलकै? पता नहि कतेक एहेन श्रद्धा सभ संक्रमित भए रहल होएत? ओकर सखी सविता सेहो तँ एही अशुद्ध रक्तक बलि चढ़ि गेलै।

मुदा के लड़तै केस-मोकदमा? लेबयमे जतेक तत्परता रहै छै, पाइ सँ लए कें जान धरि, देबामे ओतबे आलस्य, न्याय की एतेक जल्दी भेटि जेतै? बैगन आ' कदुआ छै? कोर्ट कचहरी, ओकील -मोकदमाक चक्करमे पड़ी कि ओकर नान्हि-नान्हिटा बच्चा सभकें देखी? मरीज देखी कि ओकरा लेल डॉक्टर आ' पाइक ओरिआन करी कि कोर्ट कचहरीमे चप्पल चटकारी?

ताबत महेशो अस्वस्थ चलय लागलै। आ' लिअ, भए गेलै ओकरो महारोग। आ' आइ एक-एक मासक अंतराल मे तीन गोट घटना। पहिल

मासमे दीप्ति किडनी देलकै महेशकेँ, दोसर मासमे महेश चलि बैसलै दीप्तिक किडनी अस्वीकारैत, आ' पंद्रहे दिनकेँ भीतर श्रद्धाकेँ गीरि लेलकै एच.आई.वी पॉजिटिव रक्त।

माइ-बाप कोना धीर धरै? दीप्ति कोना धीर धरै? रूपेश कोना धीर धरै? चारू बच्चा कोना धीर धरै?

धरतै, सभ किओ धरतै। धीर तँ, धरैये पड़ै छै। दीप्तियोकेँ धरय पड़तै आ' रुपेशोकेँ, धियोपुताकेँ आ' माइ बापकेँ सेहो।

मुदा सपना एक गोट एहीमे से जन्म लए लेलकै। एक गोट संभावनाक चद्दरि बढ़ैत-बढ़ैत सपनाक आकाश भए गेलै आ' उमेद करय लगलै एकर पूर्णताक बरसातिसँ।

अहूँ सभ ई सपना देखि सकै छी, एकर पूर्ण होएबाक कामना कए सकै छी। अहीं सभ तँ समाज छी। अहीं सभक बन्धनमे लोक आओर बन्हाएल रहैत छै। सभ किओ मिलि केँ बिनौथु ई रेशमी चन्दोबा, जकरा नीचाँ ठाढ़ भए जाथु दीप्ति, रूपेश, चारू बच्चा, माइ-बाप, जाहि सँ बरिसए अहाँ सभक आशीर्वादक अजस्र धार।

दीप्तिक तकदीर तँ, लिखा गेलै, हिन्दू धर्मक झंडा उठौनिहार नारा लगौने घुरैत रहैत छथि, हमरा सभमे विधवा विवाह? ऊंहूं! असम्भव! आ' धर्मक दोहाइ देबय बाला बिसरि जाए छथि अपन आराध्य ओहि राम केँ, जकरा लए केँ सभ किओ नांगटि रार धरती पर मचौने छथि, जे राम सबहक नाकक प्रश्न छथि, सएह राम अपना हाथसँ दू गोट विधवा-तारा आ' मंदोदरीक विवाह करेलनि, ओहो, बाली, आ' रावणक अपने छोट सहोदरसँ तँ दीप्ति कियैक अपन सम्पूर्ण जिनगी आब एहिना काटथु?..... दूनू बच्चाक मुह देखैत, सास-ससुर आ' देओरक मुह जोहैत, सभटा सुख-अरमानकेँ मोनमे ठेलैत, बस सांस चलबाक वास्तविक ... सभ तरहक अभिनय करैत। आनक हँसीमे हँसैत, आनक दुखमे क...। अपन सुख-दुख, क्रोध, ईर्ष्या सभकेँ चूल्हिमे झोंकैत।

आ' रूपेश? दुख रूपेशोकेँ कम नहि छै। इएह उमेरमे जिनगीक साथीसँ बिछोह– दू गोट ई छोट-छोट जान परसँ माइक हाथ-माथ उठि गेलै। मरि गेलै श्रद्धा बेकसूरे। कोनो सुख नहि दए सकलै रूपेश ओकरा- बीमारी घोषित भेलाक बाद तँ ओकरा लग....!

तइयो रूपेश लग रस्ता छै। माइ बापकेँ सन्तोख भेटि रहल छै। बहुत दिनसँ सभसँ नुका केँ राखल श्रद्धाक बेमारी। छूतक बेमारी नहि रहितहुँ हैजा, पलेग, टी.बी. सँ बढ़िकेँ एकरासँ छूत, एकर रोगीसँ परहेज। पता चलला पर तँ सभटा नाता-रिश्ता, अड़ोसिया-पड़ोसिया सभटा सम्बन्ध तोड़ि नेने रहितिअन्हि। रूपेश सेहो साधुबाला जिनगी जीबि रहल छलै। चलू, आब ओकरा कनेक सुख भेटतै। दूनू बच्चाकेँ माइ सेहो भेटि जेतै। दीप्तिक मादे किओ नहि सोचि रहल छै, मारे एही लेल ने, जे ओ एक गोट स्त्री छै, एक गोट विधवा आ' विधवाक अधिकारमे नहि छै पुनर्विवाह।

अहीठाँ सँ तँ स्वप्नक ई बीज बहरेलै। जेना रूपेशक मादे सोचल जा रहल छै, की दीप्तिक मादे नहि सोचल जा सकै छै? एके समान तँ स्थिति छै, ओहो जीवन साथी विहीन भए गेल अछि। ओकरो दूनू बच्चा पितृविहीन भए गेलै, रूपेश आ' ओकर दूनू बच्चा लेल सभ किओ सोचि रहल छै तँ की ओकरे जकाँ दीप्ति आ' ओकर बच्चा लेल नहि सोचल जा सकै छै? रूपेशक दूनू बच्चाकेँ माइ भेटै तँ की दीप्तिक दूनू बच्चाकेँ पिता नहि भेटि सकै छै? दीप्ति आ' रूपेश दूनूक उमेरे की? लगभग एक्के। ओकरो दू टा बच्चा, एकरो दू टा बच्चा। ओकरो पति नहि, एकरो पत्नी नहि। ओकर बच्चा लग बाप नहि, एकर बच्चा लग माइ नहि। तँ की ऐहन भए सकै छै जे एक्के घरक, एक्के उमेरक एक गोट विधुर आ' एक गोट विधवाक सूत्रक आपसमे जुड़ि जाए? चारू बच्चाकेँ घरहिमे पिता आ घरहिमे माए भेटि जाए। चारू बच्चाक संगे दीप्ति आ' रूपेशक जिनगी सेहो आबाद। दीप्तिक बलिदान स्वर्णाक्षरमे भने नहि लिखल जाए, मुदा ओकर त्यागक किछु प्रतिदान तँ ई घर चुकाबय। विधुरक विवाह तँ कोनो अजगुत कथा नहि। एक गोट विधवाक पुनर्विवाहक रामक काज आब राम भक्त सभ तँ करथु। अहाँ सभ समाजक नियामक नियन्ता छी। सोचू आ' देखल स्वप्नकेँ साकार करू।

इएह सपना मोनमे करोट पर करोट फेरि रहल ए। सूतय नहि दए रहल-ए, कल नहि पड़य दए रहल-ए। हिम्मत सेहो नहि भए रहल ए दीप्ति लग ई प्रस्ताव रखबाक, रूपेशकेँ ई कहबाक, माइ बाउजीकेँ बूझेबाक। मुदा नहि, हिम्मति तँ करहि पड़त। हमरा बूझल ए जे समाजक एतेक मजबूत निषेधकेँ दीप्ति एक्के बेरमे नहि काटि फेंकि देत। बहुत सम्भव छै जे हमर प्रस्ताव ओ हमरे मुह पर मारि दियए। मुदा ताहि सँ हम की हिम्मति हारि जाएब? अहाँ सभमे सँ किओ आगाँ बढ़िकेँ हमर मदति कए सकै छी? ऊहह! एम्हर-ओम्हर देखियौ, अपने अगल-बगल एक ने एक गोट दीप्ति, एक ने एक गोट रूपेश भेटि जाएत। हमर स्वप्न अपना मोनमे भरू आ' अपन मोनक स्वप्नकेँ हुनकर जिनगीमे उतारि हुनक जिनगीमे कुमुदिनीक फूल बिछा दिअउ। ई स्वप्नकेँ हवा दिअउ, पानि दिअउ, खाद दिअउ। स्वर दिअउ, फूल दिअउ, फूलय दिअउ, पुंकेसर दिअउ, परागकण दिअउ। सपनाकेँ भरमाउ नहि, ओकरा साकार करू, साकार।

सम्पर्क :
e-mail gonujha.jha@gmail.com
Mobile : 09444914237



थेथर

ततहु काज बस दौड़ल जाए, दैछ जतै सब क्यौ लुलुआए। दै गरदनियाँ धैनहुँ टीक, हटै न जे से थेथर ठीक।

–कविवर सीताराम झा

पसाही

✍ अखिलेश कुमार झा

आइ फेर अपना अतीतमे हुलकी मारि सुदीप बेस गम्भीर भए गेल छल, ओकरा, मुखमण्डलकेँ एकटा सघन उदासी घेरि लेने छलै। ठोर पर एकटा गहींरगर चुप्पी छलैक। मोन–मस्तिष्क पर अवसाद ओ शून्यताक छाड़ल साम्राज्य छलै। सुदीपकेँ हृदयक घाओ जे समयक संग चोखाएल जा रहल छलै, कोना नोचा गेलै।

विभिन्न प्रकार दृष्टान्त अशोककेँ दैत सुदीप बड्ड सान्त्वना दैत छलै, अशोक आ' सुदीपक ई मित्रता परोपट्टामे एकटा उदाहरण छलै आ' सुदीप अशोकक कष्ट हरि लेबाक लेल व्याकुल छल।

एम्हर अशोककेँ बूझि पड़ै जेना ओकर लक्ष्य अलोपि भए गेल होइ आ कि आगू बढ़वाक बाटे भोतिया गेल होइ।

अशोककेँ एहि संकटसँ उबारबाक सुदीपक सभटा प्रयास व्यर्थ भए जाइत छल। अशोकक करेजमे लागल पसाही मिझेबाक नामे नहि लैत छलै, आ' ओहि पसांहीमे ओ तिल–तिल केँ जरै छल। संगहि, अतीतक सभटा दृश्य सिनेमाक रील जकाँ मानस पटलकेँ झकझोरि दैत छलै। कंचनक संग बीताओल गेल प्रत्येक पल मोन पड़ि जाइ आ' अशोकक हृदयक जुआड़ि वीभत्स भए उठै छलै।

एकटा एहनो समय छल जखन दूनू एक दोसरक संग जीबा –मरबाक सप्पत खेने छल, परञ्च विधिनाक लिखल किछु आने चीज छलै। कंचन आ' अशोकक प्रेम कथाक मध्य नहि जानि कोना एहन बिरड़ो उठलै जे दूनूक जीनगी भालरि जकाँ काँपय लगलै । निर्दयी समाजक आँखिमे दूनूक पवित्र प्रेम काँट जकाँ गरय लगलै। समाजक शकुनी लोकनिक आत्मा इर्ष्याक आगिसँ दग्ध होअए लगलै आ' ओ सभ अशोककेँ सशोक बना देबाक लेल उताहुल बनि गेल छल आ' सदिखन उपद्रव करिते रहै छलै।

अशोक जखन पहिले बेर कंचनकेँ देखने छलै तँ ओकर सुसंस्कृत व्यवहार, अनचिनहार लोकसँ लजा केँ चट दए आँखि झुका लेब, मिथिलाक संस्कृतिसँ भरल ई व्यवहार अशोककेँ बड्ड आकृष्ट केने छलै। कॉलेजमे कंचनकेँ कतेको बहिनपा सभ छलै जे सदिखन तितली सन उड़ल फिरै छल मुदा ओ सभ अशोककेँ प्रभावित करबामे विफल भेल छल। कंचनसँ पहिले भेंटमे अशोककेँ बुझेलै जे कोनो ज्योति पुञ्ज भेटि गेल हो, जे लक्ष्य धरि पहुँचबा मे भरि बाट मार्ग–दर्शन करतै। बहुत दिनसँ हिक्क गड़ल छलै। अशोककेँ रातुक नीन्न दिनुक चैन हेरा गेल छलै। सदिखन अन्यमनस्क, हेरायल रहए लागल छल आ' जँ कोनो अन्तरंग गप्प जे ओकर मोनमे ओझरौठ उत्पन्न करै तँ ओहन गप्प अपन अनन्य मित्र सुदीपकेँ कहल करै आ' सुदीप यथासम्भव समाधान करै छल। अशोकक मोनमे एकटा गप्प बड्ड दिनसँ घुरिया रहल छलै, हिम्मत कए ओ कंचनक फोन डायल केलक। कंचन अनठिया आवाजसँ अकचका उठलि। अखियासलक। डेराइते फोन पर अशोकसँ गप्प केलक। अशोक भेंट करबाक इच्छा व्यक्ति केलक। ना–नुकूरक बाद कंचन स्वीकृति देलकै। निर्णय भेलै जे कक्षा समाप्त भेलाक बाद मोती महलसँ सटले उत्तर पोखरिक मोहार पर स्थित राधाकृष्ण मन्दिरक एकान्त परिसरमे भेंट करब। गप्प सम्पन्न होइत देरी कंचनक माइ कोनो पड़ोसीक घरसँ घूमि कँ अएलीह। घड़ी साँझक पाँच बजा रहल छल। कंचनक पिता सेहो कार्यालयसँ अएलाह। कंचन फोन रखैत निःसांस छोड़लक जे ओकर एहि वार्तालापकेँ सूचना ककरो लग नहि गेलै आ' घरक सामान्य गतिविधि आने दिन जकाँ चलैत रहल। प्रातः भने कंचन समयसँ कक्षा पहुँच। कक्षा निर्धारित समयसँ शुरू भए समय पर सम्पन्न भेलैक। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार कंचन आ' अशोक एक दोसरक सोझाँ मोनक बात प्रकट केलनि आ' सुदीप एकर प्रत्यक्षदर्शी बनल। कंचन अशोकसँ ई आग्रह केलनि जे ई गम्भीर विषय थिक, तेँ निर्णय लेबाक हेतु समय दिय। तत्पश्चात् दूनू अपना–अपना घर पहुँचि समयक प्रतीक्षा करय लगलाह। कंचन अशोकक सम्बन्धमे अन्वेषण कए संतुष्ट भए अपन स्वीकृतिसँ अशोककेँ अवगत करौलनि। ई सूचना भेटलाक बाद अशोककेँ बुझेलनि जेना जिनगीकेँ एकटा प्रकाशपुञ्ज भेटि गेल हो। आइधरि जे कंचन आ' अशोक मात्र नीक मित्र छलथि, आब निःस्वार्थ प्रेमक तन्तुक डोरसँ बान्हल प्रेमी युगलमे बदलि गेलाह। आब क्रमशः हिनकालोकनिक प्रेमकथा नित नव आयाम प्राप्त करै लागल आ' आगू बढ़य लागल। मुदा नहि जानि कियेक आ' कोना एहि प्रेम तपस्यामे विघ्न आबि दूनूक खुशहाल जीवनक स्वच्छ आकाशमे जेना घनघोर घटा छाड़ि देलकै। कंचन एहि प्रसंगमे अपना माइसँ चर्चा केने छल। आ' माइक स्वीकृति भेटल छलनि। किन्तु पिताक निर्णयक सम्बन्धमे ओहो सशंकित छल। एम्हर अशोक अपना माइ–बापक एकमात्र सन्तान छल। ओकरे खुशीमे सभकअपन खुशी बुझैत छल। एहि समाजक परम्पराक अनुसार प्रथम पहल कन्या पक्षहिसँ होएबाक छलै।

कंचनक अनुरोध पर ओकर माइ ओकर पितासँ एहि विषयमे गप्प चलेबाक कोशिश केने छलाह। मुदा भावीकेँ किछु आओर स्वीकार छलै। ई गप्प सुनिते कंचनक पिता बेस गम्भीर भए गेला। ओ देहातमे बेटीक विवाह नहि करए चाहैत छलाह। संगहि, परिवार सेहो अधिकारी वर्गीय पृष्ठभूमिसँ चाहैत छलाह। एम्हर कंचन आ' अशोक एक दोसराक बिनु जीबाक स्थितिमे नहि छल। ई जानकारी भेटिते कंचनक पिता ओकर

विवाह बलपूर्वक आनठाम करौलनि आ' एहि तरहेँ एहि प्रेम कथाक दु:खद अन्त भए गेलै।

एक दिन अशोककेँ फोन कए कंचन अपन विवशता कहैत-कहैत हबोढ़कार कानय लागलि आ' कहलकै, -''अशोक! हमरा एहि स्थितिमे घुटन बुझा रहल अछि, यदि हम अहाँ सँ कएल वादा पूरा नहि कए सकलहुँ, अहाँक नहि भए सकलहुँ तँ एहिसँ नीक मृत्युक वरण करब हम बुझै छी।'' अशोक सान्त्वना दैत कहलकै , ''एहन अशुभ बात जुनि बाजू। हम अहाँक विवशता बुझै छी, अहाँ अपना परिवारक मर्यादाक पालन प्रेमक बलिदान दए कँ कॅलहुँ, जे एक कीर्त्तिमान थिक। हमर चिन्ता जुनि करू। हम अहाँकेँ मोन पाड़ैत शेष जिनगी काटि लेब, अहाँक खुशीक कामनासँ अपन घाओ भरि लेब।'' ई कहैत अशोककेँ बुकार लागय लगलै आ फोन काटि देलक। मोने-कुमोने कंचन तँ सासुर विदा भेलीह। अशोक जीबैत लाश बनि गेल। हृदयमे लागल पसाहीमे जरय लागल। ई सूचना जहिना सुदीपकेँ भेटलै, ओ अशोककेँ ढाढ़स देबय पहुँचि गेलै। ओकर जीनगीकेँ पटरीपर अनबाक अथक प्रयास करैत छल। एहि क्रममे सुदीपकेँ मोन पड़ि जाइछ पाँच साल पहिलुका ओ घटना जाहिमे ओकर करेजक टुकड़ा शिखा असाध्य रोगसँ ग्रस्त भए गेलै, डॉक्टर खून चढ़ौलकै। सुदीप अपना देहक खून तक देलकै मुदा शिखा एकटा अन्तहीन यात्रा पर विदा भए गेलि। हुनका लोकनिक प्रेममे मानव बाधक नहि अपितु ई विधाते नहि चाहै छलाह। अशोक तँ यदा-कदा कंचनक मुह देखियो केँ सन्तोष कए सकैत छल। मुदा सुदीपक तँ हृदयक ज्वाला बेसी भयानक छलै। तकर चिन्ता त्यागि ओ अशोककेँ धैर्य देबाक प्रयास करैत, भरोस दैत, ओकरा एकटक निहारैत, ओकरा आँखिमे अपना अतीतकेँ निहारि रहल छल आ' हृदय पसिझैत छलै। ओ कतौ हेराय गेल छल।

सम्पर्क :
मो.-09955704969
ग्राम+पत्रा. ननौर
भाया-रुद्रपुर, मधुबनी
पिन-847411

❁

कविता

यात्रा

✍ पद्मश्री डॉ. बिलट पासवान 'विहंगम'

यात्रा हमर नीक छल
अएलहुँ!
मुदा
सर्वोत्तम योनिमे,
अवतरित भेलहुँ।
दुख-सुखक भंडार पर
नाग-नागिनक फन पर
नाचि रहल छल
खंजन चिरैया।
ओहि स्थान पर
वासगीतक धरोहर भेटि गेल
भ' गेलहुँ राजा
राज्याभिषेक उपरान्त
सोनाक राजमुकुट
सेहो पहिराओल गेल
ज्योति कलश
छलकै लागल,
पसरि गेल इजोरिया!
विस्तार भ' गेल
स्वर्णिम सूर्य कण-कण
परसि गेल काल-चक्रक कील पर-
विश्वासक प्रसाद।

अन्तिम पराव-
भेटि गेल
सच्चिदानन्द रूपम्
शिवो हम शिवोहम।

सम्पर्क :
पटना

❁

पटनामे छठि

✍ अजित कुमार आजाद

एक

शहरसँ दूर
घाट
घाटसँ दूर
गंगा
गंगासँ दूर
पवित्रता
पवित्रतासँ दूर
लोक
तखन
छठि करबाक अर्थे की?

दू

छत पर अपियारी
अपियारीमे पानि
पानिमे मैया
थर-थर कपैत
मैया गंगामे नहि
बाथरूममे
टंकीक जबकल पानिसँ
नहायल रहथि
किनसाइत तेँ
दर्शन देबा बेर सूर्ज
चरि मंजिला मकानक अढ़ भ' गेला।

सम्पर्क: -
मो-09234942661
21, एम.आई.सी. हनुमान नगर,
पटना-20

❁

गीत

✍प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'

गीत 1

तन तरणी चलै हँसक चालि
मन–भरनी तोर मुक्त कपारि
केशक बन्धन खोल अबोल
बेशक अनुखन खसइत डोर
धाक्–धिनक–धिन ताक तोरे बिनु
मरू–खरू–जरू–भरू नन्द–किशोर
धक् धक् जियरा मन्द–विभोर!

हिनक–तिनक–हे किनकर छोरी
झिनक–झिनक ई नाच किशोरी
के बरू उचरय बजबय ढोल
नाचि–नाचि करय कत कलरोल
प्राक–प्रखर–पीन्हि ताक तोरे बिनु
तनु–तरणी चलै छन्दक छोर
धक्–धक् जी करै नन्द–किशोर!

आय कैल अछि ई निश्चय
बाजब सबटा नञि कंए भय
जे अछि भीतर बाहर खोल
प्रेम–प्रीति केर खर अनमोल
आब तोरा बिनु खीन–कपोल
ठहरि गेल अछि सब कलरोल
तन्द्रा तोरू नन्द–किशोर!

धाक्–धिनक्–धिन आब दिनक दिन
धुक–पुक करइत करि करजोड़
मन–भरनी चलै छन्दक छोर
आबहु बाजू नन्द–किशोर!
धक्–धक् जियरा मन्द–विभोर!

गीत 2

हम नहि जानल
छलहुँ नुकायल
हमरहि भीतर कतहु अहाँ
नहि हम बूझल
नहि ई सूझल
सदिखन एहिठाँ छलहुँ अहाँ

आइ कत' छी गेल केहन ठाँ
पूछि–पूछि थाकल ई नयना
हवासँ पूछल गाछ–बिरिछसँ
रहि–रहि बेकल छइ चैना

आब जखन ई जानि गेल छी
पता–ठेकान की छनि हुनकर
भेल जखनसँ पागल पवना
तकै हेरायल ध्वनि हुनकर
हम नहि जानल एतहि नुकायल
छइ ओ शब्दक जाल कहाँ
हम नहि बूझल ई नहि सूझल
हमरहि भीतर छलहुँ अहाँ।

बाहर बरखा भीतरो बरखा
सगरे पानि–पानिकेर ज्वार
नद छइ रूसल नदीकैं दूसल
कतहुँ नहि सूझै आरक पार
आँखि ने थाकल ताकि–ताकि कैं
छइ ई शब्दक ढाल कहाँ
हम नहि बूझल छलहुँ नुकायल
हमरहि भीतर कतहु अहाँ ।

सम्पर्क :–
मो. 09434050218
प्रति कुलपति सह निदेशक
रवीन्द्र भवन, विश्वभारती, शान्ति निकेतन
पिन–731135

मैथिलीमे गजले जकाँ

✍गंगेश गुंजन

1.

कोनो एक क्षण कोना कखन इतिहास बनैत छै
बूझल भेलय आब जीवनक एहि पहरमे
सौंसे दुनिया अपन-अपन आकांक्षाक अन्हड़
क' रहलए निर्यात सोहनगर वस्तु घर-घरमे
लोकगुणक, बोधक विवेक सबहक परिभाषा
गड़ल जा रहल नव संस्कृति मधु मिलि जहरमे
आब गाम सन गामो बनल धर्मक हिंसागृह
सम्प्रदाय-दंगा-धर्मक छल हेंज जे बसल शहरमे
निष्ठा-प्रेम-प्रसंग भेल गेलए राजनीतिक चर्या
भोरे पहरक कैल प्रतिज्ञा बिसरल बेरु पहरमे
सम्वेदना सड़ल अचार फूटल बोइयाममे राखल
सब स्वाद-रस-आस्वादन आश्रय लेलक अवसरमे
कूटनीति आ' राजनीति विश्वनैतिक तेहन प्रबन्धन
अफसर भेटत राजनीतिमे नेता सब अफसरमे
ओ छथि कतहु प्रवासी कोनो यू.के., यू.एस.ए.मे
जनिक भूमि ई से निष्क्रिय छपकल अपना घरमे
काज ने बुद्धि करनि गुंजनकेँ लागल ठकमूड़ी
एहि षड्यन्त्रक मोशकिल काटब जाल असकरमे

2.

ओना संसार तँ सुन्दरे-सुन्दर
केहन विचित्र एहिमे किछु ने ह्मर
से दिन कतेक पुरानो भ' गेल
ओ जे क' गेल हमर अमृत जहर
ताही दिनसँ तँ मन बड़ उदास
सतत सवाल करय हम छी ककर ?
केहन जोखिमसँ भरि गेलै ई बाट
कतेक ओझराएल जाइ तँ कोम्हर
एही दुविधा आ' सोचमे डूमल
आब रहि जाय ई चित्त पहर-पहर
कोनो अदृश्य आ' दामी वस्तुक
लागय नीलाम-घर हो दिल्ली शहर
आब बाँचल अछि दोस्त कहाँ
चैनसँ काटी से दलान, कोनो ठर
बहुत पियास त्रास लागल अछि
आ' कतेक दूर एखनो अप्पन घर
कोनं उमीद वा आशाकांक्षा
ताही सूर्यास्त संगे सब डूबल स्वर
ओही सम्बोधनक अमर लिलसा
हाँकि रहलए राति-दिन बाटे पर
चलैत-चलिते जाइत रहलौं
आइयो अछि तप्त भूमि तरबा तर
की करथि सोर ककरा गुंजन
भ' गेलय लोक गामसँ बाहर।

3.

अपन सब किछु बेकहल
दु:ख की तहिना रहल
कतेक तरबा बालु-धूरा
मे चलैत पकिते रहल
समयपर इच्छा मोताबिक
एक घोंट ने जल भेटल
हम रही संतुष्ट खोपड़ी
सँ कहाँ चाहल महल
सब स्थिति किएक तदपि
रहल ई जीवन जहल
सांझसँ पहिने अन्हार ई
देखि केँ ई सब कहल
मानलौं हम धीरजक अन्त
अपन तँ सबटा कहल

4.

सोना-चानी-हीरा-मोती
एहि सबटासँ दामी रोटा

के रोपैयें गहुम-मकै-धान
राजनीति नीक गाजाक खेती
ओना तँ सब सन्तान एकरंग
मुदा कनीक नीक हो बेटी
अनुनय-विनय चंचल भाषा नहि
काज लए धार पड़त नरेटी
अपन काज स्वयं अछि आदर्श
गाँधी तँ नहि बुझलनि हेठी
नव चलनिमे बड़ किछु छूटल
सैंति कँ राखब पुरनो पेटी
नान्हि-नान्हिटा सुन्नरि छौंड़ीक
कहाँ देखब दू जुटिया चोटी
गंगेशोक से एकटा बेटी
अहुँक चारि बर्खक तँ पोती

5.

ककर दु:खसँ पागल छी
एतेक रातिसँ जागल छी
वृषोत्सर्गक बच्छा सन
अनकर स्वर्ग लए दागल छी
हम कोन जेलक कैदी
फाटक तोड़ि कें भागल छी
केहन मनक कोन सपना
पूरा करय मे लागल छी
ई तँ मन अछि नीक जकाँ
अपने लोकक त्यागल छी
थाकल अछि ई प्राण बहुत
कतेक रातिसँ जागल छी
अपन हाथ किछु अछि कहाँ
सूती, बेबस जागल छी
लागल फेर अपन जीवन
कुर्ता खुट्टी टाँगल छी
पूरा केलौं सफर कोना
गुंजन अजब अभागल छी

6.

कतेक पैघ हमर उपकार केलौं
एहन अकिंचनसँ प्यार केलौं
ढहल खसल पड़ल मुरूतकँ
रचल हमर तकरा ठाढ़ केलौं
छल फुर्सति तँ मुदा मने नहि
एक बेर जीवा जोग आर केलौं
हम थकनी आ' निराशामे पस्त
फेर लड़ै लए अहाँ तैयार केलौं
हम छोड़ि आएल रही जे निर्जन
से मरुस्थल जगजियार केलौं
केहन विडम्बना जे जीवनमे
हम पतझर अहाँ बहार देलौं
दिव्य बड़ अहँक स्मृतिक इजोत
सत्यकें चीन्हक औजार भेलौं
जे चुप छलाह गुंजन कहियेसँ
फेर गएबा लए उपचार केलौं।

7.

हमर ग़जलमे बहुत रास आब दिल्ली अछि
भने अनुभूति मन कहब वैह मैथिली अछि
केहन जिनगीक चैन-मैन सब ओ बात सहज
बदलिकँ भेल मिशीन कहाँ खिलखिली अछि
सेहो युग छल जकर प्रतिपल जीवित स्पन्दन
आइ तँ बाँचि रहल स्मृतिक झिलमिली अछि
से युग पल-क्षण बीतय जीवनसँ नहाएल
आइ तकर स्मृति अथाह झिलमिली अछि
सेहो समय तँ एही जीवनक छल पटना-युग
सबटा कविताक से संसार एत' खाली अछि
स्नेह-व्याकुल कंठें सोरो करी ककरा गुंजन
एत तँ डेगे डेग सबकँ किछु हरबड़ी अछि

8.

अहाँक बात तँ अहाँ जानी
अनेरे भेल हमर बदनामी
ओना तँ चुप रहबाक सप्पत छल
किछु बीतय दु:खमे नहि कानी
से निबाहल नहि तँ ई दुनिया
गढ़ैये नित्य नबे नब कहानी
जे भेल, भेल एक रती तमाशा
तँ एहि लेल रागा-रागी ने ठानी
तंग बड़ हाथ मोन विकल अहुँक
बजार नित्य महग भेल की आनी?
तैयो अनुरोध अहाँक दोखी हम
वचन रहय ने ठोढ़ पर आनी
कहथि कोना सुखाएल पान लिय

9.

दुर दुर छीया छीया छीया
अपना घरमे पैसारी क' गेलय एक अनठीया
आन कोनो नहि बात लाभ कामनाक कारण
धुरखुर पर बाड़ल जाय अनकर माटिक दीया
स्नेह प्रेम सौहार्द लगा देलौंहें भरना
देखब बेचि घरारी एक दिन खेत-पथारो सबटा
प्रेमक मार्ग काँट कुश उपजल खद्धा-खुद्धी
पड़ल उत्थर स्वच्छन्द बाट ध' लेलक परकीया
लतखुर्दनि सम्बन्ध स्वकीया, अभिनन्दित परकीया
फिरीशान छथि लोक अपने स्वजन लोकसँ
पूछि-पूछि हलकान कहू तँ यह काहे को कीया
आब समाजक रुचि रुझान अपने दोसर दिस
तुच्छ बात पर झगड़ा-झंझटि कतेक हो तसफीया
तें हमरे नहि अछि गुंजनोक चित्त आन्दोलित
प्रति पल मन विरुद्ध युगमे जरैत रहै छनि हीया

10.

एक बेर फेर इन्तिहान लिय
प्राण हाजिर अछि फेर जान लिय
स्नेह आ' यत्नसँ बनाओल घर
पसिन्न नहि दोसर मकान लिय
हम मंगलौं ने किछु से मने हएत
अहां चाही हमर जहान लिय'
गीत-मीत कविता छुटि गेल
आब की अछि हमरा की दिय
ई वसन्तक साँझ वैह आगाँ
सुखाएल वृक्षक वर्षा स्नान लिय
छथि मोसकिलमे केहन गुंजनजी।

सम्पर्क :–
मो.09899464576
फलैट सं. 74 डी, कंचनजंघा अपार्टमेंट ,
सेक्टर-53, नोयडा-201301



गजल

✍ डॉ. राजेन्द्र विमल

1

जिनगी अछि मरि गेल, मृत्यु ई जीबैत अछि
हम ने चली, जेना बाटे चलैत अछि
सपनाक पर्वत दिस डेगे बढ़बै छी कि
सनकल-सन जिनगी ध'-ध' पटकैत अछि
खुरलुच्ची बच्चा सन भाग्यक हम टिकुली छी
खेल-खेलमे पकड़ि हमरा नथैत अछि
उड़बैत अछि हवामे, थपड़ी पाड़ैत अछि
खसैत छी आहत भ' फेर सँ गँथैत अछि
भेल जे अन्हरिया तँ अप्पन विरान भेल,
अपने परिछाँही रहि-रहि डेरबैत अछि
हिम्मति के हमरो देखू कमाल 'विमल',
तकरे पियाबै छी दूध, जे डसैत अछि।

2

फैसला ने होइत छैक खेलक मैदानमे
कटिहारीक लोक करत फैसला मसानमे
हारि-हारि जीतैछी, जीति-जीति हारै छी
असली जुआरी छी, खेलै छी शानमे
जिनगीक कबड्डीमे, हूकब ने अंतधरि
छूअब हम पाली, बंजैछी अभिमानमे
नाथए जनै छी नाग, गेन अपन छीनि लेब
हमहीं बसैत रही, कृष्ण भगवानमे
लिखलहुँ जे आखर, से मेटा सकत काल नहि,
अपन विजय-गीत लिखब, धरा-आसमानमे

3

गोधुलीक बेर भेल, सूर्य ढलि रहल छै
डुबबासँ पहिने धरि, सूर्य चलि रहल छै
एसगर अछि सूर्य आ' एसगर जरैत अछि
तिलतिल जरैछ मुदा सृष्टि पलि रहल छै
लहरि-लहरि स्वर्ण बनल, एक किरण छुबिते
विन्दु-विन्दु ओस, सूर्यमे बदलि रहल छै
उषा-किरण-चुम्बनसँ, नलिनी-दल विहुँसल,
ढलैत सूर्य कुमुदिनीक पलक मलि रहल छै
आओत पीढ़ी दोसर आ' उगत चांन-तारा
से सोचि हिया सुरुजक रहि-रहि मचलि रहल छै
अन्हरियाक छातीकेँ चीरि उगत काल्हि सूर्य
इएह आशमे धराक दिन बदलि रहल छै
झाँपि सकल 'विमल' सूर्य, ककरा सामर्थ्य छै
गरजै ने मेघ, ओकर दिल दहलि रहल छै।

4

की भेलै जे किकिया उठले, गाम-शहर आ' गली-गली
बारूद-सनके मँहकि रहल अछि, फूल-फूल आ' कली-कली
गुम्बदटा ढहलै अछि घरके, नेओं एखनं धरि पुरने अछि
अपने घर भड़भड़ क' ढहतै, नेओं उखारए चलू चली
एहि खत्तामे घेंघी, मछरी, उपला-उपला मरि रहलै
कोरि-कारि केँ पोखरि बनबी, सड़ल पानि चलू बदली
पलक जे घूमल बामा हम्मर, दहिना दिसि बंकर खुनलक,
हमरा देखि निहत्था खुनियाँ, हमरे घरमे बनल बली
लगलै आब तमस्सा लागत, हुमड़ि रहल छल बाघ जखन,
देखै छी नबको सर्कसमे, एक-एक बाघ बनल नकली।

5

पुरना दरजी कफन-चोर छल, भेल ने ओकरापर बिसबास
नवका दरजी नव कपड़ाकेँ, कतरि-कुतरि कँ कएलक नास
मोटा ढो कँ डाँड़ झुकल अछि, ओकरा लगै छै गदहा छी,
बाजी तँ हन्टर बरिसाबए, जाबी लगा ने दैए घास
हमर खेतकेर जरैए बीहन, नहर पानिकेर बन्हलक ओ,
एक दिन बड़का उधबा उठतै, पटा कँ रहबै अप्पन चास
तोड़ू बज्र-केबाड़, लगा कँ ताला ओ डिस्को चलि गेल,
छूटि-छूटि कँ मरि जाएब एना सब, कहिआ धरि औनाएब साँस
बन्द करू ई नाच, पमरिया बच्चा चौरबए आएल अछि,
किडनी बेचत, खाएत करेजी, नदी कातमे भेटत लाश
झंडाकेर झंझटि बेकार छै, बान्हल मुट्ठी काफी छै
बढ़ैत चलू जनपथ पर एसगर, छोड़ू कोन जुलुस केर आश
फूकि रहल छी एहि लुत्तीकेँ, हम साँझेसँ बिनु थकने,
आँच पजारब, डिबिया लेसब, डाहब कूड़ादानीक रास।

6

अपन फ्रेममे मढ़बा ले, हम्मर फोटो काटि रहल छी?
फ्रेम छोट अइ, फोटो नमहर, जोर-जुलुमसँ साटि रहल छी
ई बरसाती नदी ने चाह्ी, नहरि निकालब अपना गाम,
अन्हरोखेमे चोरा अनेरे, सझिया आरि कँ छाँटि रहल छी?

तिलकोरक तरुआ बड़ सुन्नर, पीज़ाकेर छै अनुपम स्वाद
हम पीजाकेर मजा ज़े लै छी, किए निरर्थक डॉरि रहल छी?
होएत टिकोला, कोसा लगतै, डमहा हेतै, पकतै आम
लोकतन्त्रक केर मज्जर लगिते, झटहा ल' सभ झाँटि रहल छी
हमरा ले ई माता थिक, अछि लाख जन्म बलिदान हमर,
ककरहु लेल मिथिलाकेर धरती, बस किछु हेक्टर मारि रहल छी
हड़पै ले एहि देशक सीमा, कहि ने छुटत मिसाइल कते,
हम भैयारी बँटवारामे तुलसी-चौरा बाँटि रहल छी
घुरू अपन घर, सागे खाएब, भुखल पेट मरि जाएब बरू,
अहाँ व्यर्थमे राजमहलकेर फेकल पत्ता चाटि रहल छी?

7

अन्तिम सहारा छल, लाठी से छूटि गेल
देहेसँ नहि, बुढ़बा मोनोसँ टूटि गेल
खसै छल बौआ आ' चोट लगै ओकरा
से बौआ समाठ ल' कँ बुढ़बाकेँ कूटि गेल
अरग नेने ठाढ़ि जलमे, बुढ़िया हिंचुकैत अछि,
'कत' गेल प्राण हमर, चैन किए लूटि गेल'
बेटा हिसाब मङै बुढ़बासँ पछिला, सब,
बुढ़बाकेर आँखि बहै, घाओ कोनो फूटि गेल
'नहाइतो ने रोइयाँ भगन होइन्ह बाबू केर!
दूनू बेगति चौरचन दिन, कबुलामे जूटि गेल
भरि राति बुढ़बा आ' बुढ़िया हुकरैत अछि
'की भेलै बौआकेँ, कोंढ़केँ बकुटि गेल।

8

हवाक कोनो एकटा, झोंका टाक मेहमान छी
जे समय गुजरि गेल, तकर पैरक निशान छी
अहाँ तिलमिला रहल छी, ठोकर द' चोट खा कँ
हमही दुखी जे बुझलहुँ, हम पाथर बेजान छी
लोकबाक लेल तारा, झोरी, पसारि थकलहुँ,
छी मूर्ख केहन एखनहुँ, तारा ले फिरीसान छी
गुड्डी लड़ाबक स'खमे, गुड्डी कटा लेलहुँ हम
नेने लटाइ हाथमे, तकैत आसमान छी
छाउरक पथारमे लुत्तीकेँ कने तकियौ,
अहीं धधका सकै छी, अहींटा ओ तूफान छी।

9

सपनामे आबि जाइत जखन, बुढ़बा करैए घेओना
हँथोड़ैए खाली बनुली, पोता कहै–'थेलोना!'
जकरा जतेक देलिऐ, टुकड़ी करेज के हम,
ततबे देलक चिन्ता पर लकड़ीक से चढ़ओना
दुनियाक पार हम्मर, दुलहा तकैए रस्ता,
रहि जाएब अहाँ कनिते, भए जाएत हमर गओना
हम आब बुझलिऐ जे, किए नोर होइ छै नोनगर,
उछलै छै दर्द-सागर, छिलकै छै नयन-कोना
धुतहू आ' ढोल बाजत, फरकी लदा कँ चलबै,
मरलेक बाद भेटत, सुख-पिण्ड, सुख-बिछओना।

10

हत्या, हड़ताल, रेप, आओर अपहरण
नवक, नेपालकेर नया ई व्याकरणं
भीतर गन्हाएल अइ, उड़ाहै छी पानि,
शुद्ध कोना होएत अहँक पर्यावरण
भेल साधूकेर चुप्पीसँ गुन्डा बौकार,
राजनीतिक भए रहल अपराधीकरण
भाषा, परिभाषा आ' मूल्य बदलि गेल,
थिक सभ्यताक कोशक नया ई संस्करण
परमाणु-शक्ति-बलसँ ओ शक्ति-राष्ट्र भेल,
तोँ किए पकड़ने छह बुद्धकेर चरण
आब ने कलिंगमे अशोक द्रवित होथि,
किलकै छथि देखि-देखि मानव-मरण
अहाँ छलहुँ ज्ञानी तौं भेल कोना राम
स्वर्णमृगक भ्रममे हमर जानकीहरण
एकटा मनुक्ख सऊँस भेटब कठिन,
परत-परत प्याज जकाँ छैक आवरण
औषधि छै एक मात्र रुग्ण सभ्यताक
करुणा आ' प्रेमपूर्ण अन्तःकरण।

11

जरबएमे खर्च बहुत छै, कए दिहेँ दफन
बेटा कतहु दहा दिहेँ, बिन वस्त्र, बिन कफन
तोड़ि दियौ गोहिया, ई आब खसि पड़त,
उठाउ भव्य भवन, ई दुनियाक छै चलन
अधरतिएसँ अरग नेने, सुरूज ले छी ठाढ़
भोर होइत लागि गेलै, सूर्यमे गहन
देहकँ एहि देशपर, ओकरे छै राज
अछि बैसल सम्राट जे हृदयकेर सिंहासन
भ्रम रामक छल; जरि ने सकल रावणकेर राज
हैत कोना स्वर्णमयी लंकादहन
मरलाक बाद हमर आँखि, साटि घरमे देब,
पोताक मुँह देखब हम भरि-भरि नयन।

12

मारि कँ गरीब, गरीबी मेटा लिअ
महग बहुत छै चाउर, तेँ कफन मङा लिअ
चाही ने बाग, फूल आ' तितलीक ई मेला
अँचिया ले ठाम छोड़ि कँ बंकर खुना लिअ
उजी-उजी खेलए चलू रक्त-बाढ़िमे
सूखए जे धार आर किछु गरदनि कटा लिअ
मृत्यु-द्वारपर मङैछ भीख जिन्दगी,
एहि जिनगीसँ नीक जे चिता सजा लिअ
एहि खेतमे छिटने छलाह, बाप हमर खून,
चलू घृणा छोड़ि, प्रेम केर फसिल उगा लिअ।

सम्पर्क : देवीस्थान,जनकपुरधाम

गजल

आशीष अनचिन्हार

एक

पिपरक पात जकाँ डोलैत लोक
सिम्मरिक तूर जकाँ उड़ैत लोक
सृष्टि बनि गेल भुतहा गाछ
सांझ-भिनसर ओझाकेँ सहैत लोक
नोर मानल गेल गंगाजल जकाँ
नोरहिसँ जिनगी धोबैत लोक
धनी मने चरबाह कानून भेल पेना
उस्सरि खेतक दूभि चरैत लोक
देव-दानवक डर मानलो जाए
अपने डरें छुल-छुल मुतैत लोक।

दू

गप्प जखन विआहक चलल हेतैक
गरीबक बेटी बड्ड कानल हेतैक
गोली लागल देह दशो दिशामे
कुशलक खोइंछ कतौ बान्हल हेतैक
डेग-डेग पर निद्रादेवीक प्रचार-प्रसार
केना कहू जे केओ जागल हेतैक
सड़ि गेलैक एहि पोखरिक निर्मल पानि
युग-युगान्तरसँ नहि उराहल हेतैक
विश्वास करू समान कम नहि देत बनियां
बाटमे बाट भजारल हेतैक।

तीन

साओन भादवमे सुखा गेल धार
एक ठोप पानि लेल बिका गेल धार
पानिसँ बाढ़ि छैक कि बाढ़िसँ पानि
अपने पानिसँ दहा गेल धार
कोना बचतैक पिआसल ठोर आ' कंठ
घैलकेँ देखि नुका गेल धार
चललै गप्प बिजली आ' बान्हपर
सुनिते-सुनिते डेरा गेल धार
कछेर पर होइत रहलैक रासलीला
अनचोकेमे जुआ गेल धार।

सम्पर्क:
मो. 09968989527
बी 130, संजय गान्धी टान्सपोर्टनगर, दिल्ली
110042

मौन

पंकज सत्यम आनन्द

कोनो दलक समर्थक नहि हम
कोनो बादक अनुयायी सेहो नहि
कोनो बात बेजाय लागत
तँ हम विरोध करब
हम चुप नहि रहब, बाजब
हम भीष्म नहि
जे द्रौपदीकेँ चीरहरण पर मौन रहब
हम द्रोण नहि छी, कृपा नहि छी.
जे एहन अमानुषिक. कृत्य पर मौन रहि जाएब
कखनो वात्सल्यक कारणेँ
कखनो पक्षगत, कखनो दलगत कारणेँ
मौनक अर्थ होइ छै, सहमति
कखनो समर्थन सेहो होइ मौनक अर्थ
तँ हम मौन नहि रहब
हम बाजब, कंठ फारि-फारि बाजब।
आ' हमर आवाजकेँ देबाओल नहि जा सकैछ
अनठाओल नहि जा सकैछ, हठात
एकरा पर कान बात देबय पड़त।
केओ हमर मोन दु:खाओत तँ हम कानब
केओ प्रताड़ित करत तँ बाजब
अन्याय देखि टोकब, रोकब, बरजब
हम मरल मुर्दा नहि
हम सद्य: जिबैत मनुक्ख छी।
की ज्ञान, बुद्धि, विवेक आ' बल एही लेल?
प्राप्त ई अस्तित्व लेल
जे अन्याय चुपचाप सही? देखी? सुनी?
आ' बौक भेल बैसल रही?
नहि हैत, कथमपि नहि।
ठेकान अछि? एकटा मौन
जी हँ, एकटा मौन, बनि गेल महाभारतक कारण
कारण? ओएह 'मौन'
आ' एहि रूपमे अन्यायक समर्थन
महाभारत तँ भए गेल
मुदा ओकर कीटाणु सभ
सउँसे समाज देखि दुनियामे पसरि गेल
आ' सभठाम भए रहल अछि महाभारत आइयो
आ' उपस्थित छथि भीष्म, द्रोण, कृप
आइयो अपन-मौनक संग
आइयो अपन मौनक संग
आइयो अपन मौनक संग।

सम्पर्क :
–वाल्मीकि कॉलोनी, चित्रगुप्त नगर,
मधुबनी

मधुमाछी थिकहुँ हम सभ

जीवकान्त

कतएसँ अनैत छी एतबा बीज
नव-नव प्रजातिकेँ देबा लेल उद्‌भव
अबैत जाइए 'जीन'
हजारटा जीन सटबा लेल दोसरा-तेसरासँ
बनयबा लेल विशेष गुणधर्मी जीव
से अहाँ करैत रहै छी
ई सभ करबा लेल अहाँ रखने छी प्रयोगशाला
बनौने छी करखाना
उगिलैत अछि हजार रंगक पात
रचैत अछि हजार रंगक फूलमे
धरैत अछि लाख रंग टिकली सभमे
पीयर फूल पर उड़ि-उड़ि बैसए
नील-पीत टिकली
गाछमे लटका दैत छी छोट-छोट फड़
मासक मास ई फड़ सभ बनैए
बनाइत रहैत
एक दिन बदलि जाइए फड़ सभ
बदलै छै ओकर अम्लता मधुरतामे
ओकर खोँइचा पीयर भेल करै छै
पिरोँछ रंगसँ लगै छै
जेना दीपक टेमी प्रकाशित होइ
एतेक बीज अहीँटा रखैछी
देखौआ बीज भरल अछि कोठी सभमे
चोरौआ बीज
परती भेल माटिक सोन्हिमे सुतै अछि
अहाँ जगबैछी बीज सभकेँ
ककरो साओनमे प्राणित करैछी
ककरो भादवमे
चैतमे एक दिस उखड़बा दै छी बदाम
दोसर दिस खेरही बुनबा दै छी
जंगलमे हजार रंगक खढ़-पात
तकर दोबर-तेबर गाछ
कतेक हजार लत्ती-फत्ती जनमैए अखाढ़मे
लत्ती सभ भादवक फूहीमे
अगड़ाइए
गाछक उपरुका फुनगीपर
सात भत्ता लेपटाइए
गाछ औनाइए
फड़फड़ा कें रहि जाइए
बड प्रपंच जनै छी अहाँ
अहाँ माइ होएबामे होइछी कृतार्थ
अहाँक इंच-इंचमे किछु अबस्स होइए अंकुरित
गत्तर-गत्तर पल्लवित, पोर-पोर पुष्पित
हजार टा धरतीकेँ आच्छादित करबा लेल
उत्पन्न करै छी बोराक बोरा बीज
बाघिनमे लटपटाइए बाघ
साँप-साँपिन जोड़ खाइए
पड़बीकेँ ओगरैए पड़बा
कोन खन पड़बीकेँ चाही बीज
तकर व्यवस्था अहाँ करै छी
बना कें रखने छी बीजक भंडारपर भंडार
तहिना बीजकेँ अंकुरित करबा लेल
अहाँक ओरिआन अद्‌भुत
आ' सीमातीत
कतेक कोखि बना कें रखने छी
कतेक ठाम
अहाँक कौशलक थाह, के पाबि सकैए?
धरती! अहाँ मातामही छी
सभ माइक माइ
तथापि अपनहुँ माइ
निरन्तर गाछ भए जाइए बीज
तहिना अविराम बीज सभ रहैए आतुर
बड़-पीपर सन गाछ-
अकादारुन गाछ बनबा लेल
पानिमे जनमाओल जलचर जीव
जलीय पादप
धरतीपर अरण्य
वनमे गाछ पर गबैए कोइली
गाछक छाहतर बकरी बसैए
गाछक सीर सभमे
बीअरि ताकि बैसल रहैए
करिआ आ' गहुमाना नाग

बसातमे सहसहाइत जीव-जीवाणु
गिद्ध खा जाइए हाथी आ' ऊँट सभक मुर्दा
गिद्धोकेँ खएबा लेल
बिआ केँ राखल अहाँ कीटाणु
मनुक्ख जलचर-नभचर-थलचर जीवकेँ
चिबेबामे भिड़ल अछि
मनुक्खकेँ सठयबा लेल बना देल
मेलेरियाक परजीवी कीटाणु
अहाँ बासन गढ़ि-गढ़ि ढेर करै छी
लगबैछी आबा
काँच बासन पकबैछी
आबाकेँ फोड़बामे
कतेक छन अहाँकेँ लागत?
एक नजरि कन्हुआ कँ तकै छी
तँ फुटैए आबाक आबा
जलक तरंग जनमैए जलमे
जलमे समाइत अछि
तहिना अहाँक कोखिसँ उत्पन्न प्राण
धसधसा केँ भीतर सन्हिआइए
समएबाक लेल कोखिमे

की प्रपंच अछि?
हमरा सभ सेहो
पंचकसँ बान्हल
पंचभूतसँ लैछी आकार
फेर पंचभूतकेँ घुरा दैछी मूर
आ' मूरक संग सूदि, तकर सूदि
जाधरि आकाशमे आओत बादल
होएत साओनक धारासार वृष्टि
ताधरि अहाँ रहब नवयौवना आ' उर्वरा
जाधरि करखानाक़ बसात जंगल जा केँ
होइत रहत निर्मल
ताधरि अहाँ बाघ-बाघिनक लटापटी देखब
होइत रहब उन्मत्त
अहाँ माइए बना लेल. बनैछी सुन्दरि
रम्भा आ' मेनका
अहाँ माइए बना लेल
सटैत छी लिलार पर टिकली
लैत छी नव-नव अवतार
कतेक सुन्दर मधुमाछी थिकहुँ हमरा सभ
भगैत फूलसँ फूल धरि?
जीवनसँ मरण धरि।

बिसरैए पृथ्वी

समुद्रक कछेरपर अबैए हिलकोर
माथ पटकैए
पाछाँ घुरैए
आब ककरो मोन छै
जे समुद्र तोड़ैए मर्यादा
डुबा दैए धरती
अनैए जल-प्रलय
थारक मरुस्थलकेँ कहिओ मोन पड़ै छै
कहिओ ओ डूबल छल जलमे
एकार्णवा भेल छल
धधकैत जेठमे बकरीक चरवाह तकैए छाह
छाह नहि भेटला पर मानि सकैए
सूर्यक धाह थिकै आगि
आगिक बरखा भए सकैए
आगिक उन्मादी वृद्धिसँ
खकस्याह भए सकैए हरियरी
धधकि केँ छाउर भए सकैए
पहाड़क पंजरामे चरैत बकरीक बच्चा
पृथ्वी बिसरि जाइए पुरना बात
लागल रहैए अपना बीयामे

बीयाकेँ बढ़यबा लेल लागल रहैए
अंकुरी बनयबामे
दुपतिया बनैत आँकुरकेँ देखि
होइए विभोर
मोन नहि रखैए एकहु टा जल-प्रलय
कोनो विनांश ओकरा
ने मोन छै
आ' ने दुखी करै छै
ओ क्षमा कए सकैए जकरा-तकरा
बचा लैए पृथ्वीकेँ संकटसँ
तोहर करेजक बलिहारी, हे धरती
तोँ बिसरैत छह पराभव
क्षमा कए सकैत छह हिंसा
हजार टा रक्तपात
हजार गाछक छाउर भेल खुट्टा
हम नहि बिसरै छी
तोँ हमरा किएक ने से सामर्थ्य देने छह?
हे वसुन्धरा!
जे बिसरि सकी सन्तापक ताप

हमरा सभ बनाओल आखर
भाखा आ' गीत बनाओल
हजार-हजार बर्खक सभटा क्लेश पढ़ैत छी
तकर खेरहा गबैत छी
गयबा लेल सुरक्षित रखने छी उपाख्यान
पाथरकेँ छीलि-छीलि बनौने छी स्तम्भ
खोधने छी शिलालेख
ओहिपर विजयक पराक्रम अंकित अछि
तकर पाछाँ देखाइत अछि
अलिखित पराभव
अनुल्लेखित अपमान
आकशमे ध्वनित हाहाकार आ' विलाप
हमरालोकनि नहि बिसरि पबैत छी शूल
सामर्थ्य दे हमरा धरित्री
बिसरी हम सभ
क्षमा करी आ' सहज भए जाइ..........।

सम्पर्क :
मो. 09334976686/0942044551
ड्यौढ़, घोघरडीहा, मधुबनी 847402

❁

कालचक्र

✍ डा.वीरेन्द्र मल्लिक

बड़ सूतल?
करू आलस त्याग
कर्म गंगा
कर्म प्रयाग
बीतल बात
तकर की मोल?
वर्तमान अनुपम अनमोल
करू भविष्यक
नव निर्माण : इएह थिक जगतक
सत्य प्रमाण

फूसि
असत्य समयकेर चक्र
सोझ ओकर गति
नहिओ वक्र
मिथ्या भाग्य स्वर्ग आ' नर्क
पण्डित लोकनिक
मिथ्या तर्क
मिथ्या ओझा मिथ्या तन्त्र
सब मिलि रचने अछि षड्यन्त्र
मिथ्या कालचक्र-सिद्धान्त
कएने अछि ई
सभकेँ भ्रान्त

दस हजार वर्षसँ सभकेँ
पढ़ा रहल अछि
भाग्यक पाठ
अतीतोन्मुखी बनौलक सभकेँ
ओकर अछि ठाठ
धनी-गरीब मानव-निर्मित अछि
कर्मकाण्ड गर्हित अपमान
पूर्वजन्मकेर फल अछि मिथ्या
फूसि प्रमाणि,अछि अनुमान।

धीया-पुता भविष्य देशकेर
ओएह गढ़ता नवका इतिहास
ठोर-ठोरपर हँसी फुलायत
घर-घर पसरत हास-विलास
युवा तरुण छथि वर्तमान
जिनकापर आश्रित
देशक मन
वृद्ध भेलाह अतीत देशकेर
करिऔन हुनक मान-सम्मान
भेल विलम्ब
हर्ज नहि कोनो
ई जीवन थिक
कर्मप्रधान
उचित समय अछि आबि गेल
तेँ शुभारम्भ करू
नव अभियान.....।

सम्पर्क :
मो.09830460649
6 बी. फर्स्ट रोड, अदिति अपार्टमेंट
इस्टर्न पार्क, सन्तोषपुर
कोलकाता-700075

❁

देश-देशान्तर

डा.लक्ष्मण झाक मूर्तिक अनावरण

बैद्यनाथ विमलक समाद अछि जे 23 जनवरी, 2011 केँ मिथिलाक वरदपुत्र डा. लक्ष्मण झाक प्रतिमाक अनावरण हुनक पैतृक ग्राम, रसियारी, दरभंगामे पण्डित ताराकान्त झा, सभापति, बिहार विधान परिषद द्वारा भेल। डा. रामवदन यादव, पूर्व कुलपति,भू.ना.वि.वि.अध्यक्षता कएलनि। एहि अवसर पर अब्दुल बारी सिद्दिकी, विजयकुमार मिश्र, इजहार अहमद, रामसेवक हजारी, महेन्द्र नारायण झा, डा. विद्यानाथ झा, बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू',कमलेश झा आदि अपन उद्गार व्यक्त कएल।

डा.जयकान्त मिश्र

शेखर प्रकाशन, पटनाक तत्त्वावधानमे 06 फरबरी, 2011 केँ विद्यापति भवन, पटनामे पण्डित श्री गोविन्द झाक सम्पादनमे प्रकाशित 'जयकान्त जयन्तिका'(डा.जयकान्त मिश्रक कृतित्व एवं व्यक्तित्व)क लोकार्पण डा.दिगम्बर मिश्र 'दिवाकर', निदेशक,ए.एन.सिन्हा इंस्टीच्यूट, पटना कएलनि। उक्त पोथी पर रमानन्द झा 'रमण' एवं सुकान्त सोम अपन -अपन विचार राखल। अध्यक्षीय भाषणक क्रममे मोहन भारद्वाज एहि बातक लेल दुख प्रकट कएल जे ओ डा.जयकान्त मिश्रकेँ मात्र एक आन्दोलनकर्ता मानैत रहलाह। एहि अवसर पर ललित कुमार झाक संग्रह 'सोन्हगर-सोन्हगर गीत' तथा 'माँ' लोकार्पित भेल। कार्यक्रमक संचालन छत्रानन्द सिंहझा तथा धन्यवाद ज्ञापन शरदिन्दु चौधरी कएलनि। 11 फरबरी, 2011 केँ डा. मिश्रक पैतृक गाम, गजहारा, खुटौना, मधुबनीमे हुनकहि द्वारा संस्थापित संस्कृत विद्यालयमे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत वि.वि.क कुलपति द्वारा डा. जयकान्त मिश्रक प्रतिमाक अनावरण भेल।

प्रशान्त शान्ति भाषणमाला

भागलपुरसँ डा.केष्कर ठाकुरक समाद अछि जे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 16 फरबरी, 2011केँ देवघरमे 'प्रशान्त शान्ति भाषणमाला'क आयोजन भेल जाहिमे 'मैथिली उपन्यासमे सर्वहाराक चित्रण' विषय पर हुनक व्याख्यान भेलनि।

प्रबोध साहित्य सम्मान

वर्ष 2011क प्रबोध साहित्य सम्मान 18 फरबरी, 2011केँ उक्त प्रयोजन हेतु कालिदास रंगालयमे आयोजित कार्यक्रममे मैथिलीक यशस्वी रचनाकार सोमदेवकेँ प्रदान कएल गेलनि। कार्यक्रमक अध्यक्षता प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' कएल। पण्डित ताराकान्त झा मुख्य अतिथि तथा पण्डित गोविन्द झा विशिष्ट अतिथि छलाह। मंचसंचालन रामलोचन ठाकुर तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो.अभयनारायण सिंह कएलनि। दोसर सत्रमे नचिकेता लिखित 'नो एन्ट्रीः मा प्रविश'क सफल मंचन कुणालक निर्देशनमे भेल।

प्रभास कुमार चौधरी

मैथिली लेखक संघ, पटना द्वारा प्रभास कुमार चौधरीक पुण्य तिथिक अवसरपर 22 फरबरी, 2011केँ 'प्रभास स्मरण गोष्ठी'क आयोजन भेल जकर अध्यक्षता मोहन भारद्वाज कएलनि। एहि अवसरपर राजमोहन झा, उषाकिरण खान, पन्ना झा, नरेन्द्र झा, अशोक, अजित कुमार आजाद, विनोद कुमार झा, सुकान्त सोम, रमानन्द झा 'रमण' आदि प्रभासजीक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक चर्चा कएलनि। उषा किरण खान दुखक संग एहि रहस्यक उद्घाटन कएलनि जे बारह वर्ष पूर्व जखन ओ प्रभास कुमार चौधरी सन सहज व्यक्तित्वक महान साहित्यकारक साहित्यिक मूल्यांकनक कार्यक्रम बनौलनि आ' काज आगू बढल तँ हीनग्रन्थि बाला किछु लोक तकरा भङठा देलनि।

73म सगर राति दीप जरय

मैथिली कथाक पाठ एवं पठित कथापर चर्चाक 73म कार्यक्रम 'सगर राति दीप जरए' विजय महापात्रक संयोजकत्व एवं अरविन्द ठाकुरक अध्यक्षतामे 5 मार्च, 2011 केँ उग्रतारा स्थान, महिषीमे भेल। 'कथा राजकमल'क नामे आयोजित एहि कार्यक्रमक उदघाटन साकार यादव एवं स्वामी रमेशानन्द जी महाराज कएलनि। संचालक छलाह किसलय कृष्ण। एहि अवसर पर अजित कुमार आजादक कविता संग्रह 'युद्धक विरोधमे बुद्धक प्रतिहिंसा'क हिन्दी अनुवाद 'अघोषित युद्ध की भूमिका (अनुवादक-अंशुमान सत्यकेतु) तथा उक्त संग्रहक उर्दू अनुवाद 'कुदरत बेहुस्न नही हुई है'(अनुवादक- गुलरेज शहजार)क लोकार्पण रमाकान्त राय 'रमा' तथा अरविन्द ठाकुर क्रमशः कएलनि। एहि अवसरपर डा.महेन्द, जगदीश प्रसाद मंडल सहित बीससँ बेसी कथाकार उपस्थित छलाह। 74म सगर रातिक आयोजन डा. आरती कुमारीक संयोजकत्वमे भागलपुरमे होएत।

मन्त्रेश्वर झा

मन्त्रेश्वर झाक सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'चिनवार' तथा कविता संग्रह 'शिरोधार्य'पर चर्चाक हेतु मैथिली लेखक संघ द्वारा 01 मार्च, 2011कैं एक चर्चा गोष्ठी आयोजित भेल तकर अध्यक्षता उषाकिरण खान कएलनि। एहि अवसरपर शशिबोध मिश्र 'शशि', मधुकान्त झा, बैद्यनाथ मिश्र एवं कमल मोहन 'चुन्नू' आलेख पाठ कएल। चर्चामे भाग लेलनि डा. वासुकीनाथ झा, नरेन्द्र झा, बच्चा ठाकुर, बैद्यनाथ विमल, गणेश झा आदि। रमानन्द झा'रमण'क कहब छल जे मैथिलीक प्रकृति वा व्याकरणिक नियमसँ अनभिज्ञ मैथिलीक कतेको लेखक ई जनबाक प्रयास नहि करैत छथि जे कतय 'के' एवं कतय 'केँ' लिखल जाए। ई बिना जनने जे 'म' तथा 'न' दू पृथक ध्वनि थिक तथा अर्द्ध 'म' एवं अर्द्ध 'न'- दू पृथक ध्वनिक लेल अनुस्वारक प्रयोग (मन्त्रेश्वर/मंत्रेश्वर, सम्बन्ध-संबंध) करैत छथि एवं 'अहाँ' क स्थान पर 'आहाँ' लिखैत छथि।

डा.भीमनाथ झाक अभिनन्दन

मैथिली भाषा एवं साहित्यक क्षेत्रमे डा. भीमनाथ झाक महत्त्वपूर्ण अवदानकेँ देखैत जखन-तखन, दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'भाव-भूमि रसवन्त' (मूल्यांकन ग्रन्थ) 06 मार्च, 2011केँ पण्डित श्री गोविन्द झा द्वारा हुनका समर्पित कएल गेलनि। समारोहक अध्यक्ष पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एवं मुख्य भाषणकर्ता मोहन भारद्वाज छलाह।

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूर

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूरक तत्त्वावधानमे 22 सँ 28 फरबरी धरि_ भागलपुरमे एवं 7 सँ 14 मार्च, 2011 धरि मैसूरमे निर्धारित पोथीमे प्रयुक्त शब्दावलीक अनुवाद कएल गेल। मैसूरक कार्याशाला एनटीएमक कार्यक्रम निदेशक प्रो.अदिति मुखर्जीक पर्यवेक्षणमे सम्पन्न भेल। अजीत मिश्र एवं शम्भु कुमार सिंह दूनूठाम पूर्ण मनोयोगपूर्वक निर्धारित काज समाप्त करौलनि।

विद्यापतिक प्रतिमाक अनावरण

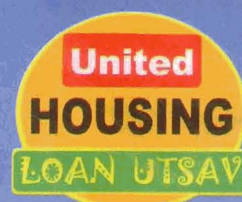
दरभंगासँ डा. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'क समाद अछि जे 26 मार्च, 2011 केँ सौराठक सभागाछीमे कविकोकिल विद्यापतिक प्रतिमाक अनावरण भेल। ई प्रतिमा कामदेव झा, कोलकाताक सौजन्यसँ प्राप्त भेल छैक।

Home Delivery
Home Loans to suit every pocket



Period: 15th April to 30th June, 2011

Salient features
- Hassle-free Sanction
- Attractive Interest Rate
- Facility of Insurance Coverage on Life & Property



* Special Offers
- Interest Concession of 0.25% in all Slabs
- Waiver of Processing Charges
- Waiver of Mortgage / Documentation Charges

युनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया
(भारत सरकार का उपक्रम)
आपका बैंक



United Bank of India
(A Govt. of India Undertaking)
The Bank that begins with U

Website : www.unitedbankofindia.com